₹25

हिन्दी [illegible] की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

मई 2016



- कुछ विचारणीय बातें
  –मौलाना जलालुद्दीन उमरी
- ईश्वर का अवतार नहीं
  –मनमोहन कुमार आर्य
- भारत की बीमारी
  –दिलीप मंडल
- सावधान, भ्रामक विज्ञापनों से
  –सी॰ के॰ रहमानी
- समय का सदुपयोग
  –के॰ कविता

بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।"

(कुरआन)

A Well Wishers

Ripan Street, Tramways Depots,
Near Nona Pukur, Kolkata

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 25 अंक 11 मई 2016

कह दो : मैं तो तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूं । मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य प्रभु बस अकेला पूज्य प्रभु है । अतः तुम सीधे उसी का रुख़ करो और उसी से क्षमा-याचना करो । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

ख़ता है किसको ? अगर बेवक़ार[1] गुज़रे हैं
वो हो के अपनी अना[2] का शिकार गुज़रे हैं

हंसी न आयी हंसाने से ग़म के मारों को
तबीअतों पे लतीफ़े भी बार[3] गुज़रे हैं

सहर[4] ने ज़ख़्म दिये, शाम ने नमक छिड़का
इसी तरह मेरे लैलो-नहार[5] गुज़रे हैं

ब-ज़अम-ख़ुद[6] जो मुहज़्ज़ब[7] भी, हक़शनास[8] भी थे
सदाक़तों[9] पे उड़ाते गुबार गुज़रे हैं

ख़ुशी में हो गये तब्दील सारे रंजो-अलम[10]
तेरे दियार[11] से जब सोगवार गुज़रे हैं

जो शह्र-शह्र उड़ाते थे होश का परचम
तेरी गली से वो दीवानावार[12] गुज़रे हैं

घरों से ता-दरे-ज़िन्दां[13], वहां से मक़्तल[14] तक
हर इम्तिहां से तेरे जांनिसार[15] गुज़रें हैं

यह क्या मक़ाम है ऐ अह्ले-आगही[16] जिससे
जूनूं की खा के क़सम होशियार गुज़रे हैं

'हफ़ीज़' तू जिन्हें जाने-वफ़ा बताता था
तेरे क़रीब से बेगानावार[17] गुज़रे हैं ।

हफ़ीज़ मेरठी

---

1. अप्रतिष्ठित 2. अहंकार, अहं 3. भारी 4. सुबह, 5. रात और दिन 6. अपने दंभ में, विचार में 7. सभ्य, शिष्ट 8. सत्यप्रिय, सत्य को पहचानने वाले 9. सच्चाइयों 10. दुख-दर्द 11. क्षेत्र, इलाक़े 12. शोकग्रस्त, ग़मगीन 13. क़ैदख़ाने के दरवाज़े तक 14. वध-स्थान 15. जान न्योछावर करने वाले 16. ज्ञानवान लोग 17. अनजान की तरह, अपरिचितों की तरह ।



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
'आधार' पर कुछ सवाल (संपादकीय)		7
यह मुक़दमा कुछ सवाल करता है (आपके पत्र)		9
दोहे	–रोहित यादव	11
कुछ विचारणीय बातें (उद्बोधन)	–मौलाना जलालुद्दीन उमरी	13
हज़रत रुबैया बिन्त नज़र (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	17
अल्लाह की राह में ख़र्च (प्रेरणा)	–डॉ॰ नौशाद अली	19
ईश्वर का अवतार वैदिक सिद्धांतों के विरुद्ध (विचार)	–मनमोहन कुमार आर्य	23
चुनावी राजनीति (दृष्टिकोण)	–अरुणा राय, भंवर मेघवंशी	26
भारत की बीमारी (दृष्टिकोण)	–दिलीप मंडल	27
कोई लौटा दे मेरे बुरे दिन ! (हास्य व्यंग्य)	–राम सहाय वर्मा	31
शर्म (कहानी)	–इक़बाल अंसारी	33
ग़ज़ल	–कुंअर बेचैन	34
भारत का दूसरा तेंदुलकर (खेल-खिलाड़ी)	–ए॰ एन॰ शिब्ली	37
नौकरी की तैयारी करें मगर...(कैरियर)	–निमिष कपूर	41
इस्लाम की दावत में ज्ञान का महत्व (पुस्तक समीक्षा)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	42
समय का सदुपयोग (उद्गार)	–के॰ कविता	44
दोहे	–बृज भूषण चतुर्वेदी 'ब्रजेश'	45
सावधान भ्रामक विज्ञापनों से (अर्थ-उपभोक्ता)	–सी॰ के॰ रहमानी	46
घातक है महिलाओं में बढ़ती धम्रपान की लत (महिला जगत)	–डॉ॰ विभा सिंह	48
जंतुओं का संसार (बालवीथी)		49

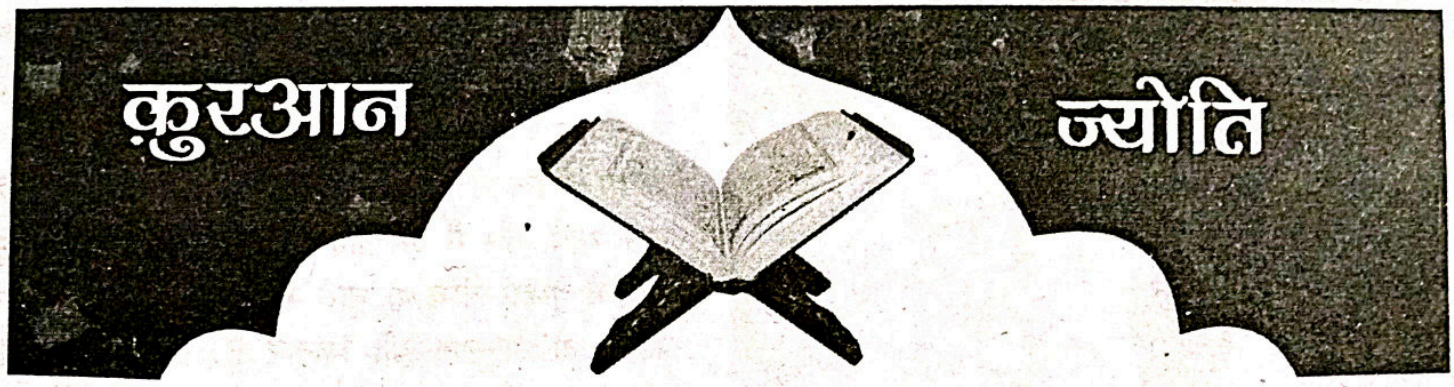

(108) तुम कदापि उस इमारत में खड़े न होना। जो मस्जिद पहले दिन से तक़वा (अल्लाह का डर) पर क़ायम की गयी थी वही इसके लिए अधिक उचित है कि तुम उसमें (इबादत के लिए) खड़े हो, उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहना पसन्द करते हैं और अल्लाह को पाकी अपनाने वाले ही पसन्द हैं।[102]

–क़ुरआन, 9 : 108

102. नबी (सल्ल०) के मदीना तशरीफ़ ले जाने से पहले ख़ज़रज क़बीले में एक व्यक्ति अबू आमिर नाम का था जो अज्ञानता-काल में ईसाई संन्यासी बन गया था। उसकी गिनती अह्ले किताब उलेमा में होती थी। जब नबी (सल्ल०) मदीना पहुंचे तो उसने आपकी पैग़म्बरी और दावत (बुलावे) को अपनी बुज़ुर्गी और बड़प्पन के लिए मौत का सन्देश समझकर कड़ा विरोध शुरू कर दिया। उहुद की लड़ाई से लेकर हुनैन की लड़ाई तक जितनी लड़ाइयां अरब के मुशरिकों और मुसलमानों के बीच हुईं उन सबमें यह ईसाई संत इस्लाम के विरुद्ध शिर्क का सक्रिय समर्थक रहा। अंत में उसने अरब को छोड़कर रूम का रुख़ अपनाया, ताकि क़ैसर को उस 'ख़तरे' से सूचित करे जो अरब से सिर उठा रहा था। यह वही अवसर था जब मदीना में ये ख़बरें पहुंचीं कि क़ैसर अरब पर चढ़ाई की तैयारियां कर रहा है और उसी की रोक-थाम के लिए नबी (सल्ल०) को तबूक की मुहिम पर जाना पड़ा।

अबू आमिर संन्यासी की इन तमाम गतिविधियों में मदीना के मुनाफ़िक़ों का एक गिरोह उसके साथ षड्यंत्र में सम्मिलित था। जब वह रूम की ओर चलने लगा तो उसके और इन मुनाफ़िकों के दर्मियान यह समझौता हुआ कि मदीना में ये लोग अपनी एक अलग मस्जिद बना लेंगे, ताकि आम मुसलमानों से बचकर मुनाफ़िक़ मुसलमानों की अलग जत्थाबन्दी इस तरह की जा सके, कि उस पर धर्म का परदा पड़ा रहे और आसानी से उस पर कोई सन्देह न किया जा सके और वहां व केवल यह कि मुनाफ़िक़ संगठित हो सकें और आगे की कार्रवाइयों के लिए मशविरे कर सकें, बल्कि अबू आमिर के पास से जो एजेंट ख़बरें और हिदायतें लेकर आएं, वे भी असंदिग्ध फ़क़ीरों और यात्रियों के रूप में उस मस्जिद में ठहर सकें। यह था वह अपवित्र षड्यंत्र जिसके अंतर्गत वह मस्जिद तैयार की गयी थी, जिसका इन आयतों में उल्लेख किया गया है।

मदीना में उस समय दो मस्जिदें थीं। एक मस्जिदे कुबा जो शहर के किनारे थी, दूसरे मस्जिदे नबवी जो शहर के अन्दर थी। इन दो मस्जिदों की मौजूदगी में एक तीसरी मस्जिद बनाने की कोई ज़रूरत न थी, बल्कि इससे मुसलमानों की जमाअत में ख़ामख़ाही फूट पैदा होने की आशंका थी। इसलिए ये लोग मजबूर हुए कि अपनी अलग मस्जिद बनाने से पहले उसकी आवश्यकता बताएं। चुनांचे उन्होंने नबी (सल्ल०) के सामने इस नये निर्माण के लिए यह ज़रूरत रखी कि वर्षा में और जाड़े की रातों में आम लोगों को और मुख्य रूप से बड़ों और मजबूर लोगों को, जो इन दोनों मस्जिदों से दूर रहते हैं, पांचों वक़्त हाज़िरी देनी मुश्किल होती है, इसलिए हम केवल नमाज़ियों की सुविधा के लिए इस एक नयी मस्जिद का निर्माण करना चाहते हैं। इस तरह उन्होंने इसके निर्माण की अनुमति ले ली और इसे अपने षड्यंत्रों का अड्डा बना लिया।

वे चाहते थे कि नबी (सल्ल०) को धोखा देकर आपसे इसका उद्घाटन कराएं, परन्तु आपने यह कहकर टाल दिया कि "इस समय मैं युद्ध की तैयारी में व्यस्त हूं और एक बड़ी मुहिम सामने है। इस मुहिम से वापस आकर देखूंगा।" इसके बाद आप तबूक की ओर रवाना हो गये और आपके पीछे यह लोग इस मस्जिद में अपनी जत्थाबन्दी और षड्यंत्र करते रहे। वापसी पर जब नबी (सल्ल०) मदीना के क़रीब 'ज़ु अदान' नामी जगह पर पहुंचे तो ये आयतें उतरीं और आपने उसी समय कुछ आदमियों को मदीना की ओर भेज दिया, ताकि आपके शहर में दाख़िल होने से पहले वे इस नुक़सान पहुंचाने वाली मस्जिद को ही ध्वस्त कर दें।



अल्लाह की किताब को मज़बूती से पकड़ो

● हज़रत यज़ीद बिन हय्यान कहते हैं कि मैं हुसैन बिन सबरह और अम्र बिन मुस्लिम हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि॰) के पास गये । जब हम उनके पास बैठे तो हुसैन ने उनसे कहा : ऐ ज़ैद, आपको बड़ी दौलत और भलाई प्राप्त हुई है । आपने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को देखा, आपकी बातें सुनीं, आपके साथ युद्ध में शामिल हुए, और आपके पीछे नमाज़ें पढ़ीं । ऐ ज़ैद, आपको बड़ी दौलत और भलाई प्राप्त हुई है । ऐ ज़ैद, जो कुछ आपने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से सुना है उसे हमसे भी बयान करो । उन्होंने कहा : ऐ मेरे भतीजे, अल्लाह की क़सम, मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूं और मेरा समय पुराना हो गया, मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से जो हदीसें याद की थीं उनमें से कुछ भूल गयीं, इसलिए जो कुछ मैं तुमसे बयान करूं उसे स्वीकार करो और जो न बयान करूं उसके लिए मुझे विवश न करो । फिर उन्होंने कहा : अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मक्का और मदीना के बीच ख़ुम नामक जल-स्रोत पर हमारे बीच खड़े होकर एक दिन भाषण दिया । आपने अल्लाह की प्रशंसा और तारीफ़ की, और नसीहत की और प्रबोधित किया । फिर आपने कहा : "तदनंत : ऐ लोगो, जान लो निस्सन्देह मैं एक मनुष्य ही हूं । क़रीब है कि मेरे रब का दूत (मौत का फ़रिश्ता) मेरे पास आये और मैं अल्लाह के हुक्म को स्वीकार कर लूं । मैं तुम्हारे बीच दो भारी चीज़ें छोड़ रहा हूं : उनमें पहली तो अल्लाह की किताब है, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश है । अत: अल्लाह की किताब को पकड़ो और उसे मज़बूती से थामे रहो ।" फिर आपने अल्लाह की किताब के सिलसिले में उभारा और प्रेरित किया और कहा : "और (दूसरी चीज़) मेरे घर के लोग हैं मैं अपने घर वालों के विषय में तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूं, मैं अपने घर वालों के विषय में तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूं ।" हज़रत हुसैन ने उनसे पूछा कि : ऐ जैद, आपके घर वाले कौन हैं क्या आपकी पत्नियां भी आपके परिवार की सदस्या हैं ? उन्होंने कहा कि आपकी पत्नियां आपके परिवार के सदस्यों में से हैं, और वे भी आपके परिवार के अन्तर्गत आते हैं जिनके लिए आपके बाद सदक़ा क़ुबूल करना हराम है । क़हा कि वे कौन हैं ? उन्होंने कहा : वे हैं हज़रत अली, अक़ील, हज़रत जाफ़र और हज़रत अब्बास की संतान । कहा : क्या उनमें से हर एक पर सदक़ा हराम है ? उन्होंने कहा कि हां । –मुस्लिम

और एक रिवायत में है : "जान लो मैं तुम्हारे बीच दो भारी चीज़ें छोड़ रहा हूं : उनमें से एक अल्लाह की किताब है और वह अल्लाह की रस्सी है, जिसने उसका अनुसरण किया वह मार्ग पर होगा और जिसने उसे छोड़ दिया वह पथभ्रष्ट होगा ।"

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

'आधार' पर कुछ सवाल

दुनिया के कई देशों में नाकाम हो चुका आधार कार्ड हमारे देश के नागरिकों के लिए अब बाध्यकारी बन चुका है । 28 जनवरी 2009 से ग़ैर-क़ानूनी ढंग से-बिना संसद द्वारा पारित क़ानून के देश में व्यावहारिक दृष्टि से जबरन नागरिकों पर कांग्रेस नीत यू॰पी॰ए॰ सरकार ने आधार कार्ड थोपा था, जिसके कारण भी उसकी सरकार गयी । भाजपा के ही प्रस्ताव पर कांग्रेस ने यह क़दम उठाया था । कहते हैं कि भाजपा के किसी सज्जन ने एक अंग्रेज़ी उपन्यास में ऐसे कार्ड की कल्पना की कल्पना के बारे में पढ़ा था, जो अनोखा और चमत्कारिक था । फिर इसे ही भाजपा ने प्रस्तावित कर दिया, जबकि कांग्रेस एक दूसरा पहचान-पत्र लाना चाहती थी । इस सिलसिले में उसने काम भी शुरू कर दिया था, किन्तु भाजपा के कहने पर उसने अपनी साख़ दांव पर लगा दी और चुनावी समर में हार भी गयी । इसमें राजनीतिक रायता भी यह है कि एक समय ऐसा आया, जब भाजपा आधार का विरोध करने लगी, परन्तु सत्ता पाते आधार की सबसे बड़ी पैरोकार हो गयी, यहां तक कि जब लोकसभा में विपक्षी दलों ने कहा कि जब यह मामला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है, तो क़ानून बनाने कि जल्दी क्या है ? तो वित्त मंत्री ने साफ़ कह दिया कि उन्हें ऐसा करने से कोई नहीं रोक सकता । वास्तव में आधार का बायोमेट्रिक होना आपत्ति का बड़ा विषय रहा । फिर जिन एजेंसियों द्वारा इसे वर्षों से संपन्न कराया जा रहा है, वे संदेह के घेरे में हैं । चूंकि आधार कार्ड का निर्माण नागरिकों के मौलिक अधिकारों से जुड़ा हुआ सवाल है और इस बाबत गोपनीयता के अधिकार के रक्षार्थ सुप्रीम कोर्ट के आदेश भी मौजूद हैं, इसलिए सुप्रीम कोर्ट में आधार पर सरकार का पक्ष बड़ा लचर और कमज़ोर है । इसलिए मोदी सरकार ने अपनी हेकड़ी चलाने के लिए आधार को क़ानूनी जामा विधि विधेयक के रूप में पहना डाला । केन्द्र को बख़ूबी पता और बार-बार का अमली एहसास भी है कि राज्यसभा में कांग्रेस की मार से बच पाना मुश्किल है । जिस करतब से आधार को अधिसूचित किया गया, वह अनेक बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों, शिक्षाविदों और पत्रकारों को हैरान-परेशान कर गया । विगत 30 मार्च को दक्षिण एशियाई विदेशी संवाददाता क्लब, नयी दिल्ली ने एक प्रेस कान्फ्रेंस कर बायोमेट्रिक विशिष्ट पहचान संख्या (आधार) को संविधान और क़ानून की अनदेखी क़रार दिया । इसमें इस बात पर चिंता व्यक्त की गयी कि राजनीतिक विरोध के बावजूद इस मामले में ख़ामोशी आश्चर्यजनक है । आधार पर केवल पश्चिम बंगाल विधानसभा में आवाज़ उठी है और इसके ख़िलाफ़ सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया है । प्रस्ताव में कहा गया है कि केन्द्र को प्रत्येक्ष लाभ अंतरण योजना से आधार क़ार्ड को जोड़ने का अपना फ़ैसला तत्काल वापस लेना चाहिए । इस प्रेस कान्फ्रेंस में वक्ताओं ने कहा लोकसभा में 3 मार्च को पेश होने के बाद से संविधान के अनुच्छेद 110 के तहत लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने आधार विधेयक 2016 को धन विधेयक होने का प्रमाण पत्र दे दिया और इसे पारित कर राज्य सभा भेजा गया । यह संविधान और क़ानून सम्मत नहीं है, लेकिन यही एकमात्र ऐसा क़ानून है, जो संसद, सुप्रीम कोर्ट के अनुमोदन के बिना जबरन लागू किया गया । सुप्रीम कोर्ट द्वारा इसे अनिवार्य न ठहराए जाने और कुछ चीज़ों के लिए भी ऐच्छिक ठहराए जाने पर भी इसकी लगातार अवहेलना करके बैंकों, रसोई गैस की दुकानों और अन्य सरकारी कार्यालयों में वर्षों तक इसकी मांग की जाती रही और अमलन आधार कार्ड को अनिवार्य कर दिया

गया । फलस्वरूप लोग मजबूर होकर आधार कार्ड बनवाने लगे और इसकी संख्या करोड़ों में पहुंची । फिर भी सुप्रीम कोर्ट में कह दिया गया कि लोगों ने स्वेच्छा से आधार कार्ड बनवाए हैं । राज्यसभा में भी विधेयक के धन विधेयक चरित्र पर सवाल उठा । राज्य सभा ने विधेयक में पांच संशोधन किये थे, जिनमें से एक इसे अनिवार्य न बनाना था । लोकसभा ने राज्यसभा के संशोधन को मानने से मना कर दिया और उसे मूल रूप में पारित कर दिया । लोकसभा के पूर्व महासचिव पी॰डी॰टी॰ आचारी के अनुसार, आधार विधेयक 2016 को धन विधेयक नहीं माना जा सकता है । वे कहते हैं कि ''ऐसे विधेयक का संबंध टैक्स लागू करने, टैक्स ख़त्म करने, टैक्स बदलने आदि से नहीं है, न ही इसका संबंध सरकार द्वारा ऋण के संचालन या सरकार द्वारा कोई गारंटी लेने या सरकार की वित्तीय ज़िम्मेदारी में संशोधन से है । इस विधेयक का संबंध कंसोलीडेटेड फंड ऑफ़ इंडिया आदि से है । जो धन इस फंड में दिया जाता है या इससे निकला जाता है, वह आकस्मिक है । यह विनियोग विधेयक से संबंधित नहीं हो सकता ।'' इन्हीं सब आधारों पर कांग्रेस के जयराम रमेश ने 'आधार' को धन विधेयक बनाने के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में परिवाद दाख़िल किया है । जहां तक निजता की रक्षा का सवाल है, वित्त मंत्री अरुण जेटली यह कैसे कह सकते हैं कि ''विधेयक यह मानकर तैयार किया गया है कि निजता का अधिकार मौलिक अधिकार है'', जबकि हक़ीक़त यह है कि इस काम में विदेशी कंपनियां लगी हुई हैं । आज भी वे लोग इससे जुड़े हुए हैं, जो यू॰पी॰ए॰ के काल में जुड़े थे । सरकार कि ओर से बार-बार यह कहा जा रहा है कि इससे सरकारी योजनाएं सफल होने लगेंगी । योजनाओं का सीधा लाभ ग़रीबों तक पहुंचने लगेगा । लोगों तक रसोई गैस, खाद, बीज आदि सामग्री रियायती दर पर पहुंचने लगेगी । पी॰डी॰एस॰ दुरुस्त होगा । वास्तविकता यह है कि इसे हक़ीक़त में लाना नामुमकिन है । इससे जो भ्रष्टाचार पनपा है, वह भी उल्लेखनीय है । मनरेगा जैसी योजनाएं आधार के बावजूद भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गयी हैं ।

आधार विरोधियों का मानना है कि इसका सीधा फ़ायदा पूंजीपतियों को होगा । इसके लिए सरकार का छिपा हुआ इरादा है–पूरे देश को एक बड़ी दूकान में तब्दील करना । नन्दन नीलेकण ने जो भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण [UIDAI] अध्यक्ष के प्रभारी रहने से पहले इन्फोसिस के प्रमुख थे, एक अवसर पर कहा था कि ''भारत के एक तिहाई उपभोक्ता बैंकिंग और सामाजिक सेवा की पहुंच से बाहर हैं । ये लोग ग़रीब हैं, इसलिए ख़ुद बाज़ार तक नहीं पहुंच सकते । पहचान नंबर मिलते ही मोबाइल फ़ोन के ज़रिए इन तक पहुंचा जा सकता है ।'' नेल्सन कंपनी के 'कंज्यूमर 360' कार्यक्रम में उनकी बात की व्याख्या भी की गयी । नेल्सन के तत्कालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कहा कि ''आधार सिस्टम से कंपनियों को फ़ायदा पहुंचेगा ।'' क्या इस पर करोड़ों रुपये ख़र्च करने का मतलब कंपनियों को फ़ायदा पहुंचाना है ? उल्लेखनीय है, इस प्रकार का बायोमेट्रिक कार्ड संसार के किसी बड़े देश में उपलब्ध नहीं है । अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन आदि किसी भी देश में बायोमेट्रिक पहचान-पत्र नहीं है । ब्रिटेन में इसे लागू किये जाने को लेकर कुछ वर्ष ज़रूर काम हुआ, लेकिन यह आख़िरकार नाकाम साबित हुआ और इस परियोजना को रोक देना पड़ा । सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व के अपने फ़ैसलों में निजता के अधिकार को संविधान के अनुच्छेद-21 के तहत मिले जीवन और व्यक्तिगत आज़ादी के अधिकार के तहत एक मौलिक अधिकार माना है, लेकिन यह अधिकार ऐसा नहीं है, जिसमें कोई कटौती नहीं की जा सकती है । अमेरिकी नागरिकों को यह अधिकार प्राप्त है, हालांकि यह अधिकार उन्हें बहुत विलंब से मिला । अमेरिका में अदालतों ने इस अधिकार की रक्षा 19वीं सदी के अंत तक नहीं की क्योंकि कॉमन लॉ ने इसे मान्यता नहीं दी थी । इसे मान्यता तब मिली जब चार्ल्स वारेन तथा लूई ब्रैंडाइस

(शेष पृष्ठ 30 पर)

हाशिमपुरा कांड : प्रश्न-परिप्रश्न

अभी हाल ही में यह पता चला कि हाशिमपुरा जनसंहार में इन्साफ़ की मांग कर रहे कवियों, पत्रकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं समेत 'रिहाई मंच' के नेताओं पर दंगा भड़काने जैसी गंभीर धाराओं में मुक़द्दमा दर्ज किया गया है। मुक़दमे में आरोपित लोग हाशिमपुरा जनसंहार में विवेचना अधिकारी द्वारा लचर और पक्षपात पूर्ण विवेचना करने और सरकार द्वारा बेगुनाह नागरिकों के हत्यारे पुलिस वालों को आपराधिक तरीक़े से बचाने के ख़िलाफ़ अपना लोकतांत्रिक विरोध व्यक्त करते हुए पूरे मामले की उच्चतम न्यायालय की देख-रेख में पुन: न्यायिक जांच की मांग कर रहे थे।

ग़ौरतलब है कि छब्बीस अप्रैल को लखनऊ में रिहाई मंच द्वारा हाशिमपुरा के इन्साफ़ के सवाल पर आयोजित सम्मेलन में प्रख्यात मानवाधिकारवादी नेता गौतम नवलखा, वरिष्ठ पत्रकार अनिल चमड़िया और सलीम अख़्तर सिद्दीक़ी समेत कई अन्य नामी शख़्सियतों ने शिरकत की थी। अगले ही दिन सत्ताईस अप्रैल को इस सम्मेलन के आयोजकों के ख़िलाफ़ लखनऊ के अमीनाबाद थाने में एक मुक़दमा दर्ज किया गया। जिन लोगों के ख़िलाफ़ एफ०आई०आर० दर्ज की गयी उनमें कवि और पत्रकार अजय सिंह, पत्रकार कौशल किशोर, सत्यम वर्मा, वरिष्ठ पत्रकार रामकृष्ण, लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध प्रोफ़ेसर रमेश दीक्षित और धर्मेन्द्र कुमार समेत रिहाई मंच के प्रमुख नेता मुहम्मद शुऐब, राजीव यादव, शाहनवाज़ आलम समेत कुल सोलह व्यक्ति शामिल हैं। इन लोगों पर पुलिस की अनुमति के बग़ैर कार्यक्रम करने, शांति व्यवस्था भंग करने और दंगा भड़काने के प्रयास जैसे आरोप लगाए गये हैं। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि मुल्क की संवैधानिक व्यवस्था में इस बात का बाक़ायदा ज़िक्र है कि वह अपने नागरिकों को एक निश्चित दायरे में अपनी बात कहने और सरकार का विरोध करने की आज़ादी देती है। जिन आरोपों में रिहाई मंच और उपरोक्त अन्य पर यह मुक़दमा दर्ज किया गया है उसका तो कहीं से कोई तुक ही नहीं बनता था क्योंकि विरोध प्रदर्शन के दौरान किसी क़िस्म की कोई हिंसा भी नहीं हुई थी। फिर आख़िर क्या वजह है कि राज्य सरकार की ओर से इस तरह का मुक़दमा दर्ज किया गया ?

दरअस्ल उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी लंबे समय तक सत्ता में रही है और अपने को सेक्युलर राजनीति से भी जोड़ती रही है। लिहाज़ा सबसे पहला सवाल उसी से हुआ कि आख़िर उसने हाशिमपुरा के पीड़ित मुसलमानों के इन्साफ़ के सवाल पर क्या किया ? चूंकि हाशिमपुरा का सवाल आगामी चुनाव में मुस्लिम वोटों को सपा से दूर बिदका सकता था। ऐसे दौर में जब समाजवादी पार्टी पर 'हिन्दुत्व' की राजनीति को आगे बढ़ाने के ठोस और खुले आरोप लग रहे थे, तब समाजवादी पार्टी के पास हाशिमपुरा मामले में अपने बचाव का कोई ठोस जवाब नहीं था। जवाब हो भी नहीं सकता था क्योंकि उसके और अन्य दलों में विचारधारा को लेकर कोई अंतर नहीं है। इसलिए इन्साफ़ के इस सवाल को राजनीति का मुद्दा बनने से रोकने, दबाने और प्रदेश की लोकतांत्रिक ताक़तों को धमकाने के लिए समाजवादी सरकार ने ऐसा मुक़दमा दर्ज कर लिया।

लेकिन, बात यहीं ख़त्म नहीं होती। इस मुक़दमें के कई अन्य पहलू भी हैं जिन पर बहस के लिए हमें मौजूदा दौर के व्यवस्थागत संकटों पर भी ग़ौर करना पड़ेगा। दरअस्ल जिस समाज में आज हम रह रहे हैं उसके पालिटिकल 'ट्रेंड' में इन्साफ़ और उसकी मांग की कोई जगह नहीं बची है। कोई भी दल 'व्यवस्थागत' अन्याय पर कोई बात नहीं करना चाहता क्योंकि भारतीय राज्य सत्ता अपने नागरिकों को इन्साफ़ देने में बुरी तरह असफल रही है। हाशिमपुरा भारतीय राज्य सत्ता का अपने निहत्थे नागरिकों का सबसे बड़ा सामूहिक क़त्लेआम था जिसके इन्साफ़ के सवाल को राजनीति और सत्ता द्वारा लगातार दफ़न करने की कोशशें आज भी जारी हैं।

यहां सवाल यह भी है कि भारतीय राज्य सत्ता और राजनीति अपने फासिस्ट चरित्र को नागरिकों के सामने उकेर क्यों रही है ? दरअस्ल इसके पीछे बाज़ार के संकट से उपजे हालात को समझना ज़रूरी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि

आधुनिक बाज़ार की निरंकुशता ने आम आदमी के जीवन संघर्ष को और नीचे धकेला है । यही वजह है कि अपने अस्तित्व के लिए जूझ रही आम जनता और पूंजी के पैरोकार राज्य के बीच सीधे टकराव बढ़े हैं । चूंकि समूची राजनीति और राज्य सत्ता की सफ़ादारी पूंजी और पूंजीपतियों के प्रति है लिहाज़ा इस घोर आर्थिक संकट के दौर में बाज़ार की यह मांग है कि उसकी निरंकुशता के ख़िलाफ़ कोई आवाज़ न उठे । किसी क़िस्म का कोई जन आन्दोलन न खड़ा होने पाये । बाज़ार को सुधारवादी और आनुषंगिक संघर्षों की आवाज़ें भी बहुत डरा रही है क्योंकि पूंजीवाद अपने अस्तित्व संकट से जूझ रहा है और संकट के इस दौर में सुधारवादी आन्दोलन की मरी हुई चिंगारी भी दावानल बन सकती हैं ।

वास्तव में ज़्यों-ज्यों बाज़ार का संकट बढ़ रहा है राज्य मशीनरी और राजनीति दोनों ही अपने को तेज़ी से एक फॉसिस्ट 'ट्रेंड' में बदलने को बेताब दिख रहे हैं । वे अपने ख़िलाफ़ किसी आवाज़ को सुनने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं । आने वाला दौर अभी और बुरा होगा । राज्य अपने नागरिकों को शांतिपूर्वक अपनी बात कहने और लोकतांत्रिक विरोध के उसके मूल अधिकार को भी स्वीकार करने को अब तैयार नहीं है । राजनीति में आया यह 'ट्रेंड' नया नहीं है । इस ट्रेंड की राजनीति तमाम प्रचलित धारणाओं के उलट विरोध और प्रतिरोध की संस्कृति, जो कि लोकतंत्र का आधारभूत तत्व है, को ख़त्म करने की कोशिश में है । यह फासिस्ट 'ट्रेंड' है जो इस मानसिकता को पुष्ट करता है कि राज्य को यह हक़ है कि वह अपने नागरिकों के ऊपर किये गये हर अत्याचार को अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक समझे । आजकल राजनीति में इसे औचित्यपूर्ण सिद्ध करने की लहर चल पड़ी है । यह हमें अरबी मुल्कों के अधि नायकवाद के क़रीब खड़ा करती है जहां आप सवाल सवाल तक नहीं उठा सकते । क्योंकि राज्य और राजनीति की वफ़ादारी वैश्विक पूंजीवाद की सुरक्षा के इर्द-गिर्द घूमती है ।

कुल मिलाकर समाजवादी पार्टी सरकार ने यह साबित किया है कि उसकी राजनैतिक प्रतिबद्धता अपने नागरिकों के सवालों को सुनने और उसे हल करके 'इन्साफ़' देने में क़तई नहीं है । वह भी एक डिक्टेटर स्टेट की समर्थक है, ठीक संघ की तरह जो ग़ैर-हिन्दुओं को नागरिक मानने को ही तैयार नहीं है । दर्ज हुए इस मुक़दमे ने यह भी साबित किया है कि इन्साफ़ के सवालों को राजनैतिक बहस के दायरे में ही रखना चाहिए ताकि वे चुनावी मुद्दा बन सकें । रिहाई मंच ने इन्साफ़ पसन्द कवियों, पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को साथ लेकर यही करने की कोशिश की थी ।

हरे राम मिश्र

लखनऊ

न्याय के लिए

न्याय प्रक्रिया में ऐस भी देखने सुनने को मिलता है कि चश्मदीद गवाहों को धमकाया गया है, और जिस कारण न्याय बाधित हो जाता है, क्योंकि विधि गवाहों पर ही निर्भर करती है । कुछ धनाढ्य लोग तो प्रतिवादी के गवाहों को ही ख़रीद लेते हैं और कहीं उनकी हत्या कर दी जाती है । इस प्रकार न्यायालय के समक्ष सच्चाई के नहीं आने पर मामला एक पक्षीय हो जाता है । जबकि ज़मानत के समय माननीय न्यायालय द्वारा आरोपी से क़रार और वचन लिया जाता है कि वह उसके विरुद्ध के गवाहों को किसी भी तरह नहीं धमकाएगा ।

लेकिन कभी ऐसा होने पर आरोपी द्वारा धमकी की जानकारी न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत नहीं की जाती और निण्रय के समय न्याय प्रभावित होकर रह जाता है । इस संबंध में स्थिति इतनी गंभीर हो गयी है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने जब एक उच्च स्तरीय अवलोकन समीति को जब स्थानीय न्यायालय में भेजा गया तो उसे घटिया प्रताड़न का निशाना बना लिया गया था, जो वास्तविकताओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए थी । इसलिए आवश्यक जान पड़ता है कि मामले की प्रत्येक पेशियों में इस बाबत आरोपी द्वारा उसके विरुद्ध के गवाहों की संक्षेप में जानकारी दर्ज होनी चाहिए कि किसी गवाह के साथ उसने छेड़छाड़ तो नहीं की ।

सुनवाई और आदेश के समय माननीय न्यायालय इस बारे में स्पष्ट कर सके कि आरोपी का उसके विरुद्ध के गवाहों की बीच स्थिति बग़ैरह कैसी रही । ऐसी दशाओं पर क़ाबू पाने के लिए आवश्यक क़दम उठाया जाना चाहिए ताकि विधि और न्याय पालिका का आदर्श सदा सर्वोच्च स्थान पर ही क़ायम रह सके ।

डॉ० एम०ए० रशीद

103बी, पेंशन नगर, नागपुर-440013

दवाई ख़रीदते समय

लेटिन भाषा में कहा जाता है caveat emptor जिसका आशय है कि ग्राहक स्वयं सचेत रहे । आज के परिप्रेक्ष्य में यह और भी प्रासंगिक हो गया है ।

कुछ दिन की बात है । मेडीकल स्टोर से दवाई ली । देखा कि वह जनवरी में एक्सपायर हो चुकी थी । दुकान वाले को बताया तो पहले तो बोला कि एक्सपायरी डेट जून में है । स्पष्ट था कि वह जान-बूझकर जनवरी jan और जून jun को कन्फ्यूज़ कर रहा था । ख़ैर उसने दवाई बदल दी । औपचारिक खेद तक भी प्रकट नहीं किया । मैंने ही कहा कि एक्सपायरी वाली यह दवाई शेल्फ़ से हटा दो ताकि ग़लती से फिर किसी को न दे बैठो ।

10 दिन बाद फिर वही दवाई लेने उसी दुकान पर गया । वही एक्सपायरी वाली दवाई फिर दी गयी । ज़ाहिर है कि उसने वह दवाई शेल्फ़ से नहीं हटायी थी । और शायद हटाएगा भी नहीं !

2.5 मि०ग्राम के स्थान पर 5 मि०ग्राम के कैप्सूल अनेक बार दे दिये गये हैं । डॉक्टर की लिखी दवा के बदले मिलती-जुलती दूसरी दवा दे देना आम बात है । स्ट्रिप में से कैप्सूल और गोलियां ऐसे काट कर दी जाती है कि एक्सपायरी डेट और दाम आपके सामने आते ही नहीं ।

मन में सवाल उठता है कि जब हम पढ़े-लिखों के साथ ऐसा होता है तो बेचारे अनपढ़, कम पढ़े-लिखों के साथ क्या नहीं होता होगा ! मेडीकल स्टोर और किराने की दुकान में कुछ तो फ़र्क़ होना चाहिए, मगर अक्सर देखने में आता नहीं । मालिक अक्सर कैश संभालता है । कम उम्र के छोकरे नुस्ख़ा पढ़ते और दवाइयां देते हैं, मरीज़ के जीवन के साथ इससे बड़ा खिलवाड़ और भला क्यों हो सकता है! विशेष रूप से ऐसे में जब बहुत-सी दवाइयों के नाम के प्रथम अक्षर मिलते-जुलते होते हों !

शासन प्रशासन को इधर ध्यान देने की न तो फ़ुर्सत प्रतीत होती है न रुचि । ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि हम आप स्वयं जागरूक हो जाएं । सचेत रहें । अच्छा होगा कि ख़रीदने के बाद दवाई डॉक्टर को दिखा दें ।

ओमप्रकाश बजाज

166 कालिंदी कुंज, इंदौर (म०प्र०)

भूल सुधार

'कान्ति' मासिक पत्रिका के अप्रैल 2016 अंक में आपके पत्र स्तम्भ के अंतर्गत प्रकाशित मुहम्मद मुश्ताक़ बेग के पत्र 'पड़ोसियों के साथ व्यवहार' में आरंभिक पंक्तियों में ही भूलवश हज़रत आदम (अलैहि०) व मां हव्वा' के स्थान पर 'हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) व मां हव्वा' छप गया है । पत्र लेखक और अन्य पाठक गण इस तथ्य को सुधार कर पढ़ने का कष्ट करें ।

अबरार अहमद (लाखेरी वाले)

554/3, जे०पी० कालोनी,
रंगपुर रोड, कोटा जंक्शन,
कोटा, राजस्थान-324002

दोहे

संसद अब चलती नहीं, होती है तकरार ।
कैसे होगा फिर भला, मीत देश का यार ।।

चमचों की चांदी बहुत, चापलूस की मौज ।
राजनीति में पल रही, इन लोगों की फ़ौज ।।

बदल रही है सियासत, अब तो भाईजान ।
करते वादे झूठ के, सभी सियासतदान ।।

सोते हैं फुटपाथ पर, मीत बिछा अख़बार ।
भाग्य यही मज़दूर का, कोस रहे सरकार ।।

शर्म गयी अब आंख से, अश्लील हुए दृश्य ।
कैसे आज समाज से, इन्हें करे अदृश्य।।

जीवन को समझें नहीं, कष्टों का इतिहास ।
लोग साहसी मानते, जीवन को मधुमास ।।

आया कैसा वक़्त है, बिकता तन बाज़ार ।
शहर हो या महानगर, चला यही व्यापार ।।

नफ़रत की अब तोड़ दो, सारी तुम दीवार ।
फिर देखना गली-गली, बहे प्यार ही प्यार ।।

कर्मवान-कर्मठ बनो, चमके फिर तक़दीर ।
तूती बोले हर जगह, हम भारत के वीर ।।

रोहित यादव

सैदपुर, मंडली अटेली (हरि०)

इस्लाम क्या है?

इस्लाम एक सिद्धान्त,एक आन्दोलन	मरयम जमीला	80.00
इस्लाम का आरम्भ	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
इस्लाम का परिचय	मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां	10.00
इस्लाम का नैतिक दृष्टिकाण	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	14.00
इस्लाम का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
इस्लाम की गोद में	मुहम्मद असद (नव-मुस्लि पूर्व लियोपोल्ड)	60.00
इस्लाम की जीवन-व्यवस्था	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था और दहेज प्रथा	प्रो० उमर हयात ख़ां ग़ौरी	20.00
इस्लाम की बुनियादी बातें	मौलाना अब्दुल हई	12.00
इस्लाम की बुनियादी तालीम (खुतबात मुकम्मल)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	110.00
इस्लाम की शीतल छाया	मौलाना सय्यद हामिद अली	12.00
इस्लाम के चारों ओर	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	14.00
इस्लाम क्या है?	मुहम्मद फारूक ख़ां	07.00
इस्लाम दर्शन	डॉ० गणेशदत सारस्वत	45.00
इस्लाम धर्म	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	60.00
इस्लाम भविष्य की आशा	सय्यद कुत्ब	24.00
इस्लाम मानवधिकारों का रक्षक	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	50.00
इस्लाम में उदारता	मतीन तारिक बागपती	40.00
इस्लाम में पाकी और सफाई	नसीम ग़ाज़ी फलाही	20.00

MMI PUBLISHERS

D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

कुछ विचारणीय बातें

प्रस्तुत लेख बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त आलिम मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी ने लिखा था, जो आज भी विभिन्न पहलुओं से प्रासंगिक है । इस लेख में मौलाना ने विशेषकर मुसलमानों के मन-मस्तिष्क में उठनेवाले सवालों का जवाब दिया है और बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद देश के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है । चूंकि इस मसले के हल के लिए एक बार फिर कोशिशें की जा रही हैं, इसलिए लेख में व्यक्त की गयी विचारणीय बातों की ओर भी पाठकों का ध्यान जाना चाहिए । –संपादक

बाबरी मस्जिद 6 दिसम्बर 1992 को शहीद कर दी गयी । इसके बाद जो कुछ घटित हुआ उसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता । देश के विभिन्न भागों में आग-सी लग गयी, भयानक दंगों का लंबा सिलसिला शुरू हो गया । हत्याओं और मार-काट का बाज़ार गर्म हुआ, ग़लतकारों और उपद्रवियों के साथ सैकड़ों निर्दोषों की जानें गयीं, औरतों के साथ बलात्कार हुए, मकानों और दुकानों को जला डाला गया, उद्योग-धंधे नष्ट हो गये, अरबों-खरबों की आर्थिक हानि हुई, लोग घरों से बेघर हो गये, इबादतगाहों तक को अपवित्र और विनष्ट किया गया ।

दंगों की भयावहता और जन-धन की हानि देखकर बहुत से लोगों को 1947 याद आ गया । किसी ने इसे देश के वर्तमान इतिहास का काला अध्याय बताया, किसी ने कहा कि गांधी जी की हत्या के बाद यह सबसे बड़ी राष्ट्रीय त्रासदी है । गांधी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे । उनकी हत्या कर इस एकता को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया गया था । बाबरी मस्जिद को शहीद करने वालों का भी यही लक्ष्य है, दोनों के पीछे एक ही ज़ेहन काम कर रहा है ।

इन भयानक परिस्थितियों ने सोचने-समझने वालों को झकझोर दिया और मस्तिष्कों में विभिन्न प्रकार के प्रश्न उभरने लगे । क्या हमारे इस देश में वास्तव में क़ानून का शासन है अथावा कोई गिरोह यहां अपनी ताक़त के नशे में चूर मनमानी कर सकता है और उसे रोका नहीं जा सकता?

देश की राजनैतिक व्यवस्था की आधारशिला लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता पर रखी गयी, क्या यह बुनियाद अब कमज़ोर होती जा रही है । और इसके धाराशाई होने का ख़तरा उत्पन्न हो चुका है ? यहां के मूल्यों में सहअस्तित्व और सहिष्णुता बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी । क्या अब ये मूल्य शेष नहीं रहे और अतीत की एक दास्तान बन गयी हैं? देश के स्थायित्व, शांति, एकता और आपसी सौहार्द का जो नक़्शा यहां क़ौमी रहनुमाओं ने अपने सामने रखा था, क्या अब वह बदल रहा है और इससे भिन्न कोई अन्य नक़्शा उभर रहा है ? जिस देश को विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का गहवारा माना जाता था, क्या अब वे परस्पर मिल-जुलकर यहां रह सकेंगे और उन्हें प्राकृतिक रूप में फलने-फूलने के अवसर प्राप्त रहेंगे, अथवा यहां केवल एक संस्कृति, एक कल्चर और एक विशिष्ट मानसिकता व विचारधारा को ही बाक़ी रहने का हक़ मिलेगा ?

इन हंगामों में सबसे ज़्यादा मुसलमान प्रभावित हुए । वे देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक होने के बावजूद सोचने पर मजबूर हैं कि बाबरी मस्जिद की शहादत एक आकस्मिक घटना है या भावनात्मक और सामायिक घटना है अथवा इसके पीछे कोई सोचा-समझा मंसूबा और गहरी साज़िश है? इबादतगाह तो दुनिया का सबसे सुरक्षित स्थान माना जाता है, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय अथवा समुदाय या वर्ग की इबादतगाह हो । जब वही सुरक्षित नहीं रही, तो फिर कौन-सी चीज़ सुरक्षित रह सकती है ? क्या उनकी जान-माल, इज़्ज़त आबरू और धर्म व संस्कृति किसी बड़े

ख़तरे से दो-चार है ? देश में उनके सम्मानजनक जीवन यापन का क्या रास्ता है ? क्या अब निराशा और अंधेरा ही है अथवा आशा की कोई किरण भी है ?

हालात हज़ार ख़राब सही, लेकिन हताशा और निराशा को कोई प्रश्न ही नहीं है । क़ौमों का नाज़ुक से नाज़ुक वक़्त आता है और कभी बुरे से बुरे हालात से उन्हें गुज़रना पड़ता है । इसी में उनकी परीक्षा है । जो क़ौम विपरीत परिस्थितियों और वातारण को देखकर न घबराए, निराश न हो, हिम्मत न हारे, चेतना और संवेदना जीवित रखे, परिस्थितियों का डटकर मुक़ाबला करे और दृढ़ता व साहस का परिचय दे, तो वह कामयाब होकर उभरती है और अपना स्थान आप पैदा कर लेती है ।

इसके विपरीत परिस्थितियां जिस क़ौम को शिथिल और कमज़ोर कर दे और प्रत्येक छोटी-बड़ी आज़माइश को अपने लिए मौत का पैग़ाम समझ बैठे, उसे दुनिया की कोई ताक़त ज़िन्दगी और ऊर्जा नहीं प्रदान कर सकती, वह स्वयं ही समाप्त होती चली जाती है । फिर यह कि जो क़ौम अल्लाह की सत्ता पर यक़ीन रखती हो वह कभी हताशा और निराशा का शिकार नहीं हो सकती । इसलिए कि सबसे बड़ी शक्ति उसी की है, उससे बड़ी कोई शक्ति नहीं है । सारी शक्तियों का स्रोत उसकी सत्ता है ।

वह जब चाहे रात के अंधकार को प्रातः की किरण में बदल सकता है और मौत के सायों में ज़िन्दगी के आसार पैदा करना उसके लिए असंभव नहीं है । परिस्थितियां यदि अंधकारमय हैं तो उसके आदेश से रौशन और प्रकाशमान भी हो सकती है, लेकिन ये करिश्मे उसी समय होते हैं और उन लोगों के लिए प्रकट होते हैं, जो ईमान व अमल की दौलत से मालामाल हों, जो केवल एक अल्लाह की सत्ता पर भरोसा रखते हों, जो हर हाल में उसके मन से चिमटे रहें, जो उसके सिवा किसी और से कोई उम्मीद न रखें और उसी को अपना आख़िरी आश्रय समझें । इसी के साथ हमें देश के वर्तमान हालात और इसकी फ़ज़ा को बदलने के प्रयास भी करने होंगे । हालात के बिगाड़ की ज़िम्मेदारी अन्यों पर डालकर हम अपनी ज़िम्मेदारी से बच नहीं सकते। इसमें हमारी दीर्घकालिक ग़फ़लतों और कोताही का बड़ा दख़ल है । इनमें बदलाव लाने के लिए भी लंबा प्रयास करना होगा । कोई छोटा प्रयास इस लंबे प्रयास का बदल नहीं है ।

सबसे पहले देशवासियों के समक्ष हमारे सही परिचय की आवश्यकता है । हमारा परिचय एक ऐसी क़ौम की हैसियत से न हो, जिसका कोई निश्चित लक्ष्य नहीं, कोई विशेष जीवन प्रणाली और विशिष्ट संस्कृति व सभ्यता नहीं, बल्कि कुछ ऐतिहासिक घटनाओं और रीति-रिवाजों ने उसे एक क़ौम बना दिया है । इसके विपरीत इसका परिचय एक ऐसे समुदाय (उम्मत) के रूप में हो जो सुनिश्चित सिद्धांतों और दृष्टिकोणों की स्वामी है, जिन्हें वह हक़ व सत्यता पर आधारित और अपने लिए और सारी दुनिया के लिए कल्याण व मुक्ति का ज़रिया मानता है । वह विशिष्ट विचारशैली और जीवन-सोच रखती है, जो उसे जान, माल और दुनिया की प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रिय है, जिसका वह किसी क़ीमत पर परित्याग नहीं कर सकती । वह एक ऐसा समुदाय (उम्मत) है, जो नैतिक मूल्यों का वाहक है जो उसके निकट सम्मान-योग्य हैं । उसकी सभ्यता, संस्कृति राजनीति प्रत्येक चीज़ के पीछे सर्वोत्तम-सर्वश्रेष्ठ और बहुत ही पवित्र अवधारणाएं कार्यशील हैं ।

इस परिचय पर यदि व्यंग्य या कटाक्ष किया जाता है, दक़ियानूसी और रूढ़िवादिता का ताना दिया जाता है, आधुनिक युग की अपेक्षाओं से बेख़बरी का आरोप लगाया

हालात हज़ार ख़राब सही, लेकिन हताशा और निराशा को कोई प्रश्न ही नहीं है । क़ौमों का नाज़ुक से नाज़ुक वक़्त आता है और कभी बुरे से बुरे हालात से उन्हें गुज़रना पड़ता है । इसी में उनकी परीक्षा है । जो क़ौम विपरीत परिस्थितियों और वातारण को देखकर न घबराए, निराश न हो, हिम्मत न हारे, चेतना और संवेदना जीवित रखे, परिस्थितियों का डटकर मुक़ाबला करे और दृढ़ता व साहस का परिचय दे, तो वह कामयाब होकर उभरती है और अपना स्थान आप पैदा कर लेती है ।

जाता है, तो उसे सहज-भाव के साथ सहन किया जाए । इस पर संतुष्ट करने की जो भी बुद्धिसंगत प्रयास हो सकता है किया जाए और तत्वदर्शिता और विवेकशीलता के साथ जो एतराज़ हों, उन्हें दूर करने और जो संदेह हों उनके निराकरण की युक्ति की जाए ।

जिन बुलंद उसूलों और जीवन मूल्यों पर ईमान का हम दावा करते हैं, उन्हें हमारे जीवन में परिलक्षित होना चाहिए। हमारा चरित्र इनका आईना हो, हमारा व्यवहार इनका साक्षी हो, हमारे व्यवहार से इनका सूबत मिले, हमारे मामले इनकी पुष्टि करें और हमारे संबंधों से ये दिखायी पड़ते हों । हम में से प्रत्येक व्यक्ति पत्नी, बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों के अधिकार पहचाने, वह किसी का पड़ोसी हो तो बेहतर पड़ोसी हो, व्यापारी हो तो अमानतदार व्यापारी हो, किसी की सेवा में हो तो कर्तव्यनिष्ठ सेवी हो, मालिक हो तो अधीनस्थों के अधिकार सहर्ष अदा करे, उसकी ज़ात से न किसी को अंदेशा हो और न कोई ख़तरा अनुभव करे ।

वह हरेक के दुख-दर्द में काम आने वाला और उनके सुख-दुख में शामिल रहे । दुनिया को यह सबूत मिले और लगातार मिलता चला जाए कि मुसलमान सुख-दुख, परेशानियों और खुशहालियों, किसी हाल में इस्लामी शिक्षाओं का उल्लंघन नहीं करता, वातावरण शांतिमय हो अथवा चारों ओर उपद्रव व फ़साद के शोले भड़क रहे हों, वह इस्लाम द्वारा निर्धारित सीमाओं को पामल नहीं कर सकता । दंगों में जब मासूम और बेगुनाह मारे जाते हैं, इस्मतें लुटती हैं, धन और सम्पत्ति जलायी जाती है, उस समय भी वह दूसरों की जान, माल और इज़्ज़त व आबरू का रक्षक बनकर सामने आता है। इस प्रकार वह जहां रहे और जिस हाल में रहे, और उसके माध्यम से संसार को इस्लाम की शिक्षा मिलती रहे ।

समुदाय (उम्मत) को ख़ैर-ए-उम्मत कहा गया है । इसका मतलब यह है कि वह सारे संसार के लिए अपने पास भलाई और कल्याण का संदेश रखता है । इस संदेश को सर्वजन तक पहुंचाना चाहिए । इस देश के सामने यह बात आनी चाहिए और पूरे ज़ोर और कुव्वत के साथ आनी चाहिए कि मुसलमान इस देश के शुभचिंतक हैं और खुदापरस्ती (ईशभक्ति) की बुनियाद पर इसका निर्माण व विकास चाहते हैं ।

विभिन्न वर्गों और समुदायों के मध्य झगड़ों को वे ग़लत और अनुचित समझते हैं और उनके बीच एकता और भाईचारे का जज़्बा उत्पन्न करना चाहते हैं वे किसी के दोस्त अथवा किसी के दुश्मन नहीं हैं, बल्कि सारे इन्सानों को एक खुदा की मख़लूक़ (रचना) जानते हैं और उनकी भलाई का प्रोग्राम रखते हैं ।

इस परिचय पर यदि व्यंग्य या कटाक्ष किया जाता है, दक़ियानूसी और रूढ़िवादिता का ताना दिया जाता है, आधुनिक युग की अपेक्षाओं से बेख़बरी का आरोप लगाया जाता है, तो उसे सहज-भाव के साथ सहन किया जाए । इस पर संतुष्ट करने की जो भी बुद्धिसंगत प्रयास हो सकता है किया जाए और तत्वदर्शिता और विवेकशीलता के साथ जो एतराज़ हों, उन्हें दूर करने और जो संदेह हों उनके निराकरण की युक्ति की जाए ।

वे इस मुल्क के सामने जुल्म व अत्याचार को समाप्त करने वाले और न्याय व इन्साफ़ के ध्वजावाहक की हैसियत से आएं, यहां की जातीय व वर्गीय हिंसा को समाप्त करें, कमज़ोर वर्गों को शक्तिशाली वर्गों के अन्याय व अत्याचार से बचाएं और मानवीय एकता का पाठ पढ़ाएं ।

पवित्र कुरआन ने विभेद और फूट से मना किया और कहा कि इससे तुम कमज़ोर हो जाओगे और तुम्हारे क़दम उखड़ जाएंगे । आज इसी सूरतेहाल से हम जूझ रहे हैं । अल्लाह तआला ने इस समुदाय को कुछ बुनियादी अक़ीदों और नज़रियों के तहत एकजुट और संगठित किया था और वह एक सीसा पिलाई हुई दीवार बनकर उभरी थी । विरोधी ताक़तें इससे टकराती, मगर इसे भेद नहीं पाती थीं, लेकिन एकता पैदा करने वाले ये अक़ीदे और नज़रिये ही हमारी निगाहों से ओझल हो गये हैं । छोटी-छोटी समस्याओं ने हमारी पंक्तियों में बड़े-बड़े छेद कर डाले हैं और हम एक-दूसरे से उलझ पड़े हैं । कुछ समस्याओं में प्राकृतिक है, वह मतभेद मौजूद है और रहेगा, लेकिन इनमें से अधिकांश समस्याओं की प्रकृति आंशिक व

गौण है । मगर विभिन्न कारणों से यही समस्याएं हमारे बीच फूट का ज़रिया बन गयी हैं । इस सूरतेहाल को समाप्त होना चाहिए ।

इस वास्तविकता को हम नहीं भुला सकते कि इस समुदाय का लाभ-हानि एक है । इस पर अगर कोई मुसीबत आती है तो किसी का मस्लक (मत) मालूम करके नहीं आती, बल्कि समुदाय के सदस्य की हैसियत से आती है । यह समुदाय अगर उभरेगा भी तो मुस्लिम समुदाय की हैसियत से ही उभरेगा । इस देश में हमारे मौजूदा संकटों का एक कारण यह भी है कि 12 करोड़ की आबादी होने के बावजूद भी हमारी कोई एक आवाज़ नहीं है । हमारी आवाज़ एक होती तो संभवतः हमारी समस्याएं इतनी पेचीदा नहीं होतीं ।

इस समय सबसे महत्वपूर्ण और तात्कालिक समस्या यह है कि देश के विभिन्न वर्गों के बीच नफ़रत पक्षपात और संकीर्णता की जो फ़ज़ा पैदा करने की कोशिश की जा रही है, उसका भरपूर मुक़ाबला किया जाए, अम्न व शांति स्थापित हो, क़ानून का शासन हो, न्याय व इन्साफ़ हो, प्रत्येक व्यक्ति को बराबर के अधिकार हासिल हों, उन्नति के द्वार सबके लिए खुले हों और प्रत्येक को अपनी योग्यता के अनुसार देश व क़ौम की सेवा के अवसर प्राप्त हों । जो मतभेद हों उन्हें गंभीरता से शांतिपूर्ण वातावरण में हल करने के प्रयास किए जाएं । यह किसी एक व्यक्ति अथवा समूह की नहीं आपितु पूरे देश की आवश्यकता है । यह इस देश की भीतरी आवाज़ है, जिसे दबाने की कोशिश की जाती है।

इस विस्तृत राष्ट्र में एक छोटा-सा वर्ग है, जो यहां के वातावरण को बिगाड़ना चाहता है और बिगाड़ रहा है । हंगामों को हवा देता है और उनमें सम्मिलित भी होता है । इस वर्ग का कोई दीन-धर्म या कोई नैतिकता नहीं है । इसके पीछे जो नापाक उद्देश्य हैं, उनसे दुनिया परिचित है । इस वर्ग के व्यक्ति हर जगह और हर क़ौम में मिल जाएंगे ।

इस देश की बहुत बड़ी आबादी अम्न व अमान और सकून चाहती है । उसके पास इन हंगामों के लिए फ़ुर्सत है और न यह उसका स्वभाव है । उसकी दुर्बलता यह है कि ऐसी नाज़ुक परिस्थितियों में ख़ामोशी ही में अपनी भलाई मसझती है । उसके भीतर हक़ (सत्य) को हक़ और नाहक़ (असत्य) को नाहक़ कहने की हिम्मत और हौसला नहीं है, लेकिन इसके साथ हमारे लिए ख़ुशी की बात यह है कि ऐसे व्यक्तियों की पहले भी कमी नहीं थी और वर्तमान हंगामों के बाद तो इनकी संख्या में वृद्धि ही हुई है, जिन्होंने हाल के दंगों और उपद्रवों पर अपनी नागवारी और नापसंदीदगी का इज़हार किया है ।

जो लोग इनमें पेश-पेश रहे हैं, उनके नापाक इरादों को उजागर किया है और अन्याय व अत्याचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी है । उन्हें इस बात पर अफ़सोस और सदमा है कि इन उपद्रवों से हमारी तस्वीर बिगड़ी है और बदनामी और रुस्वाई हुई है । इसमें राजनीतिज्ञ भी हैं, विद्वान और विचारक भी हैं, सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं और मीडिया से संबंध रखने वाले तो ख़ासी तादाद में मौजूद हैं । राजनीतिक दलों ने भी इस पर अपना दुख व शोक प्रकट किया है ।

आवश्यकता इस बात की है कि इस एहसास को बल दिया जाए और उनके साथ मिलकर अम्न व शांति और न्याय व इन्साफ़ का वातारण बहाल किया जाए और यह हक़ीक़त पूरी ताक़त के साथ स्पष्ट की जाए कि इसे देश की सलामती, एकता और उन्नति के लिए अम्न व शांति का क़ायम रहना ज़रूरी है । इसके लिए सोचा-समझा कोई मंसूबा और कार्य शैली तैयार करने की आवश्यकता है ।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

हज़रत रूबैया बिन्त नज़र (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत रूबैया (रज़ि॰) का ताल्लुक़ अंसार के सबसे प्रतिष्ठित ख़ानदान बनू नज्जार से था । आपके पिता का नाम नज़र बिन ज़मज़म था । जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत अनस बिन नज़र (रज़ि॰) आपके सगे भाई और हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) आपके सगे भतीजा थे ।

हज़रत रूबैया (रज़ि॰) का निकाह अपने ही ख़ानदान के एक व्यक्ति सुराक़ा बिन हारिस से हुआ । सुराक़ा की मृत्यु हिजरत से पहले ही हो गयी थी इसलिए उन्हें इस्लाम क़ुबूल करने का अवसर न मिल सका । लेकिन सुराक़ा से हज़रत रूबैया (रज़ि॰) को एक बेटा हुआ जिसका नाम हारिसा था । हज़रत रूबैया (रज़ि॰) और उनके बेटे हज़रत हारिसा (रज़ि॰) ने हिजरत से कुछ दिन पहले (या हिजरत के तुरंत बाद) इस्लाम क़ुबूल कर लिया था ।

हज़रत रूबैया (रज़ि॰) अपने बेटे हारिसा (रज़ि॰) को बहुत चाहती थीं और अपने यतीम बेटे का पालन-पोषण इतनी तन्मयता और दिल लगाकर किया कि बच्चे को बाप की कमी महसूस न होने दी । हज़रत हारिसा (रज़ि॰) भी अपनी मां के बहुत आज्ञाकारी बेटे थे और हर समय मां की सेवा में लगे रहते थे ।

सन 2 हिजरी में जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) बद्र की जंग के लिए रवाना हुए तो हज़रत हारिसा (रज़ि॰) भी आप (सल्ल॰) के साथ युद्ध के लिए निकल पड़े । मैदान जंग में हज़रत हारिसा (रज़ि॰) हौज़ के कनारे खड़े थे और पानी पीना ही चाहते थे कि हब्बान बिन अर्क़ा नाम के एक मुश्रिक ने ताक कर उन पर तीर चलाया । तीर उनकी गर्दन में लगा और आर-पार हो गया और उसी तीर की वजह से वे शहीद हो गये ।

हज़रत हारिसा (रज़ि॰) की शहादत की ख़बर सुनकर हज़रत रूबैया (रज़ि॰) को सख़्त सदमा पहुंचा लेकिन उन्होंने असाधारण धैर्य एवं संयम का सबूत दिया । जब अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) जंगे बद्र के बाद मदीना मुनव्वरा वापस हुए तो हज़रत रूबैया (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुईं और कहा :

"ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! हारिसा मेरा बहुत ही आज्ञाकारी एवं प्रिय बेटा था । उसकी जुदाई का जिस क़द्र सदमा मेरे दिल पर है उसको आप ख़ूब जानते हैं । मैंने चाहा था कि उसके ग़म में मातम करूं, रोऊं, चिल्लाऊं, लेकिन फिर सोचा कि जब तक आप से यह बात न पूछ लूं कि हारिसा (रज़ि॰) अब किस हाल में है, ख़ामोश रहूंगी । यदि वे जन्नत में हैं तो सब्र करूंगी और यदि वे जहन्नम में हैं तो अल्लाह देखेगा कि मैं उसके ग़म में अपना क्या हाल करती हूं ।"

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "यह तुम क्या कह रही हो ? हारिसा (रज़ि॰) तो जन्नतुल फ़िरदौस में हैं ।"

यह सुनकर हज़रत रूबैया (रज़ि॰) ख़ुशी से चीख़ पड़ीं और अनायास ही उनकी ज़ुबान से निकल पड़ा : "वाह ! वाह ! ऐ हारिसा ।"

उसके बाद उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को संबोधित करते हुए कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! अब मैं हारिसा के लिए कभी न रोऊंगी ।"

***

सही बुख़ारी में हज़रत रूबैया (रज़ि॰) के बारे में एक और घटना का उल्लेख मिलता है । एक बार हज़रत रूबैया (रज़ि॰) के हाथ से एक अंसारी लड़की का दांत टूट गया । लड़की के ख़ानदान वालों ने क़िसास की मांग की । आप (सल्ल॰) ने उस लड़की के हक़ में फ़ैसला सुना दिया । आप (सल्ल॰) ने कहा : "दांत के बदले दांत और जान के बदले जान ही ख़ुदाई क़ानून है ।"

हज़रत रूबैया (रज़ि॰) के भाई हज़रत अनस बिन नज़र (रज़ि॰) भी वहां पर मौजूद थे । वे बहन की मुहब्बत के जोश में बोल उठे ।

"ख़ुदा की क़सम ! रूबैया (रज़ि॰) का दांत न तोड़ा जाएगा ।"

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "भई, ख़ुदा का आदेश तो यही है। हां, यदि मुद्दई (यानी वह लड़की) दैत स्वीकार कर ले तो क़िसास टल सकता है।"

अल्लाह का करना लड़की के परिजन क़िसास लेने पर राज़ी हो गये और हज़रत रूबैया (रज़ि॰) का दांत टूटने से बच गया। इसी अवसर पर अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "अल्लाह के कुछ नेक बन्दे ऐसे हैं कि जब किसी बात पर क़सम खा बैठते हैं तो अल्लाह उनकी क़सम पूरी कर देता है।"

2. हज़रत ख़लीदा बिन्त क़ैस (रज़ि॰)

हज़रत ख़लीदा बिन क़ैस (रज़ि॰) अंसार की उन महिलाओं में से हैं जिन्होंने हिजरते नबवी से पहले ही इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। आपका निकाह मशहूर सहाबी हज़रत बराअ् बिन मारूर अंसारी से हुआ। हज़रत बराअ् ख़ज़रज क़बीला के ख़ानदान बनू सलमा के रईस थे।

हज़रत ख़लीदा (रज़ि॰) को एक बेटा बिशर (रज़ि॰) और एक बेटी सलाफ़ा (रज़ि॰) थी। इन दोनों को सहाबी-ए-रसूल (सल्ल॰) होने का सम्मान प्राप्त है। बिशर (रज़ि॰) बैअते उक़्बा कबीरा में अपने पिता हज़रत बराअ् (रज़ि॰) के साथ शामिल थे। बाप बेटे ने इस बैअत से पहले ही इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। हज़रत बराअ् बिन मारूर ने हिजरते नबवी से केवल एक महीना पहले वफ़ात पायी।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) जब मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो आपने हज़रत बिशर (रज़ि॰) को अपने पिता की जगह बनू सलमा का सरदार मुक़र्रर किया। ख़ैबर की जंग में हज़रत बिशर (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) के साथ थे। इसी युद्ध के मौक़े पर आप (सल्ल॰) को बकरी के गोश्त में ज़हर दिया गया तो उसके खाने वालों में आप (सल्ल॰) के अलावा हज़रत बिशर (रज़ि॰) भी थे। इसी ज़हर के प्रभाव से उनका इन्तिक़ाल हो गया।

बयान किया जाता है कि जब आप (सल्ल॰) का आख़िरी वक़्त आ गया और हज़रत ख़लीदा (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) की अयादत को उनकी सेवा में पहुंचीं और आप (सल्ल॰) के मुबारक शरीर पर हाथ रखा तो अनायास ही कह उठीं : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! ऐसा तेज़ बुख़ार मैंने किसी का नहीं देखा।"

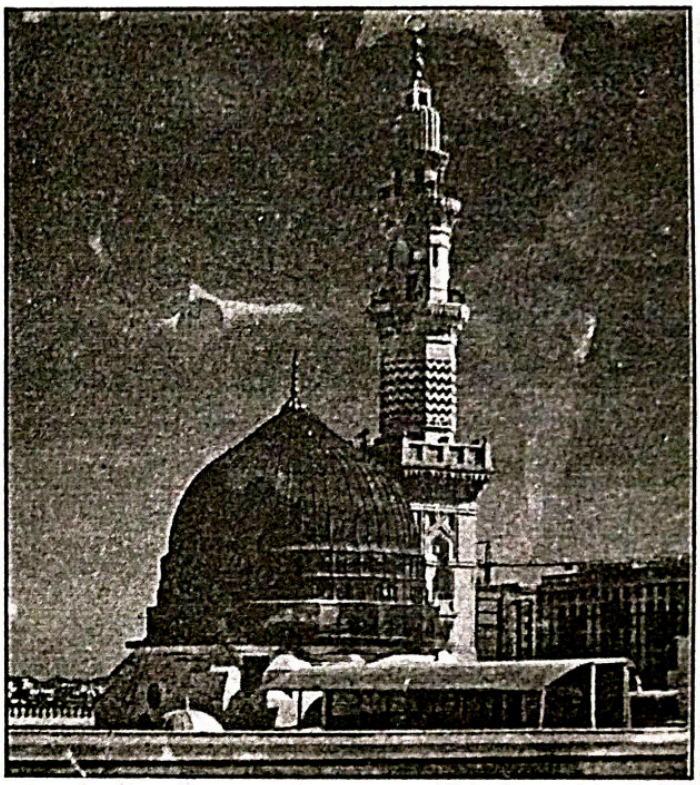

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

"जिस तरह हमको दूसरों से ज़्यादा अज्र दिया जाता है, उसी तरह तकलीफ़ों की शिद्दत भी दूसरों से दोगुनी होती है।" फिर पूछा : "लोगों को मेरी बीमारी के बारे में क्या ख़्याल है ?"

हज़रत ख़लीदा (रज़ि॰) ने जवाब दिया कि उनका गुमान है कि आप (सल्ल॰) को 'ज़ातुल जुन्ब' पसली का दर्द है।

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : या अल्लाह ! इस बला से मुझे सुरक्षित रखना। यह तो उस ज़हर का प्रभाव है जो मैंने और तेरे बेटे (हज़रत बिशर रज़ि॰) ने ख़ैबर में खाया था। यह अन्दर ही अन्दर काम करता रहा।"

अल्लामा इब्न साअद (रह॰) कहते हैं कि एक बार हज़रत ख़लीदा (रज़ि॰) ने आप (सल्ल॰) से पूछा :

"ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! क्या मुर्दे भी पहचाने जाते हैं ?"

आप (सल्ल॰) ने कहा : "पाक आत्मा तो जन्नत में हरी चिड़िया के समान हैं। यदि चिड़िया पेड़ के पत्तों में पहचानी जाती है तो वह भी पहचाने जा सकते हैं।"

हज़रत ख़लीदा बिन्त क़ैस (रज़ि॰) से कुछ और हदीसें भी उल्लिखित हैं। उनकी बेटी सलाफ़ा (रज़ि॰) मशहूर सहाबी हज़रत अबू क़तादा (रज़ि॰) की पत्नी थीं।

अल्लाह की राह में ख़र्च

■ डॉ॰ नौशाद अली

भलाई के कामों में ख़र्च करने के लिए प्रेरित करते हुए अल्लाह तआला कहता है–

"शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर अभारता है, जबकि अल्लाह अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है । अल्लाह बड़ी समाई वाला, सर्वज्ञ है ।

वह जिसे चाहता है तत्वदर्शिता प्रदान करता है और जिसे तत्वदर्शिता प्राप्त हुई उसे बड़ी दौलत मिल गयी । किन्तु चेतते वही हैं जो बुद्धि और समझ वाले हैं । (2:268,269)

तत्वदर्शिता (हिकमत) कहते हैं बातों की तह तक पहुंच जाना सही वक़्त पर सही फ़ैसला लेने की शक्ति, किसी इन्सान के लिए इससे बड़ी दौलत और क्या हो सकती है कि उसे तत्वदर्शिता प्रदान कर दी जाए, लेकिन यहां एक सवाल यह पैदा होता है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करने का उल्लेख करते हुए तत्वदर्शिता (हिकमत) की बात कही गयी है ।

यहां बताया जा रहा है कि एक तरफ़ शैतान है जो इन्सान को निर्धनता का भय दिलाता है, वह इन्सान को समझाता है कि जो कुछ तूने कमाया है वह सिर्फ़ तेरा है उसे दूसरों पर क्यों ख़र्च किया जाए, जहां तक हो सके बचत करने की कोशिश की जाए ताकि कल किसी बड़ी रक़म की ज़रूरत पड़ती है तो आसानी के साथ पूरा किया जा सके ।

इस तरह की गंदी मानसिकता का परिणाम यह होता है कि इन्सान अपने लिए और अपने बीबी-बच्चों से आगे किसी के लिए कुछ सोचना ही नहीं चाहता फिर चाहे उसका अपना सगा भाई या फिर सगी बहन ही क्यों न हो । ऐसे इन्सान के आसपास चाहे कितने ही अपने-पराये, ज़रूरतमंद व परेशान हाल लोग मौजूद हों । ऐसे कंजूस इन्सान को कुछ नज़र नहीं आता । यही वह शर्मनाक काम है जिसकी यहां निंदा की जा रही है ।

> **मेरे यहां जन्म दिन नहीं मनाया जाता, लेकिन घर के सभी लोगों के जन्म दिन पर मां-बाप की बरसी पर या बच्चे इम्तिहान में पास होते हैं और इसी तरह के मुख्य-मुख्य अवसरों पर कुछ रक़म डिब्बे में डाल दिया जाता है । इस रक़म का इस्तेमाल इस तरह किया जाता है, किसी ग़रीब के यहां शादी हो, कोई बीमार हो या किसी की कोई विशेष आवश्यकता है, किसी अपने-पराये की मदद करना है, कोई उधार लेने वाला आ जाता है ।**

इसके विपरीत अल्लाह तआला कहता है कि रज़ा के लिए ज़रूरतमंदों और दूसरे भलाई के कामों में अगर धन-दौलत ख़र्च किया जाए तो दौलत कम नहीं होती बल्कि अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लोंकरम से उसे और बढ़ाता रहता है । बज़ाहिर यह बात बड़ी अजीब-सी मालूम होती है कि अल्लाह तआला की राह में धन ख़र्च करने पर भी कम नहीं होता । इसलिए फ़रमाया जा रहा है कि ये तत्वदर्शिता की बातें हैं जिन्हें समझने के लिए मोमिनाना दिल और बोध की ज़रूरत होती है । इन बातों से केवल वही लोग शिक्षा लेते हैं, जो लोग बुद्धिमान होते हैं ।

आजकल इस्लामी दुनिया जिस तरह के भयानक दौर से गुज़र रही है उसको देखते हुए आम मुसलमान भी यह सोचने पर मजबूर है कि हमारी अपनी कौन-सी ऐसी ख़राबी है कि दुनिया भर की मुसीबतें हमारा नसीब बन गयी हैं और जब कुछ समझ में नहीं आता तो सारा बवाल मुस्लिम नेताओं और शासकों के सर थोपकर खुद को संतुष्ट करने की असफल कोशिश करता है । वह सोचता है कि हमारे शासक

और नेता इतने स्वार्थी और नादान क्यों हैं कि आपस में एक-दूसरे का ख़ून बहाने पर तुले हैं ।

लेकिन दूसरों के बारे में फ़ैसला लेते वक़्त हम अपनी तरफ़ देखना भूल जाते हैं कि बिल्कुल बेकार की बातों पर हम लोग किस तरह लड़ते रहते हैं । दो सगे भाई अगर मुहब्बत के साथ नहीं रह सकते तो नेताओं और शासकों की समस्याएं और हित तो हम से कहीं ज़्यादा बड़े होते हैं ।

इन्सान की कमज़ोरी होती है कि वह दूसरों से तो बहुत कुछ चाहता है लेकिन अपने कर्तव्यों को आमतौर पर भूल जाता है । किसी समाज की सफलता की आशा उसी वक़्त की जा सकती है जब उसी समाज के लोगों की एक बड़ी संख्या का चरित्र और नैतिकता इतनी ऊंची हो जाए कि उनकी ज़िन्दगियां आपस में एक-दूसरे की सहायक और दूसरों के लिए भी भलाई का माध्यम बन जाएं।

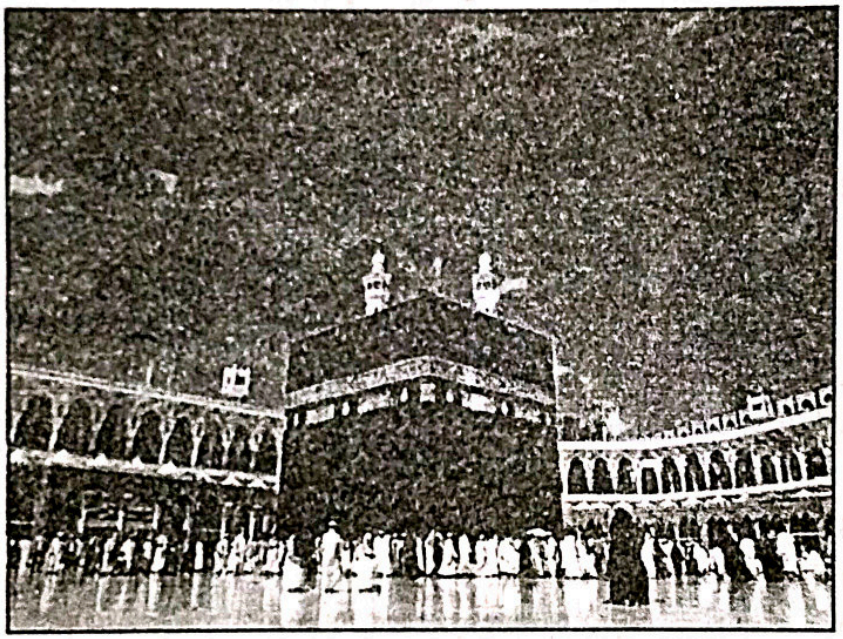

पश्चिमी उत्तर प्रदेश वह इलाक़ा है जहां आमतौर पर मुसलमानों की आर्थिक स्थिति अच्छी है । हर शहर से केवल 20 प्रतिशत लोग अगर 500 रुपये इकट्ठा करें और वह रक़म राय मशविरे के बाद एक योजना के तहत ख़र्च की जाए तो कुछ सालों में इन शहरों के मुस्लिम समाज की बहुत-सी समस्याओं पर क़ाबू पाया जा सकता है । मैं मानता हूं कि जनता की समस्याओं के निवारण में सरकार और सत्ता का बहुत बड़ा दख़ल हुआ करता है । लेकिन लोकतंत्र की एक बड़ी विशेषता यह होती है कि कोई समाज अगर जागरूक है तो सरकार और सत्ता की सहायता के बिना भी बहुत कुछ किया जा सकता है ।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के वे मुस्लिम घराने जहां डेढ़ दो किलो दूध केवल चाय में ख़र्च कर दिया जाता हो, हज़ारों रुपये हर महीने फैशन के कपड़ों व अन्य अनावश्यक चीज़ों पर ख़र्च होते हों, जो लोग होटलों में बैठकर हज़ारों रुपये खाना खाने के शौक़ में उड़ा देते हों, जो लोग शादी ब्याह और इसी तरह के अन्य ख़ुशी के अवसर पर लाखों रुपये केवल अपनी शानो-शौकत को दिखाने के लिए झोंक देते हों, उन लोगों के लिए 500 रुपये महीना ऐसा ही है जैसे दांत कुरेद कर माचिस की तीली फेंक दी जाती है ।

मैं समझता हूं कि अस्ल समस्या यह नहीं है कि हम कुछ करने की पोज़िशन ही में नहीं हैं, बल्कि अस्ल समस्या यह है कि दूसरे इन्सानों की तकलीफ़ व परेशानी का दर्द व एहसास और दूसरों की सहायता करने की भावना हमारे अन्दर कितनी पायी जाती है ।

अल्लाह की राह में ख़र्च करने के संबंध में एक साहब ने अपना अनुभव कुछ इस तरह बयान किया, उनका कहना था कि मेरे यहां डिब्बा बनाया हुआ है जब भी वेतन निकाल कर लाता हूं हज़ार-पांच सौ रुपये डिब्बे में डाल देता हूं। इसी तरह जब कोई फ़सल आती है चावल व गेहूं इत्यादि होता है, तो उसी फसल में से ग़रीबों का हिस्सा निकाल कर बांट देता हूं और अगर पैदावार की नक़द रक़म आती है तो एक विशेष हिसाब से रक़म निकालकर डिब्बे में डाल दी जाती है ।

मेरे यहां जन्म दिन नहीं मनाया जाता, लेकिन घर के सभी लोगों के जन्म दिन पर मां-बाप की बरसी पर या बच्चे इम्तिहान में पास होते हैं और इसी तरह के मुख्य-मुख्य अवसरों पर कुछ रक़म डिब्बे में डाल दिया जाता है । इस रक़म का इस्तेमाल इस तरह किया जाता है, किसी ग़रीब के यहां शादी हो, कोई बीमार हो या किसी की कोई विशेष आवश्यकता है, किसी अपने-पराये की मदद करना है, कोई उधार लेने वाला आ जाता है ।

सर्दियों में लिहाफ़ और गरम कपड़े मंगाकर बांट दिये जाते हैं । किसी नेक काम में चंदा देना होता है तो डिब्बा इतना बरकती है कि सारे काम हो जाते हैं, लेकिन डिब्बा

कभी ख़ाली नहीं होता ।

यह सही है कि जो भी नेक काम किया जाए वह विशुद्ध रूप से अल्लाह तआला की रज़ा के लिए होना चाहिए लेकिन साथ ही यह भी एक स्वाभाविक बात है कि आप अगर सच्चे दिल से दूसरों की मदद करेंगे तो अपने हमदर्दों, दोस्तों और चाहने वालों की संख्या में वृद्धि कर रहे होंगे । इस तरह जहां आपके माध्यम से दूसरों को मदद पहुंच रही होती है ख़ुद अपनी ज़िन्दगी भी आसान हो जाती है ।

कल्पना कीजिए कि अगर मौजूदा दौर में कोई समाज ऐसा पाया जाता हो जो केवल अपना ही नहीं बल्कि दूसरों का भी भला चाहता हो अपने पराये सबके साथ इन्साफ़ का मामला और नेकी का व्यवहार करता हो तो उस समाज को सभी दूसरे समाजों के लिए मार्गदर्शक बनने से कौन रोक सकता है । अल्लाह की राह में ख़र्च करने के संबंध में यही वह तत्वदर्शिता (हिकमत) है कि जिसके लिए फ़रमाया गया है कि इन बातों से केवल बुद्धिमान लोग ही शिक्षा प्राप्त किया करते हैं ।

यह सही है कि जो भी नेक काम किया जाए वह विशुद्ध रूप से अल्लाह तआला की रज़ा के लिए होना चाहिए लेकिन साथ ही यह भी एक स्वाभाविक बात है कि आप अगर सच्चे दिल से दूसरों की मदद करेंगे तो अपने हमदर्दों, दोस्तों और चाहने वालों की संख्या में वृद्धि कर रहे होंगे । इस तरह जहां आपके माध्यम से दूसरों को मदद पहुंच रही होती है ख़ुद अपनी ज़िन्दगी भी आसान हो जाती है ।

आप (सल्ल॰) को सारे संसार के लिए दयालू कहकर पुकारा जाता है । इसका सही अर्थ यही है कि आप (सल्ल॰) लोगों को ज़िन्दगी गुज़ारने का वह तरीक़ा बताने व समझाने आये थे कि हम सब ख़ुद भी इज़्ज़त व सकून की ज़िन्दगी गुज़ार सकें । और हमारी ज़िन्दगियां दूसरों के लिए भी भलाई का माध्यम बन जाएं । आप (सल्ल॰) की ज़िन्दगी लोगों के लिए नमूना है जिसके द्वारा हम लोग पारलौकिक जीवन की सफ़लता के साथ-साथ अपनी मौजूदा ज़िन्दगी को भी सफल बना सकते हैं ।

नमाज़ की सफ़ों को ठीक करने का तरीक़ा यह बताया जाता है कि कंधे से कंधा मिलाकर सीधे खड़े हो जाओ, ज़िन्दगी के दूसरे मामलों के लिए भी यही नियम काम करता है कि यह मत देखो कि दूसरे क्या कर रहे हैं बल्कि दूसरों के सुधार की चिंता से कहीं अधिक हमें अपने सुधार की चिंता करनी चाहिए हम सब अपने-अपने सुधार की चिंता में लग जाएं इससे बड़ा सुधार का काम क्या हो सकता है । हमारी नैतिकता और चरित्र इतना ऊंचा और मानव सेवा का दायरा इस तरह विस्तृत हो कि दूसरे भी इससे लाभ उठा सकें, इससे अच्छी दावत और क्या हो सकती है ।

मुस्लिम समाज में नेकियां हों किसी भी साज़िश, विरोध और दुष्प्रचार का इससे अच्छा जवाब और क्या हो सकता है । लोग कहते हैं कि हालात बहुत ख़राब हैं । ग़ौर कीजिए तो इस ख़राबी का एक पहलू यह भी है कि जितने हालात ख़राब होते हैं लोगों में इज़्ज़त व सुकून की ज़िन्दगी और नेकियों की चाहत उतनी ही ज़्यादा बढ़ जाती है । भौतिक उन्नति ख़ुशहाली और अनगिनत वैज्ञानिक खोजों के बावजूद हर व्यक्ति परिस्थितियों से परेशान नज़र आता है । लेकिन इस ख़राबी का कोई हल लोगों को नज़र नहीं आता ।

दुनिया के सारे देशों और समाजों पर नज़र दौड़ाइए किसी के पास भी मानवता के लिए कोई ठोस कार्य योजना नहीं है । सभी अपने-अपने हितों के लिए नकारात्मक कोशिशों में व्यस्त हैं । अपने देश की सभी राजनीतिक पार्टियां सामाजिक संस्थाएं और धार्मिक नेताओं को देखिए किसी के पास अपने समाज को देने के लिए कोई ठोस योजना नहीं है । बल्कि कुछ नेता और संस्थाएं तो झूठ और मक्कारी का सहारा लेकर दूसरों के विरुद्ध नफ़रत फैलाने में व्यस्त हैं । और इसी को देश और समाज की बड़ी सेवा समझ रही हैं । हालात बहुत ही ज़्यादा ख़राब हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि न्याय के ध्वजा वाहकों के लिए मैदान ख़ाली है इसी तरह के हालात में अगर कोई समाज ऐसा उठता है जो न्याय और नेकियों को प्रिय समझता हो केवल अपना ही नहीं बल्कि दूसरों का भी भला चाहता हो तो उसकी शिक्षाएं, सत्य और न्याय के लिए उसकी कोशिशें दूसरों को ज़रूर प्रभावित करेंगी ।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

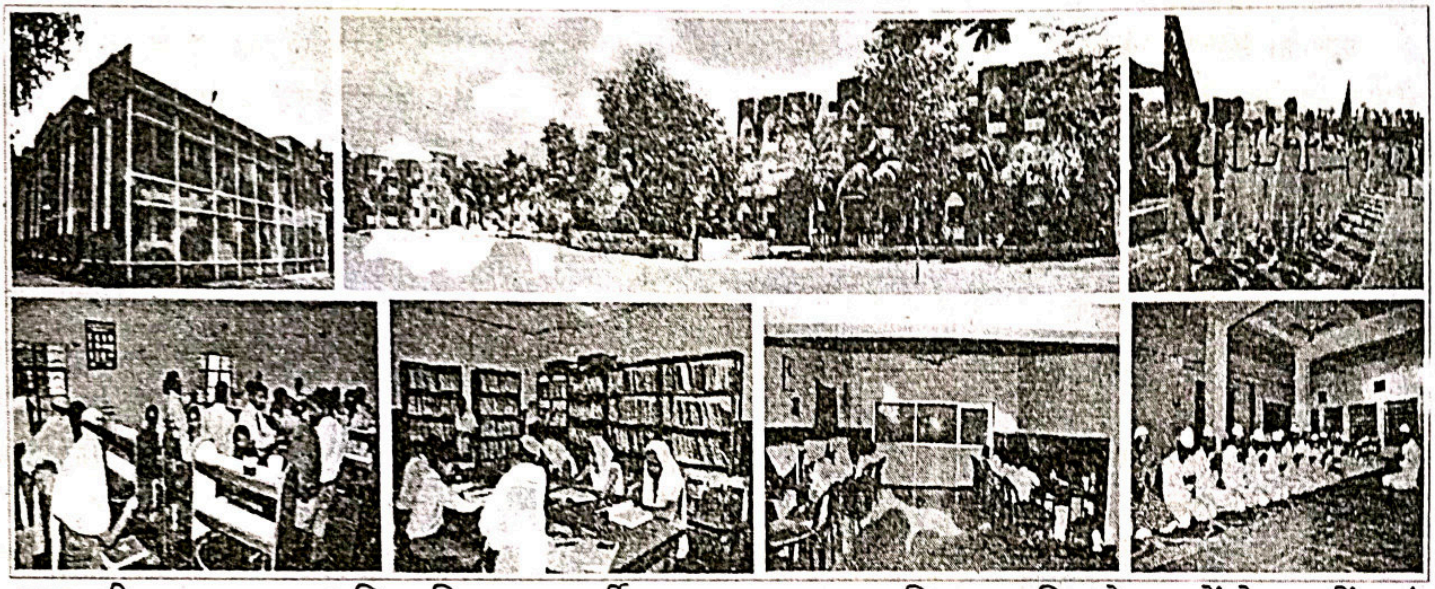

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम.ए., बी.एड.ए (अलीग.)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम.एस.सी., बी.एड.
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

ईश्वर का अवतार होना सत्य वैदिक सिद्धांतों के विरुद्ध

■ मनमोहन कुमार आर्य

एक समय ऐसा था, जब वेद व वैदिक साहित्य से अनेक प्रसंगों में अज्ञान व कल्पनाओं का मिश्रण कर संस्कृत व काव्य रचने में प्रवीण विद्वानों ने पुराणों आदि ग्रन्थों की रचना की गयी । ऐसे ही समय में, देश, काल व परिस्थितियों व बौद्ध-जैन मत के प्रभाव के कारण, ईश्वर के अवतार की भी कल्पना की गई जो आज भी प्रचलित है ।

अवतार सृष्टि की रचना व पालन करने वाले अजन्मा, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ ईश्वर के मनुष्य जन्म लेने को कहा जाता है । महाभारत काल के बाद जिन लोगों ने ईश्वर के अवतार लेने की कल्पना की है, वे ईश्वर को पूर्णतया जानते ही नहीं थे और न ही वे पूर्णत: निष्कपट व स्वार्थहीन थे, ऐसा आभास मिलता है। यदि वे वेदों को जानते होते तो उन्हें ईश्वर के सत्यस्वरूप का ज्ञान अवश्य होता और वे अवतारवाद की अज्ञानपूर्ण व मिथ्या कल्पना न करते ।

अवतार पर चर्चा करने से पूर्व ईश्वर के वैदिक व यथार्थ स्वरूप को जानना आवश्यक है । ईश्वर सत्य, चित्त व आनन्दस्वरूप, अनादि, अजन्मा, शरीर-नस-नाड़ी-बंधन-से-रहित, नित्य, अनन्त, अमर, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय और सृष्टि का रचयिता है । हर कार्य का कारण होता है । ईश्वर का यदि अवतार मानेंगे तो उसका स्वीकार्य कारण भी बताना ही होगा । अवतारवाद मानने वालों के पास ऐसा कोई ठोस कारण नहीं है जिससे ईश्वर के अवतार लेने का प्रयोजन सिद्ध हो सके । अवतारवाद के पोषक कहते हैं कि दुष्टों का दमन व हनन करने के लिए ईश्वर मनुष्य का जन्म लेता है ।

यह कथन हास्यस्पद ही लगता है । यह इसलिए कि जो ईश्वर अपनी अनन्त सामर्थ्य से निराकार रूप से इस सृष्टि व जड़-जंगम जगत का निर्माण करता है, क्या वह अपने द्वारा उत्पन्न रावण व कंस जैसे क्षुद्र प्राणियों को अपने अनन्त बल व शक्ति से धराशायी व नष्ट नहीं कर सकता ? यदि श्री रामचन्द्र जी का जन्म रावण को मारने के लिए ही हुआ था तो वह युवावस्था में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न होकर सीधे रावण के पास जाकर उसका वध कर देते और वहां के सभी धार्मिक लोगों को उपदेश देते कि मैंने रावण को इसके दुष्ट स्वभाव के कारण मारा है क्योंकि मैं स्वयं भी सर्वव्यापक रूप से ऐसा नहीं कर सकता था और न ही संसार का कोई मनुष्य ऐसा कर सकता था ।

ईश्वर या रामचन्द्र जी ने ऐसा नहीं किया और न रामायण के रचयिता वाल्मीकि जी ने ऐसा लिखा है, अत: यह मान्यता वाल्मीकि, ईश्वर व रामचन्द्रजी की नहीं है । देश काल व परिस्थितियों के अनुसार ही यह सब कार्य हुए हैं जैसे कि आजकल विश्व धरातल पर यत्र-तत्र हो रहे हैं । श्री रामचन्द्र जी एक राज परिवार में जन्में होने से एक राजा था । वैदिक राजा का दायित्व होता है कि वह वेद धर्म के अनुयायियों, ऋषि, मुनियों व विद्वानों की आतंकियों व दुष्टों से रक्षा करे। श्री रामचन्द्र जी ने वैदिक राजा होने का अपना कर्तव्य निभाया । रावण अपने बुरे कार्यों को करता रहा, उसने छोड़ा नहीं, अत: परिस्थितियों के अनुसार ही उसका वध हुआ । यह सारा वर्णन वाल्मीकि रामायण में उपलब्ध है । वाल्मीकि जी, श्री रामचन्द्र जी को अवतार नहीं मानते थे । यह मान्यता तो विगत दो से ढ़ाई सहस्र वर्ष पूर्व ही प्रचलित हुई है । यही स्थिति महाभारत में श्री कृष्ण जी की है । एक सर्वव्यापक व निराकार सत्ता जो असंख्य जीवों को मनुष्यादि जन्म देती है और उनका नियमन करती है, अब भी कर रही है, वह किसी एक जीवात्माधारी मनुष्य को मारने के लिए यदि स्वयं मनुष्य का जन्म लेती है, यह विजय नहीं पराजय है व युक्ति-तर्क से सिद्ध नहीं होती ।

यदि श्री रामचन्द्र जी को ईश्वर मान भी लें तो

सर्वशक्तिमान होने के कारण उन्हें न तो सुग्रीव, न हनुमान, न अंगद न अन्य महावीरों की आवश्यकता पड़ती । भारत व विश्व में केवल रावण और कंस दो ही क्रूर शासक नहीं हुए अपितु इन, इनके जैसे व इनसे भी अधिक क्रूर अमानुष शासक हुए हैं । परन्तु अवतार केवल दो ही महापुरुषों को माना जाता है । इससे भी अवतारवाद का सिद्धांत अप्रमाणिक सिद्ध होता है । क्या महाभारतकाल के बाद मानवीयता के शत्रुओं के हनन के लिए ईश्वर के अवतार की आवश्यकता नहीं थी ? यदि थी तो ईश्वर का अवतार क्यों नहीं हुआ ? ऐसे अमानुषों को ईश्वर ने अपने सर्वान्तर्यामी स्वरूप से ही उनकी जीवन ज्योति को बुझा दिया, यह सर्वज्ञात व सिद्ध है । अत: अतवारवाद प्रमाणों के अभाव में सत्य सिद्ध नहीं होता ।

हमारे देश में और वह भी केवल हिन्दुओं में ही अवातारवाद का सिद्धांत पाया जाता है जिसका प्राचीन साहित्य वेद व वैदिक साहित्य में कहीं कोई उल्लेख नहीं पाया जाता । हमें भी अपने पौराणिक परिवारों में बाल्यकाल से ही बताया गया कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी और योगेश्वर श्री कृष्ण जी ईश्वर थे । बचपन में जो बताया जाता है उस पर स्वत: विश्वास हो जाता है । युवावस्था में हम वेद व वैदिक साहित्य के संपर्क में आये और हमने महर्षि दयानन्द के विचारों को पढ़ा, समझा व जाना तथा अनेक विद्वानों के उपदेश व ग्रंथों को पढ़ा तो इस विषयक पूर्व का हमारा विश्वास अंधविश्वास सिद्ध हुआ ।

ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वदेशी है, अत: वह सिकुड़ कर एक अत्यंत सीमित आकार का एकदेशी पदार्थ नहीं बन सकता । यदि बनेगा तो वह ईश्वर नहीं जीवात्मा ही होगा । महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर विषयक प्रश्न करते हुए बताया है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है तो क्या वह दूसरा ईश्वर बना सकता है ? क्या वह स्वयं को नष्ट कर सकता ? इसका उत्तर देते हुए महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि सर्वशक्तिमान का अर्थ यह है कि वह अपने सभी कार्य अपने-आप, अकेले, बिना किसी अन्य की सहायता आदि के कर सकता है परन्तु वह सत्य व सत्य नियमों के विरुद्ध न कोई कार्य करता है और न कर सकता है । ईश्वर न तो दूसरा ईश्वर ही बना सकता है और न स्वयं को नष्ट ही कर सकता है । इसी प्रकार से वह सदैव ही अपने सत्यस्वरूप सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, अनादि, अजन्मा, नित्य, अनुत्पन्न, अविनाशी, अमर, अजर आदि स्वरूप में विद्यमान रहता है ।

अवतार लेना उसके स्वरूप, स्वभाव व सामर्थ्य में नहीं है और न संभव है । अत: वह कभी अवतार नहीं लेता । यदि ऐसा होता तो महाभारत काल के बाद उत्पन्न अल्प व स्वार्थ बुद्धि वालों से कहीं अधिक विद्वान, ज्ञानी, ऋषि व योगी महाभारत व उससे पूर्व काल रचित अपने वैदिक साहित्य में अवतारवाद का वर्णन अवश्य करते । लगभग साढ़े दस हज़ार मंत्रों वाले चार वेदों में भी इसका कहीं न कहीं उल्लेख अवश्य होता । और नहीं तो ईश्वर साक्षात्कार करने के ज्ञान के लिए रचे गये 'योगदर्शन' जिसमें ईश्वर प्राप्ति विषयक सभी साधनों का युक्ति प्रस्तुत की गयी है, ईश्वर के अवतार का भी अवश्य उल्लेख किया जाता। क्योंकि यह मिथ्या ज्ञान है, इसी कारण न वेद, न उपनिषद और न दर्शन आदि प्राचीन वैदिक ग्रंथों और न ही योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि ने इसका उल्लेख किया । वैदिक ज्ञान, युक्ति व तर्क के आधार पर केवल यही कहा जा सकता है कि श्री रामचन्द्र जी व योगेश्वर श्री कृष्ण जी आदि जो ऐतिहासक युगपुरुष हुए हैं, वे ईश्वर के अवतार न होकर अपने समय के महापुरुष, युगपुरुष, महामानव, महात्मा, व श्रेष्ठ पुरूष थे । गीता में स्वयं योगेश्वर कृष्ण जी कहते हैं कि 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृत्यस्य च' अर्थात जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु और जिसकी मृत्यु होती है उसका जन्म निश्चित होता है । इस आधार पर जन्म लेना व मृत्यु को प्राप्त होना और फिर जन्म लेना यह कार्य केवल जीवात्मा का होता है परमात्मा का नहीं । श्री कृष्ण जी का माता देवकी व पिता श्री वसुदेव जी से जन्म हुआ, श्री रामचन्द्र जी का भी माता कौशल्या और पिता दशरथ से जन्म हुआ था और इनकी मनुष्यों की ही तरह एक सौ व एक सौ पचास वर्ष की आयु में मृत्यु होने से यह सृष्टि को रचने व चलाने वाले परमात्मा न होकर एक श्रेष्ठ व परमश्रेष्ठ जीवात्मा ही सिद्ध होते हैं । ऐसे ही अन्य अवतार माने जाने वाले ऐतिहासिक महापुरुषों व देवियों के बारे में कहा जा सकता है ।

ईश्वर ईश्वर है जिसका कभी जन्म वा अवतार नहीं होता । जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु और पुनर्जन्म अवश्य होता है और वह मनुष्य वा जीवात्मा ही होता है ।

कोलकाता में क़याम के लिए उमदा रिहाइश का मर्कज़

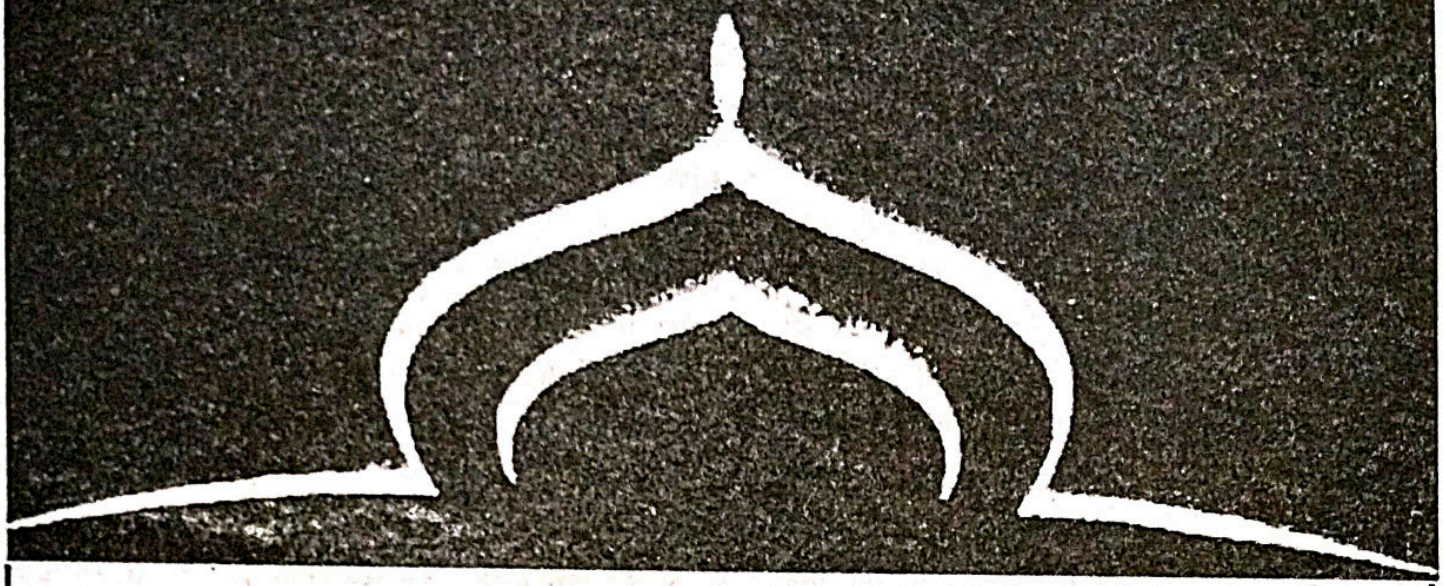

HOTEL AL-FALAH

Ph. : 033-22837901 , Cell : 9836015030
E-mail : hotelal_falah@hotmail.com

A/c Rooms & Non A/c Rooms
With
Attatch Bath Rooms

कोलकाता के शहर के दामन में (पार्क सर्कस) मुनासिब दामों पर रिहाइश का माकूल इन्तिज़ाम

एक बार ख़िदमत का मौक़ा ज़रूर दें।

83, Fazlul Haque Sarani, Kolkata - 700 017
WEST BENGAL

चुनावी राजनीति एकमात्र रास्ता नहीं

• अरुणा रॉय
• भंवर मेघवंशी

भारत में आन्दोलनों की राजनीतिक पद्धति का लंबा इतिहास रहा है । लोक सरोकारों के लिए प्रतिबद्ध व्यवस्था विरोधी संघर्षों के आलोक में देखा जाए तो आज़ादी की आन्दोलन अपने आप मे एक जन आन्दोलन था । गांधी जी ने आज़ादी के बाद भी सत्ता की राजनीति का हिस्सा बनने की अपेक्षा जनहितकारी आन्दोलन का ही हिस्सा बने रहना स्वीकार किया था । उन्होंने तो तत्कालीन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भी राजनीतिक दल का बाना त्याग कर एक सामाजिक सेवा का जन आन्दोलन बनने तक की सलाह दी थी, हालांकि उसे माना नहीं गया । विनोबा का भूदान आन्दोलन हो अथवा लोक स्वतंत्र्य की रक्षा के लिए लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा चलाया गया आपातकाल विरोधी आन्दोलन जन आन्दोलन के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुए । नब्बे के दशक के दौरान भारत में जन आन्दोलन ने पुन: अपनी ऐतिहासिक भूमिकाओं को निभाना शुरू किया तथा इसके बाद मुख्यधारा राजनीति और राजनीतिक विमर्श को जनता के संघर्षों, अभियानों, जन संगठनों व जन आन्दोलनों के मुद्दों ने मथना प्रारंभ किया, जो आज तक बदस्तूर जारी है ।

लोकतंत्र को लोगों के हित के लिए चलाने के लिए समय-समय पर देश के अलग-अलग हिस्सों में लोगों ने अपनी आवाज़ें उठायीं । आर्थिक उदारीकरण, भूमंडलीकरण और निजीकरण के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था को खोले जाने के बाद धीरे-धीरे 'राज्य' ने अपनी 'कल्याणकारी' भूमिका को सीमित कर दिया, जिससे कई उत्पीड़ित व सदियों से वंचित समुदाय पूरी तरह हाशिए पर पहुंच गये ।

लोकतंत्र को लोगों के हित के लिए चलाने के लिए समय-समय पर देश के अलग-अलग हिस्सों में लोगों ने अपनी आवाज़ें उठायीं । आर्थिक उदारीकरण, भूमंडलीकरण और निजीकरण के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था को खोले जाने के बाद धीरे-धीरे 'राज्य' ने अपनी 'कल्याणकारी' भूमिका को सीमित कर दिया, जिससे कई उत्पीड़ित व सदियों से वंचित समुदाय पूरी तरह हाशिए पर पहुंच गये । मुख्यधारा की राजनीति से लोगों के मुद्दे और जनता की आवाज़ें ग़ायब होती गयीं । एक तरफ़ वैश्विक पूंजी ने कथित समृद्धि की चकाचौंध पैदा की तो दूसरी तरफ़ आम भारतीयों में दीनता का दारुणता । दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक और महिलाएं कथित विकास की मुख्यधारा की मार को सहन नहीं कर पाएं । भूमंडलीकरण जिसे अक्सर आर्थिक खुलापन कहा गया, एक ही देश में दो देश निर्मित कर दिये । आज यह सर्वविदित तथ्य है कि हमारा देश स्पष्ट रूप से दो भागों में बंटा हुआ है । एक निरंतर समृद्ध होता इंडिया है, दूसरा लगातार हाशिए पर धकेला जा रहा भारत है । शायद भारत की यह नियमित हो गयी है कि वह इंडिया के रहमोकरम पर ज़िंदा रहे या विलुप्त हो जाए । ऐसे 'भारत के लोग' जिन्हें मज़दूर, किसान, हमाल, मछुआरे, दलित, आदिवासी कुछ भी कह लीजिए, उनके हक़ में खड़े होने तथा उनकी पीड़ाओं को उजागर करने के काम में जन आन्दोलन में महमी भूमिका निभायी है । डॉक्टर बाबा आढव ने महाराष्ट्र में हमलों के लिए 'हमाल पंचायत' बनाकर सराहनीय काम किया । वे अब बुज़ुर्गों के गरिमापूर्ण जीवन के लिए वृद्धावस्था में सब बुजुर्गों को पेंशन मिले, पेंशन परिषद के ज़रिये चल रहे आन्दोलन के केन्द्र में है । बड़े बांधों के विरुद्ध चले नर्मदा बचाओ आन्दोलन ने विकास की पूरी बहस को नया मोड़ दिया तथा विस्थापन व पुनर्वास के मुद्दे को पूरी शिद्दत से

(शेष पृष्ठ 29 पर)

भारत की बीमारी

■ दिलीप मंडल

ब्राह्मणवाद और अंबेडकरवाद भारतीय परंपरा के दो अलग ध्रुव हैं। इनमें से एक घटेगा, तो दूसरा बढ़ेगा। एक मिटेगा, तो दूसरा बचेगा। अंबेडकर की की नज़र में आर॰एस॰एस॰ जिन लोगों का संगठन है, वे बीमार हैं और उनकी बीमारी बाक़ी लोगों के लिए ख़तरा है।

राष्ट्र निर्माता के रूप में बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर की विधिवत स्थापना का कार्य 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाने की राजपत्र में की गयी घोषणा के साथ संपन्न हुआ। संविधान दिवस संबंधी भारत सरकार के गजट में सिर्फ़ एक ही शख़्सियत का नाम है और वह नाम स्वाभाविक रूप से बाबा साहब का है। बाबा साहब को अपनाने की बी॰जे॰पी॰ और संघ की कोशिशों का भी यह चरम रूप है। लेकिन क्या इस तरह के अगरबत्तीवाद के ज़रिये बाबा साहब को कोई संगठन आत्मसात कर सकता है ?

वे इस सवाल का जवाब ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं कि भारत में कभी क्रांति क्यों नहीं हुई। वे बताते हैं कि कोई भी आदमी आर्थिक बराबरी लाने की क्रांति में तब तक शामिल नहीं होगा, जब तक उसे यक़ीन न हो जाए कि क्रांति के बाद उसके साथ बराबरी का व्यवहार और जाति के आधार पर उसके साथ भेदभाव नहीं होगा। इस भेदभाव के रहते भारत के ग़रीब कभी एकजुट नहीं हो सकते।

इस संदेह का कारण मुझे अंबेडकरी विचारों और उनके साहित्य में नज़र आता है।

इस बात की पुष्टि के लिए मैं बाबा साहब की सिर्फ़ एक किताब एनिहिलेशन ऑफ़ कास्ट का संदर्भ ले रहा हूं। याद रहे कि यह सिर्फ़ एक किताब है। पूरा अंबेडकरी साहित्य ऐसे लेखन से भरा पड़ा है, जो संघ को लगातार असहज बनाएगा। एनिहिलेशन ऑफ़ कास्ट पहली बार 1936 में छपी थी। दरअस्ल यह एक भाषण है, जिसे बाबा साहब ने लाहौर के जात-पात तोड़क मंडल के 1936 के सालाना अधिवेशन के लिए तैयार किया था। लेकिन इस लिखे भाषण को पढ़कर जात-पात तोड़क मंडल ने पहले तो कई आपत्तियां जतायीं और फिर कार्यक्रम ही रद्द कर दिया। इस भाषण को ही बाद में एनिहिलेशन ऑफ़ कास्ट नाम से छापा गया।

दूसरे संस्करण की भूमिका में बाबा साहब इस किताब का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि 'अगर मैं हिन्दुओं को यह समझा पाया कि वे भारत के बीमार लोग हैं और उनकी बीमारी दूसरे भारतीय लोगों के स्वास्थ्य और उनकी ख़ुशी के लिए ख़तरा है, तो मैं अपने काम से संतुष्ट हो पाऊंगा।''

ज़ाहिर है कि बाबा साहब के लिए यह किताब एक डॉक्टर और मरीज़ यानी हिन्दुओं के बीच का संवाद है। इसमें ध्यान रखने की बात है कि जो मरीज़ है यानी जो भारत का हिन्दू है, उसे या तो मालूम ही नहीं है कि वह बीमार है या फिर वह स्वस्थ होने का नाटक कर रहा है और किसी भी हालत में वह यह मानने को तैयार नहीं है कि वह बीमार है। बाबा साहब की चिंता यह है कि वह बीमार आदमी दूसरे लोगों के लिए ख़तरा बना हुआ है। संघ उसी बीमार आदमी का प्रतिनिधि संगठन होने का दावा करता है। वैसे यह बीमार आदमी कहीं भी हो सकता है। कांग्रेस से लेकर समाजवादी और वामपंथी कम्युनिस्ट तक उसके कई रूप हो सकते हैं। लेकिन वह जहां भी है, बीमार है और बाक़ियों के लिए दुख का कारण है।

बीमार न होने का बहाना करता हुआ हिन्दू कहता है कि वह जात-पात नहीं मानता। लेकिन बाबा साहब की नज़र

में ऐसा कहना नाकाफ़ी है । वे इस सवाल का जवाब ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं कि भारत में कभी क्रांति क्यों नहीं हुई । वे बताते हैं कि कोई भी आदमी आर्थिक बराबरी लाने की क्रांति में तब तक शामिल नहीं होगा, जब तक उसे यक़ीन न हो जाए कि क्रांति के बाद उसके साथ बराबरी का व्यवहार और जाति के आधार पर उसके साथ भेदभाव नहीं होगा । इस भेदभाव के रहते भारत के ग़रीब कभी एकजुट नहीं हो सकते ।

वे कहते हैं कि आप चाहें जो भी करें, जिस भी दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश करें, जातिवाद का दैत्य आपका रास्ता रोके खड़ा मिलेगा । इस राक्षस को मारे बिना आप राजनीतिक या आर्थिक सुधार नहीं करते । डॉक्टर अंबेडकर की यह पहली दवा है । क्या संघ इस कड़वी दवा को पीने के लिए तैयार है ? जातिवाद के ख़ात्मे की दिशा में संघ ने पहला क़दम नहीं बढ़ाया । क्या वह आगे ऐसा करेगा ?

डॉ॰ अंबेडकर के अनुसार जाति के भारतीयों की आर्थिक क्षमता को कुंद किया है । इससे नस्ल बेहतर होने की बात भी फ़र्ज़ी सिद्ध हुई है क्योंकि नस्लीय गुणों के लिहाज़ से भारतीय लोग सी 3 श्रेणी के हैं और 95 प्रतिशत भारतीय लोगों की शारीरिक योग्यता ऐसे नहीं है कि वे ब्रिटिश फौज में भर्ती हो सकें । बाबा साहब आगे लिखते हैं कि हिन्दू समाज जैसी कोई चीज़ है ही नहीं । हिन्दू मतलब दरअस्ल जातियों का जमावड़ा है । इसके बाद वे एक बेहद गंभीर बात बोलते हैं कि एक जाति को दूसरी जाति से जुड़ाव का संबंध तभी महसूस होता है, जब हिन्दू-मुसलमान दंगे हों । संघ के मुस्लिम विरोध के सूत्र बाबा साहब की इस बात में छिपे हैं । वह जाति को बनाये रखते हुए हिन्दुओं को एकजुट देखना चाहता है, इसलिए हमेशा मुसलमानों का विरोध करता रहता है । दंगों को छोड़कर बाक़ी समय में हिन्दू अपनी जाति के साथ खाता है और जाति में ही शादी करता है ।

वे बताते हैं कि कोई भी आदमी आर्थिक बराबरी लाने की क्रांति के बाद उसके साथ बराबरी का व्यवहार और जाति के आधार पर उसके साथ भेदभाव नहीं होगा ।

डॉ॰ अंबेडकर बीमार हिन्दू की नब्ज़ पर हाथ रखकर कहते हैं कि आदर्श हिन्दू उस चूहे की तरह है जो अपने बिल में ही रहता है और दूसरों के संपर्क में आने से इन्कार करता है । इस किताब में बाबा साहब साफ़ शब्दों में कहते हैं कि हिन्दू एक राष्ट्र नहीं हो सकते । क्या संघ के लिए ऐसे अंबेडकर को आत्मसातकर पाना मुमकिन होगा ।

बाबा साहब यह भी कहते हैं कि ब्राह्मण अपने अन्दर भी जातिवाद पर सख़्ती से अमल करते हैं । वे महाराष्ट्र के गोलक ब्राह्मण, देवरूखा ब्राह्मण, चितपावन ब्राह्मण और भी तरह के ब्राह्मणों का ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि उनमें असामाजिक भावना उतने ही है, जितनी की ब्राह्मणों और ग़ैर-ब्राह्मणों के बीच है । वे मरीज़ की पड़ताल करके बताते हैं कि जातियां एक-दूसरे से संघर्षरत समूह हैं, जो सिर्फ़ अपने लिए और अपने स्वार्थ के लिए जीती हैं । वे यह भी बताते हैं कि जातियों ने अपने पुराने झगड़े अब तक नहीं भूलाए हैं । ग़ैर-ब्राह्मण इस बात को याद रखता है कि किस तरह ब्राह्मणों के पूर्वजों ने शिवाजी का अपमान किया था । आज का कायस्थ यह नहीं भूलता कि आज के ब्राह्मणों के पूर्वजों ने उनके पूर्वजों को किस तरह नीचा दिखाया था ।

संघ के संगठन शुद्धि का अभियान चला रहे हैं । बाबा साहब का मानना था कि हिन्दुओं के लिए यह करना संभव नहीं है । जाति और शुद्धिकरण अभियान साथ-साथ नहीं चल सकते । इसका कारण वे यह मानते हैं कि शुद्धि के बाद बाहर से आये व्यक्ति को किस जाति में रखा जाएगा, इसका जवाब किसी हिन्दू के पास नहीं है । जाति में होने के लिए जाति में पैदा होना ज़रूरी है । यह क्लब नहीं है कि कोई भी मेंबर बन जाए । वे स्पष्ट कहते हैं कि धर्म परिवर्तन करके हिन्दू बनना संभव नहीं है क्योंकि ऐसे लोगों के लिए हिन्दू धर्म में कोई जगह नहीं है । क्या भारत का बीमार यानी हिन्दू और कथित रूप से उनका संगठन आर॰एस॰एस॰ बाबा साहब की बात मानकर शुद्धिकरण की बेतुका कोशिशों को रोक देगा ?

हिन्दू के नाम पर राजनीति करने वाले संगठन यह कहते नहीं थकते कि हिन्दू उदार होते हैं । बाबा साहब इस पाखंड को नहीं मानते । उनकी राय में मौक़ा मिलने पर वे बेहद अनुदार हो सकते हैं और अगर वे किसी ख़ास तौक़े पर उदार नज़र आते हैं, तो इसकी वजह यह होती है कि या तो वे इतने कमज़ोर होते हैं कि विरोध नहीं कर सकते या फिर वे विरोध

करने की ज़रूरत महसूस नहीं करते ।

बाबा साहब इस किताब में ग़ैर-हिन्दुओं के जातिवाद की भी चर्चा करते हैं, लेकिन इसे वे हिन्दुओं के जातिवाद से अलग मानते हैं । वे लिखते हैं कि ग़ैर-हिन्दुओं के जातिवाद को धार्मिक मान्यता नहीं है । लेकिन हिन्दुओं के जातिवाद को धार्मिक मान्यता है । ग़ैर-हिन्दुओं का जातिवाद एक सामाजिक व्यवहार है, कोई पवित्र विचार नहीं है । उन्होंने जाति को पैदा नहीं किया । अगर हिन्दू अपनी जाति को छोड़ने की कोशश करेगा, तो उनका धर्म उसे ऐसा करने नहीं देगा । वे हिन्दुओं से कहते हैं कि इस भ्रम में न रहें कि दूसरे धर्मों में भी जातिवाद है । वे हिन्दू श्रेष्ठता के राधाकृष्णन के तर्क को ख़ारिज करते हुए कहते हैं कि हिन्दू धर्म बेशक टिका रहा, लेकिन उसका जीवन लगातार हारने की कहानी है । वे कहते हैं कि अगर आप जाति के बुनियाद पर कुछ भी खड़ा करने की कोशिश करेंगे, तो उसमें दरार आना तय है ।

अपने न दिये गये भाषण के आख़िरी हिस्से में बाबा साहब बताते है। कि हिन्दू व्यक्ति जाति को इसलिए नहीं मानता कि वह अमानवीय है या उसका दिमाग़ ख़राब है । वह जाति को इसलिए मानता है कि वह बेहद धार्मिक है । जाति को मानकर वे ग़लती नहीं कर रहे हैं । उनके धर्म ने उन्हें यही सिखाया है । उनका धर्म ग़लत है, जहां से जाति का विचार आता है । इसलिए अगर कोई हिन्दू जाति से लड़ना चाहता है तो उसे अपने धार्मिक ग्रंथों से टकराना होगा । बाबा साहब भारत के मरीज़ को उपचार बताते हैं कि शास्त्रों और वेदों की सत्ता को नष्ट करो । यह कहने का कोई मतलब नहीं है कि शास्त्रों का मतलब वह नहीं है, जो लोग समझ रहे हैं । दरअस्ल शास्त्रों का वही मतलब है जो लोग समझ रहे हैं और जिस पर वे अमल कर रहे हैं । क्या संघ हिन्दू धर्मशास्त्रों और वेदों को नष्ट करने के लिए तैयार है ?

इस भाषण में वे पहली बार बताते हैं कि वे हिन्दू बने रहना नहीं चाहते । संघ को बाबा साहब को अपनाने का पाखंड करते हुए, यह सब ध्यान में रखना होगा । क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बाबा साहब को अपना सकता है ? बेशक । लेकिन ऐसा करने के बाद फिर वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नहीं रह जाएगा ।

चुनावी राजनीति एकमात्र...

(पृष्ठ 26 का शेष)

उठाया । राजस्थान के ग्रामीण मज़दूर किसानों ने ब्यावर के चांग गेट से सरकारी काग़ज़ों की फोटोकॉपी लेने की मांग उठायी, जो अंतत: लंबे संघर्ष के बाद आज सूचना का जन अधिकार का क़ानून बन पाया है । देश भर के सैकड़ों जन समूहों ने 'काम का अधिकार' पाने के लिए लंबा आन्दोलन चलाया, नतीजतन कनरेगा जैसा क़ानून पास हुआ और आज वह भयंकर भ्रष्टाचार के बावजूद ग्रामीण भारत की जीवन रेखा बना हुआ है ।

पंचायती राज उपबंध अधिनियम हो अथवा परंपरागत वन निवासियों को भूमि देने का वन अधिकार मान्यता अधिनियम, शिक्षा का अधिकार क़ानून हो अथवा अन्य कई सारे जनहितकारी क़ानून, ये सभी जन आन्दोलन के निरंतर संघर्षों की बदौलत ही संभव हो पाये हैं । आज भी जन आन्दोलन देश के राजनीतिक विमर्श को अपने कई मुद्दों के ज़रिये मथे हुए हैं । खाद्य सुरक्षा बिल, लक्षित सांप्रदायिक हिंसा क़ानून, शिकायत निवारण क़ानून, व्हिसल ब्लोअर बिल, बीज अधिनियम इत्यादि बहुत से अधिनियम अभी भी देश की औपचारिकता संसद में पारित होने की प्रतीक्षा में अटके हुए हैं ।

संसद कभी भ्रष्टाचार के एक मुद्दे पर तो कभी एफ॰डी॰आई॰ पर गतिरोध का शिकार हो रही है, जिस संसद को जनता के हित में क़ानून बनाने की ज़िम्मेदारी दी गयी थी, वह हंगामों के चलते चल नहीं पा रही है और जनता ठगी-सी महसूस कर रही है । यह भी देखा गया कि जब संसद को वैश्विक पूंजी के हित में क़ानून बनाने होते हैं तो कुछ भी मिनटों में बड़े फ़ैसले कर लिए जाते हैं, पक्ष-विपक्ष आदि एक ही भाषा में बोलने लगते हैं मगर जैसे ही हाशिए पर धकेल दिये गये तबक़ों की भागीदारी का सवाल उठता है तो मुद्दों में पेंच फंसा दिया जाता है । देश की आधी आबादी के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित कराने के लिए लाए गये 33 प्रतिशत भागीदारी वाले महिला आरक्षण बिल का अटका रह जाना इसी दुर्भाग्य की ओर इशारा करता है ।

'आधार' पर कुछ सवाल

(पृष्ठ 8 का शेष)

ने हार्वाड लॉ रिव्यू (1890) में एक ऐतिहासिक लेख लिखा–'द राइट टू प्राइवेसी'। निजता के अधिकार से संबंधित सैकड़ों मामले अमेरिकी अदालतों के समक्ष आये । पहली बार इस मामले में न्यूयॉर्क ऐपेलेट कोर्ट ने रॉबर्सन बनाम रोचेस्टर फोल्डिंग बॉक्स कम्पनी (1902) में इस पर विचार किया और प्रतिवादी को इस अधिकार के उल्लंघन के लिए दोषी क़रार दिया । फिर ग्रिसवर्ल्ड मामले (1965) में जस्टिस डगलस ने कहा कि भले ही बिल ऑफ़ राइट्स में इस अधिकार का स्पष्ट उल्लेख नहीं है, यह अन्य अधिकारों में निहित है । अमेरिका में 'आधार' नहीं पाया जाता । भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने आर॰ बनाम गोविंद (1975) विवाद में अमेरिकी अदालत के स्टैंड का हवाला दिया था । यह सच है कि सार्वजनिक हित महत्वपूर्ण होते हैं, परन्तु 'आधार' के मामले में पुख़्ता तौर पर 'सार्वजनिक हित' सामने नहीं आ सका है । आकड़ों आदि के दुरुपयोग का संशय अलग से बना हुआ है ।

इसके विवरण के दुरुपयोग को लेकर शंकाएं भी सामने आती रही हैं । नन्दन नीलेकण के अमेरिकी उद्योगपतियों से गहरे रिश्ते जग-ज़ाहिर हैं, हालांकि अब उनका पहचान प्राधिकरण से संबंध नहीं है, फिर भी वे उसके बारे में सब कुछ जानते हैं । इस प्राधिकरण ने पहचान-पत्र बनाने और डाटा संग्रहण के लिए ख़ासकर तीन कंपनियों- एल-1 आईडेंटिटी सोल्यूशन, एसेंचर और महेंद्रा सत्यम-मोर्फो को भी लगाया है । इन कंपनियों के बड़े अधिकारियों में ऐसे लोग भी हैं, जिनके अमेरिकी ख़ुफ़िया एजेंसी सी॰आई॰ए॰ और अन्य सैन्य संगठनों से संबंध हैं । कंपनी बोर्ड में जार्ज टेंनेट भी हैं, जो सी॰आई॰ए॰ के पूर्व निदेशक हैं । ये कंपनियां भारतीय नागरिकों के आंकड़ों का मनचाहा इस्तेमाल कर सकती हैं । आधार परियोजना दुनिया की सबसे बड़ी बायोमीट्रिक संग्रहण और पहचान परियोजना है, जिसमें इसके स्वामित्व, प्रौद्योगिकी और निजता से जुड़े ख़तरे शामिल हैं । पहले एक संसदीय समिति कह चुकी है कि आधार परियोजना में उद्देश्य की स्पष्टता का अभाव है और अपने क्रियान्वयन में यह दिशाहीन है । आधार क़ानून में भी स्पष्टता का घोर अभाव है । जहां तक आधार की विश्वसनीयता का संबंध है, गाय, कुत्ता आदि के भी आधार कार्ड बन चुके हैं । हनुमान जी का भी आधार बना है । एक आदमी के दो आधार कार्ड बनाए जा चुके हैं और कई ऐसे देशवासी हैं, जिनके फिंगर प्रिंट न उभरने के कारण आधार कार्ड नहीं बन पाए हैं और वे सरकारी दफ़्तरों के चक्कर लगाने के लिए विवश हैं । उम्रदराज़ लोग फिंगर प्रिन्ट के न आने से आधार कार्ड की सुविधा से वंचित हैं और सभी को डर सताने लगा है कि कहीं वोट देने समेत अन्य अधिकारों और सुविधाओं से वंचित न हो जाएं । बहराइच के मुहल्ला बख्शीपुरा निवासी पं. बागीश पाल ने बताया कि मतदाता परिचय पत्र के लिये फॉर्म भरकर फिंगर प्रिंट देने गये तो मशीन पर फिंगर प्रिंट ही नहीं आया और उनको बैरंग वापस लौटना पड़ा । इस मुहल्ले के ही बड़ी संख्या में 65 से 85 वर्ष के उम्र के लोग आधार कार्ड की सुविधा से वंचित हैं । इसके अलावा मुहल्ला मीराखेलपुरा निवासी सेना से रिटायर्ड बनवारी लाल (65) ने बताया कि फॉर्म भरकर आधार कार्ड बनवाने का उपक्रम किया तो फिंगर प्रिंट न आने की बात कहकर कैंप से लौटा दिया गया । यही हाल उनकी मां फूलमती (85) के साथ भी हुआ । इतना ही नहीं, नगर समेत समूचे ज़िले में बड़ी संख्या में उम्रदराज़ लोग फिंगर प्रिंट के न आने से आधार कार्ड जैसी महत्वपूर्ण सुविधा से वंचित हैं । यह परेशानी उत्तर प्रदेश में ही नहीं, दूसरे राज्यों में भी सामने आ रही है । आधार कार्ड बनाने के लिए फिंगर प्रिंट और आंखों की पुतलियों की भी स्कैनिंग की जाती है । उम्रदराज़ लोगों के हाथ घिस जाने की वजह से फिंगर प्रिंट नहीं आ पा रहे हैं । अब 'आधार' को धन विधेयक द्वारा क़ानूनी बनाया गया है । धन विधेयक होने का दावा विधेयक की धारा 7 में किया गया है, जिसमें कहा गया है कि विधेयक सरकार को आधार के प्रयोग द्वारा अनुदान बांटने के लिए अधिकृत करता है, लेकिन विधेयक की धारा 57 यह तय करती है कि बायोमेट्रिक आधार पहचान संख्या का प्रयोग अनुदान बांटने के अलावा किसी अन्य काम के लिए भी किया जा सकता है । इससे स्पष्ट होता है कि यह विधेयक धन विधेयक की श्रेणी के योग्य नहीं है । इसे ज़बरदस्ती धन विधेयक बनाकर पारित कराया गया !

कोई लौटा दे मेरे बुरे दिन !

■ राम सहाय वर्मा

गली-गली, गांव-गांव, हर क़स्बे तथा प्रत्येक शहार में तनावमुक्त और प्रसन्न होकर लोगों की भीड़ तेज़ी से भाग रही है । लगता है कि वह अच्छे दिनों के स्वागत के लिये बेचैन हैं । अच्छे दिन ऊपर से तो चल दिये हैं, लेकिन शायद रास्ते में कहीं भटक गये हैं । भला इतनी समस्याओं, तइने ख़तरों औरप इतनी निराशाओं के बीच आदमी तनावहीन कैसे रह सकता है ? राजनीतिज्ञों के ग़ैर-ज़िम्मेदारान वक्तव्य, सामूहिक हत्या या आत्महत्या के समाचार, चोरी बलात्कार की ख़बरें पढ़कर आम आदमी तनाव मुक्त होकर मुस्कराते तो समझो यह अच्छे दिनों का आग़ाज़ है । ये ख़ुशख़बरी सुनकर मैं भी फूलां नहीं समा रहा । मैं उस गधे की तरह दिन प्रतिदिन मोटा हो रहा हूं, जो गर्मी के मौसम में ख़ाली मैदान देखकर यह सोच कर मोटा हो जाता है कि उसने मैदान की सारी घास खा ली है ।

सब्ज़ी वालों ने सब्ज़ी, दूकानदारों ने दाल आदि अपनी सभी चीज़ें कर दी हैं । अगर उनसे दाम बढ़ाने का कारण पूछो तो वे खुश होकर कहते हैं–बाबू जी, अब क्यों घबराते हो ? एक दिन मैंने एक किसान से पूछा कि अच्छे दिन आ गये क्या ? तो वह बोला–'नेता लोग तो यही कह रहे हैं पर पता नहीं । मैं तो आसमान की ओर टकटकी लगाकर रोज़ देखता हूं, पर मुझे तो कहीं कुछ नज़र नहीं आते । ज़मीन पर बमुश्किल पानी के दो-चार छींटे पड़े होंगे उससे अच्छे दिन कैसे आएंगे ? हालांकि वो ज़मीन भी अब अपनी नहीं रही ।

वह हमारे क़ब्ज़े में जरूर है, लेकिन उस पर सरकार की वक्र दृष्टि लगी हुई है । यहां सरकार नाना प्रकार के विकास करने जा रही है । सरकार कभी हवाई अड्डा तो कभी कारख़ाने तो कभी बुलट ट्रेन चालू कर हमारे विकास के नाम पर ज़मीन हड़पने का षड्यंत्र रच रही है ।' मैंने कहा 'ये तो अच्छी बात है कि तुम्हारी तथा तुम्हारी ज़मीन की क़ीस्मत बदल जाएगी । जब इसके ऊपर से हवाई जहाज़ और बुलेट ट्रेन दौड़ेंगी, तो तुम्हारी सीना छप्पन इंच चौड़ा हो जाएगा । समझो अब तुम्हारे अच्छे दिन आने वाले हैं । जहां तुम इस ज़मीन पर खाद-पानी बीज के अभाव में कुछ ख़ास पैदा नहीं कर पाते, नाक तक क़र्ज़ में डूबे हुए हो अब इसमें उद्योगपति अपने तरह-तरह के उद्योग लगाएंगे । सरकार देश का विकास अब तुम्हारी ज़मीन से ही करना चाहती है । समझो अब तुम्हारे अच्छे दिन चुनाव के लेकिन ये न भूलना कि उद्योगपतियों और व्यावसायियों द्वारा चुनाव के लिए दिया गया चंदा चुनाव के बाद वसूल कर लिया जाता है । अपनी पसंद की सरकार आये तो भी और न आये तो भी इसका ख़ामियाज़ा तो हमें भुगतना ही पड़ता है ।

कोई इनफ्लेशन बढ़ने का रोना रोते हैं तो कोई महंगाई' का मर्सिया पढ़ते हैं । उन्हें नहीं पता कि उतार-चढ़ाव तो लगे रहते हैं । ये तो आर्थिक क्षेत्र की वैसी ही प्रक्रिया है जैसे व्यक्ति की ज़िन्दगी में खांसी-ज़ुकाम । क़ीमतें बढ़ना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है । हमें खुश होना चाहिए कि न्यूटन के महान सिद्धांत के अनुसार जो चीज़ ऊपर है, उसका नीचे आना लाज़िमी है । यह बात अलग है कि रोज़मर्रा की चीज़ें जैसे आटा, दाल, नमक, तेल इस उसूल से अनजान हैं, फिर भी उनका इस सिद्धांत से परे रहना नामुमकिन है । वैसे भी देश के विकास के सफ़र में क़ीमतों की इस घटा बढ़ी की अहमियत क्या है । यह तो सिर्फ़ आंकड़ों की बाज़ीगरी है । आंकड़ों की माया है । नज़रों काधोखा है । छलावा है । आलू-प्याज की क़ीमत अगर थोड़ी बढ़ भी गयी तो उससे आम आदमी के जीवन में क्या फ़र्क़ पड़ता है ? क्षेत्र में हवाई अड्डा, बुलैट ट्रेन व बड़े-बड़े कारख़ाने देखकर जीवन का भरपूर लुत्फ़ उठाने को मिलेगा । इसके अलावा सेलफ़ोन, एल०ई०डी०, कंप्यूटर, साउंड सिस्टम, वाई-फाई, ए०सी०, फ्रिज जैसी बुनियादी ज़रूरतों की उपलब्धता दिनोंदिन बढ़ रही है । उनके दाम तो कम हो ही रहे हैं । जब गांव-गांव, घर-घर इंटरनेट व वाई-फाई होगा, तो किसान और मज़दूर को भले ही भरपेट रोटी न मिले, लेकिन इन चीज़ों से उनकी ज़िन्दगी की गुणवत्ता में कितना सुधार आएगा । फिर अच्छे दिन आकर

ही रहेंगे ।

हमारा देश कभी सोने की चिड़िया रहा होगा । आज तो ये सोने की खान है । सचमुच हमारी धरती सोना-चांदी, हीरा-मोती उगल रही है । समैटने वाले दोनों हाथ से समेट रहे हैं । जो ग़रीबी रेखा के नीचे जी रहे हैं वे बेबसी के आंसू बहा रहे हैं । वे मूर्ख हैं । वे उन कामों को क्यों नहीं करते जिन्हें बड़े लोग करते हैं । सरकार चाहती है कि ग़रीब को भी खाने का मौक़ा मिले । लेकिन वह तभी संभव है ज़ब वह दाल-रोटी खाना छोड़ दे । खाये तो वह केवल रिश्वत व काला धन । क्या रखा है सूखी रोटियां तोड़ने में ?

किसान व ग़रीब मज़दूर देश के विकास में सबसे बड़े अवरोधक हैं । वे हमेशा दाल और प्याज का ही रोना रोते रहते हैं । अब आप ही बताएं कि सरकार बुलेट ट्रेन, वाई-फाई आदि को उपलब्ध कराये कि दाल, प्याज़ में ही उलझी रहे । वह ग़रीब मज़दूरों की समस्याओं में उलझी रहे कि वे बड़े आदमियों की सुख-सुविधाओं और विलासिता की तरफ़ देखे । ग़रीब मज़दूरों की तो छोड़ो, जो दीन-हीन बनाये ही गये हैं उनके स्तर को सुधारने का सरकार को क्या अधिकार है ? आप भले ही चिल्लाते रहें कि जिस प्रकार सरकार ने ग़रीबों की तरफ़ से अपने हाथ खींच लिए हैं, उसी प्रकार प्याज़ और दाल ने भी ग़रीब मज़दूरों का साथ छोड़ दिया है, इससे सरकार को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ।

दाल के हाल जानकर मैं तो क्या दाल खुद आवाक है । उसने कभी यह नहीं सोचा होगा कि झोंपड़ी में निवास करने वाली कभी पांच सितारा होटल तक पहुंचेगी । पेट्रोल, तेल, चीनी, चावल इनमें से कोई होता, तो समझ लेते थे । इस बार दाल ने बाज़ी मार ली । दुनिया की सारी महंगाई एक तरफ़ और ग़रीब की थाली की दाल एक तरफ़ । पहले तो थाली में दिखती ही नहीं । अगर सुबह दिख जाए तो शाम का नदारद । बीवी अलग भुनभुनाती है 'इन्हें तो बस दाल चाहिए । मैं न रही तो चलेगा, पर दाल हो ।' लेकिन बीवी को पता नहीं कि घर में दाल पहले आयी थी और बीवी बाद में । मैं तो जन्म से ही दाल का शौक़ीन रहा हूं । बचपन में दाल का पानी पीता था । बाद में दाल खाने लगा । मुफ़लिसी में भी दाल ने साथ नहीं छोड़ा । अब दाल हमारी पहुंच से काफ़ी दूर चली गयी है । देश के निरंतर विकास के कारण दाल को सरकार ने सूखा मेवा घोषित कर दिया है । एक बार अस्पताल में जब हमें भर्ती होना पड़ा था, तो वहां हमारे शुभचिंतक जलेबी, मिठाई, फल वग़ैरह लेकर आते थे । लेकिन डॉक्टर ने हमें सिवाय दाल के पानी के अलावा अन्य किसी चीज़ से हाथ भी नहीं लगाने दिया । अब अस्पताल में दाल ग़ायब है । डॉक्टर दाल के अलावा अब कुछ भी खाने को बोल देता हैं ।

अब देखते ही देखते दाल ग़ायब हो गयी । निश्चित ही इसमें पड़ोसी देश की साज़िश है । पता नहीं कौन चुरा ले गया । ग़रीब-मज़दूरों के मुंह का निवाला कौन छीन ले गया ? एक दिन दाल को पैदा करने वाला किसान मिल गया । मैंने उसे बधाई दी । 'बरख़ुरदार, महंगाई की इस दौड़ में आपने बाजी मार ली । आपकी दाल दो सौ रुपये पर पहुंच गयी है । अब तो खुश हो जाओ ।' किसान बोला-'बाबू जी, उसमें पचास रुपये किलो के हिसाब से भी अगर किसान को मिल जाते तो फिर किसान को आत्महत्या के लिए विवश न होना पड़ता ।' मैं सोचने लगा कि मेरे जैसे सामान्य आदमी की जीवन रेखा दाल-रोटी हैं । इसमें दाल छिन गयी है । बस रोटी बची है, वह भी भरपेट नहीं मिलती । अब चाहे घर हो यवा होटल शादी समारोह हो या अन्य कोई फंक्शन हर जगह दाल नदारद । एक बार भूल से एक होटल में चला गया । मैंने वहां आधी प्लेट तड़के वाली दाल मांग ली । बैरा छूटते ही बोला-अगर आप इनकमटैक्स भरते हों तो अपना पैन नम्बर दीजिए । मैंने कहा क्या मतलब ? बैरा बोला-चौंकिये नहीं जनाब ! हमें ऐसे ऊपर से आदेश हैं । बिना पैन कार्ड के दाल खाना तो दूर आप दाल के दर्शन भी नहीं कर सकते ।

मेरा मानना है कि उस महापुरुष को 'भारत रत्न' की उपाधि से नवाज़ा जाना चाहिए जिन्होंने दाल जैसी साधारण वस्तु को इस मक़ाम तक पहुंचा दिया । आशा है दाल के अलावा वे अन्य चीज़ें भी इस मुक़ाम तक लाकर छोड़ेंगे, तभी तो देश का विकास होकर अच्छे दिन आएंगे । मुझ जैसों की थाली में दाल-रोटी रहे या न रहे उससे क्या फ़र्क़ पड़ता है । लेकिन इससे सरकार के विकास में यदि इज़ाफ़ा होता है, तो मैं दाल-रोटी से त्यागपत्र देने सहर्ष तैयार हूं । हालांकि भूख से मरने का हमें अनुभव नहीं है । अलबत्ता भूख का कष्ट हमें भी हुआ है । देश के विकास की ख़ातिर हमें अपनी आत्मा से संबंध विच्छेद करना पड़े, तो इस क़ुरबानी के लिए भी हमें तैयार रहना चाहिए ।

अगर अक़ीक़त बयां की जाए तो मुझे अब अच्छे दिनों से भय लगने लगा है । काश ! कोई मेरे बीते हुए बुरे दिन मुझे वापस लौटा दे ।

शर्म

■ इक़बाल अंसारी

अब्बा जी मेरे पिता नहीं थे । लेकिन दुनिया में कोई तो मेरा पिता था । मैं उस नहीं जानती थी, अब भी नहीं जानती हूं । मगर उसके बारे में दो बातें जानती हूं–एक यह कि वह मेरा पिता था, दूसरी यह कि वह बहुत कायर था । मैं नहीं जानती कि मेरे अस्तित्व की बुनियाद उसकी शराफ़त थी या उसका कमीनापन । सच्चाई यह थी कि मैं उसकी कायरता का शिकार थी । उस महिला की भी जिसने 9 महीने तक मुझे अपने भीतर जीवित रखा और फिर एक दिन अपने बाहर मरने के लिए छोड़ दिया और पिता की तरह वह भी ग़ायब हो गयी ।

महिला अगर किसी पुरुष की ज़बरदस्ती का शिकार हो जाए तो सहानुभूति के योग्य है, लेकिन अगर उसने अपनी मर्ज़ी से कुछ चमकीले क्षणों के लिए खुद को पुरुष के हवाले कर दिया और फिर उन क्षणों के जीवित परिणाम को एक रात धरती के किसी अंधेरे कोने में बेजान हो जाने के लिए छोड़ दिया, तो वह महिला उतनी ही कमीनी है जितना वह पुरुष, जिसके हवाले उसने खुद को कर दिया था । अपनी संतान को किसी अंधेरी रात के हवाले कर देना अगर सबसे बड़ा गुनाह नहीं है तो सबसे बड़े गुनाहों में से एक है । अगर यह दुनिया मेरे मां-बाप जैसे लोगों की दुनिया है, जो मुझे रात के किसी अंधेरे कोने में मरने के लिए छोड़ आते हैं, तो यह दुनिया अब्बा जी जैसे लोगों की दुनिया भी है, जो किसी धुंधली सुबह मस्जिद से लौटते समय मुझे दिन के उजाले में ज़िन्दा रखने के लिए उठा लाते हैं ।

अब्बा जी चारपायी बुनने का काम करते थे, अकेले थे । जब भी सोचती थी कि अब्बा ज़ी को कब से जानती हूं, तो मन कहता 'हमेशा से' बल्कि उससे भी पहले से । अब्बा जी जैसे लोगों का संबंध समय के किसी विशेष हिस्से से नहीं होता । वे तो पूरे समय पर फैले होते हैं । अब्बा जी जैसे लोग ही सब कुछ होते हैं ।

एक छोटे सें अंधेरे कमरे और कमरे के सामने लगभग उतना ही बड़े कच्चे आंगन वाला वह घर, घर से ज़्यादा मज़ाक़ नज़र आता था । लेकिन अच्छी बात यह थी कि वह अब्बा जी का अपना था । सुबह मिट्टी के तेल से जलने वाले स्टोव पर रोटी तरकारी पका कर नाश्ता करते थे । दो रोटियां और बची हुई तरकारी पोटली में बांध कर फेरी लगाने के लिए निकल जाते थे । लखीमपुर छोटा-सा शहर था, लेकिन अब्बा जी को दो-तीन चारपाइयां बुनने का काम मिल जी जाता था, जो उनकी रोटी तरकारी और ज़िन्दगी चलाने के लिए काफ़ी होता था ।

जब वे मुझे सड़क के एक अंधेरे कोने से उठा लाये तो स्टोल पर कढ़ाई और तवे के अलावा अल्यूमिनियम की एक छोटी-सी पतीली भी चढ़ने लगी, जिसमें मेरे लिए गाय का दूध पकता था । अब जब वे फेरी लगाने जाते तो मुझे भी साथ ले जाते । मुझे अपने पास ज़मीन पर एक गद्दा बिछाकर लिटा देते, एक चादर ओढ़ा देते और चारपाई बुनने लगते ।

जब मैं पांच वर्ष की हुई तो अब्बा जी ने मुझे म्यूनिस्पेलअी के प्राइमरी स्कूल में दाख़िल करा दिया । इस तरह हमारी शिक्षा हुई, यानी मेरी और अब्बा जी की शिक्षा । मैं स्कूल में पढ़ती अब्बा जी घर में मुझे स्कूल में मैडम जो कुछ पढ़ाती थी वह मैं घर आकर अब्बा जी को पढ़ाती । एक बात मुझे हमेशा महसूस होती कि मैडम जो कुछ स्कूल में पढ़ाती वह मुझे तुरंत ही समझ में आ जाता, लेकिन जब वही घरी पर मैं अब्बा जी को पढ़ाती तो उन्हें बहुत देर में समझ में आता । निश्चित रूप से दोष अब्बा जी की समझ का नहीं था, बल्कि खूबी मैडम जी के पढ़ाने में थी । वैसे एक बात अब्बा जी अक्सर कहते थे, तू कैसे हर बात इतनी जल्दी समझ लेती है, कैसे इतने कम समय में इतना बहुत-सा पढ़ लेती है ? फ़ख़्र? उन्होंने मेरा नाम फ़ख़्रे जहां रखा था । अब्बा जी ने शादी की थी, तीन वर्ष बाद पत्नी की मौत हो गयी । वे पत्नी को बहुत चाहते थे । उनके मरने के बाद शायद अब्बा जी के मन में फिर कभी शादी

करने का ख़याल ही नहीं आया । कुछ समय बाद उन्हें मैं मिल गयी और उनके जीवन का केन्द्र बन गयी ।

दसवीं कक्षा मैंने बानवे प्रतिशत नम्बर के साथ पास की । शिक्षा का कोई ख़र्च तो था ही नहीं, अब मेरिट स्कॉलरशिप और मिलने लगा । इंटरमीडिएट की परीक्षा में इकयानवे प्रतिशत नम्बर आये और फिर बी०ए० बानवे । अब्बा जी की आंखों से एक बार फिर बड़े-बड़े आंसू निकल कर उनकी दाढ़ी में समाने लगे । अभी मुझे बहुत आगे जाना है । अभी तो केवल तेरा नाम फ़ख़्रे जहां है, अभी तुझे फ़ख़्रे जहां बनना बाक़ी है । ख़ुदा से बस इतनी ज़िन्दगी और चाहता हूं कि तुझे फ़ख़्रे जहां बना हुआ देख लूं । मालूम नहीं वे क्या देखना चाहते थे ।

कुछ भी नहीं देख सके । मैं एम०ए० फाइनल में थी, एक रात अब्बा जी सोये तो फिर उठे नहीं उठाये गये ।

मुझे लगा कि ज़िन्दगी ख़त्म हो गयी । लेकिन जल्दी ही चेतना ने सूचना दी कि ज़िन्दगी अभी बाक़ी है, केवल उसकी धुरी खो गयी है । यह बिना धुरी का जीवन मुझे कुछ नहीं लगा । जी चाहा आत्महत्या कर लूं, कहीं भाग जाऊं । किसी ऐसी जगह जहां और चाहे जो कुछ हो बस मैं न रहूं । अभी मुझे याद आया, कभी पढ़ा था—यह जीवन ही सब कुछ है, इसे छोड़कर परमात्मा को कहां पाओगे ? जीवन कितना ही दूभर हो इससे भागना नहीं, इसमें जागना है, क्योंकि भाग कर भी कहां जाओगे ? जहां जाओगे, वहां तुम तो रहोगे ही । इसलिए कहीं जाना ही है तो अपने अन्दर जाओ, बाहर नहीं । और फिर मुझे अब्बा जी के वे शब्द याद आये "इन्सान ख़ुद ही अपना मसला है और ख़ुद ही अपना हल" इन शब्दों ने मुझे थाम लिया, बिखरने से बचा लिया ।

मैंने ख़ुद को अपने जीवन का केन्द्र बना लिया । अर्थशास्त्र में चौरानवे प्रतिशत नम्बर के साथ एम०ए० किया । प्रतियोगिता परीक्षा में बैठी और आई०ए०एस० हो गयी । मुझे लगा कि मैं स्वयं अपना गर्व (फ़ख़्र) हो गयी हूं ।

पोस्टिंग मिली मुंबई में । मेरे ही बैच के महाराष्ट्र कैडर के आई०ए०एस० वलीउल्लाह कोनकनी ने मुझे शादी की इच्छा जतायी ।

पहले मेरे सारे सच सुन लो इसके बाद भी अगर तुम अपनी बात पर जमे रहे तो मैं तैयार हूं । यह कहकर मैंने अपने सारे सच बड़ी बेदर्दी से उसके सामने उगल दिये । वली ने बड़ी दिलचस्पी से सब कुछ सुन लिया और फिर अपनी इच्छा दोहरायी । एक बार फिर दुनिया बड़ी सुन्दर लगने लगी । मैंने उससे शादी कर ली ।

वली ने माता-पिता और बहन ने मुझे भरपूर मान सम्मान दिया, भरपूर प्यार दिया । विशेष रूप से उनकी माता तो दिन रात मुझ पर न्योछावर होती रहती थी । वली की बहन की शादी हो चुकी थी, लेकिन वह भी दमेरी दीवानी थी । वह ख़ुद भी यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर थी, उसके दो बेटे थे ।

ग़ज़ल

रोते-रोते यूं ही हंसने और मुस्काने की बात
याद आयी लो मुझे फिर एक दीवाने की बात

लोग प्यासे आये थे और प्यासे ही वापस गये
मेरे दिल से आ लगी ये थी तो मयख़ाने की बात

सिर्फ़ इक मैं ही नहीं था, ये भी थे वो भी थे
लो, बता दी मैंने तुमको अपने अफ़साने की बात

तेरे अपने ही मुझे जीने न देंगे देखना
जानी-पहचानी लगी यह एक अनजाने की बात

फूल-सा खिलना है तो खिलने की ही बातें करो
क्यों रखा करते हो दिल में सिर्फ़ मुस्काने की बात

रोज़ ख़ाली हाथ जब भी लौटता हूं शाम को
कितना तड़पाती है दिल को अपने घर जाने की बात

सामने सच के मुझे जब झूठ कहना पड़ गया
मैं 'कुंअर' हकला गया यह थी ही हकलाने की बात ।

● कुंअर बेचैन

मेरे जीवन में चांदनी ही चांदनी थी । फिर एक दिन मुझे उबकाइयां शुरू हो गयीं तो ऐसा लगा कि चांदनी और बढ़ गयी है । लेकिन जल्दी ही मुझे झटका लगा, ज़बरदस्त झटका । मगर फिर मैंने खुद को संभाला–''मैं अल्ट्रासाउंड नहीं कराऊंगी ।'' मेरे इरादा मेरे स्वर से ज़्यादा मज़बूत था और मैं इस मज़बूती पर क़ायम रही । अगर तुमने ज़िद या ज़बरदस्ती की मिस्टर वलीउल्लाह तो मैं सारी दुनिया को बता दूंगी और फिर सोचो तुम्हें कितनी मुश्किलें उठानी पड़ सकती हैं । नौकरी भी जाएगी और सज़ा अलग भुगतनी पड़ेगी ।

वली सन्नाटे में आ गये । उन्हें अपनी पत्नी से इस ''बदतमीज़ी'' की अपेक्षा नहीं थी । वे चुप हो गये और अपने माता-पिता को भी चुप रहने को कह दिया । एक रात बिस्तर पर लेटे हुए मैंने वली से कहा, ''तुमने उच्च शिक्षा प्राप्त की तुम्हारे माता-पिता और परिवार के अन्य लोग भी उच्च शिक्षा प्राप्त हैं, लेकिन तुम्हारी सोच इतनी संकीर्ण । ''तुम बेटी नहीं चाहते ।''

''अल्लाह ने तो हर पैग़म्बर को औरत की कोख से पैदा किया । रसूल (सल्ल॰) मां के पैरों के नीचे जन्नत बतायी, बेटियों की अच्छी परवरिश करने वालों को अल्लाह के रसूल ने जन्नत की शुभ सूचना दी; तुम लोगों को बेटी से इतनी नफ़रत क्यों है । मुझे तो शर्म आती है तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे घर की बहु कहलाने में ।''

और हमें उस समाज का सदस्य होने पर शर्म आती है, जहां हर साल 11-15 हज़ार महिलाएं दहेज हत्या का शिकार हो जाती हैं ।'' वली उठकर बैठ गये ।

''मुझे शर्म आती है उस समाज पर जहां हर 21 मिनट में एक महिला का बलात्कार होता है, हर 9 मिनट में एक महिला उत्पीड़न का शिकार होती है, हर 16 मिनट में एक महिला की हत्या और हर 19 मिनट में हत्या की कोशिश होती है । जहां न 3 वर्ष की बच्ची सुरक्षित है और न 80 वर्ष की बुढ़िया...।''

''हम एक बच्ची के माता-पिता बन जाएं और फिर एक-एक क्षण इस डर में गुज़ारे कि न जाने कब उसके साथ कोई दुर्घटना हो जाए । न जाने कब कालेज से वापस आती हमारी बेटी पर कोई तेज़ाब फेंक दे । कब हमारी बेटी को दहेज के लोभ में उसके ससुराल वाले जलाकर मार दें ।''

''लेकिन मेरे साथ तो ऐसा कुछ भी नहीं हुआ''...मैंने कहा–''मगर इस बात की क्या गारंटी है कि हमारी बेटी के साथ भी नहीं होगा ?''

वली के सवाल का कोई जवाब नहीं था । मैं लाजवाब हो गयी । मगर फिर भी अल्ट्रासाउंड और कन्या भ्रूण हत्या के लिए तैयार नहीं हुई । क्योंकि यह समस्या का समाधान नहीं था, कई नयी समस्याओं को जन्म देना था । मैं बहुत देर तक जागती रही फिर ऊंघ गयी ।

मैं सोते-जागते अल्लाह से यही दुआएं मांगने लगी कि परवरदिगार, मुझे बेटी भी क़बूल होगी, मगर तू देना मुझे बेटा ही ।

साहित्य समाचार

डॉ॰ अशोक 'गुलशन' की पुस्तक का लोकार्पण

कवि, साहित्यकार, शायर एवं राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय सीताद्वार श्रावस्ती के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ॰ अशोक 'गुलशन' की प्रकाशित पुस्तक ''लफ़्ज़ों का सफ़र'' काव्य संग्रह का लोकार्पण षष्टम अन्तर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन में थाइलैंड की राजधानी बैंकाक के होटल सीजन सायम के सभागार में मुख्य अतिथि उ॰प्र॰ के पूर्व केन्द्रीय मंत्री नकुल दुबे तथा विशिष्ट अतिथि अन्तर्राष्ट्रीय बाक्सिंग कोच एस॰एन॰ मिश्रा द्वारा किया गया । इस अवसर पर डॉ॰ अशोक ''गुलशन'' को अन्तर्राष्ट्रीय परिकल्पना ग़ज़ल सम्मान-2015 से सम्मानित किया गया । डॉ॰ गुलशन को उनकी विशिष्ट साहित्यिक सेवाओं हेतु अब तक 327 सम्मान, पुरस्कार एवं उपाधियां प्राप्त हो चुकी हैं तथा देश-विदेश से प्रकाशित एक हज़ार सत्तावन प्रकार के समाचार पत्र, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में उनकी लगभग पांच हज़ार रचनाएं तथा 16 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ।

कविता के क्षेत्र में डॉ॰ अशोक ''गुलशन'' को उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं हेतु उ॰प्र॰ के मुख्य सचिव आलोक रंजन द्वारा इक्यावन हज़ार के अमृत लाल नागर पुरस्कार सहित भूटान एवं नेपाल में भी सम्मानित किया गया है ।

طبقات دوزخ سات ہیں۔ سقر۔ سعیر۔ فطی۔ حطمہ۔ جحیم۔ جہنم اور ہاویہ۔

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

قادری قبض روجن

گیسٹک کے درد میں؟



بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

زعفرانی تیل

گٹھیا کے درد میں؟



کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشٹک چورن

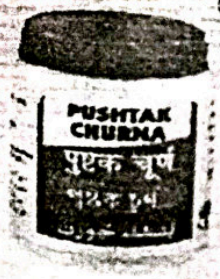

جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی

شوگر کی کامیاب دوا

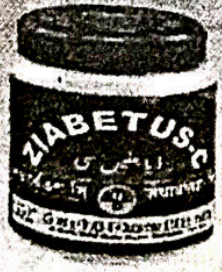

مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

کیسر فورٹ

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے



کمزوری کی قوت میں مردانگی میں کمزوری واقع ہوتی ہے جس ضعف باہ کہتے ہیں اور اگر وہ عورت زوجیت ادا کرنے کے بالکل قابل نہ ہو تو اس کو نامردی کہتے ہیں۔ ان کا خاتمہ کو دور کرنے کے لئے ادارہ قادری دواخانہ نے قیمتی یونانی جڑی بوٹیوں کے مرکب سے ایک ایسی کیسر فورٹ ایجاد کرلی ہے جو اعصاب کو طاقت دے کر باہ کی طاقت کو بڑھاتی ہے اور کمزوری کو دور کرنے میں بہت ہی مفید ہے۔

زعفرانی مالٹ

ہر عضو کی کمزوری کے لئے



دماغ و اعصاب کے لئے محرک ہے۔ ضعف باہ کو دور کرتی ہے اور اعلیٰ درجہ کا مسک بھی ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک۔ صبح و شام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سوتے وقت دودھ کے ہمراہ

Qadri Dawakhana ™
B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018
Ph. No. 2469-3173-2469-3539 (M) 9830009616 / 9674013169
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana80@yahoo.co.in

STOCKIST
Qadimi Dawakhana
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

M/s. Shifa Clinic
A-289, Moh Masjid Road,
P.O. Chhawnberpur, Shaheed Nagar
Ghaziabad, Ph : 0120 - 2621288

भारत का दूसरा तेंदुलकर–विराट कोहली

❖ ए॰ एन॰ शिब्ली

कोई उसे विश्व का सबसे बेहतर बल्लेबाज़ बता रहा है तो कोई उसे भारत का दूसरा सचिन तेंदुलकर बता रहा है । जी हां यहां बात हो रही है भारतीय बल्लेबाज़ विराट कोहली की । आये दिन वह कुछ ऐसा शानदार प्रदर्शन करते हैं जिसके बाद उन्हें मौजूदा समय का बेहतरीन बल्लेबाज़ माना जा रहा है वहीं बहुत से लोग ऐसे भी हैं कि कोहली को भारत का दूसरा सचिन मानने लगे हैं । ऐसा हो भी क्यों नहीं । कोहली सिर्फ़ रन नहीं बना रहे हैं, रिकार्ड नहीं बन रहे हैं बल्कि ज़िम्मेदारी वाली पारी खेल कर भारत को जीत दिला रहे हैं । पिछले दिनों लक्ष्य का पीछा करने में महारत हासिल कर चुके विराट कोहली ने ऑस्ट्रेलिया के ख़िलाफ़ अपने इस हुनर का लाजवाब नमूना पेश करके भारत को करो या मरो वाले मैच में छह विकेट से जीत दिलाकर आई॰सी॰सी॰ विश्व टी20 के सेमीफ़ाइनल में पहुंचाया । इस मैच में एक बार ऐसा लग रहा था की भारत यह मैच हार जाएगा मगर कोहली ने अपना संयम नहीं खोया और शांति से बल्लेबाज़ी करते रहे । कोहली ने 51 गेंदों पर नौ चौकों और दो छक्कों की मदद से नाबाद 82 रन की बेहतरीन पारी खेली जिससे भारत शीर्ष क्रम के अन्य बल्लेबाज़ों की नाकामी के बावजूद 19.1 ओवर में चार विकेट पर 161 रन बनाकर क्वार्टर फाइनल सरीखे इस मैच में जीत दर्ज करने में सफल रहा ।

भारतीयों को आखिरी तीन ओवर में 39 रन की दरकार थी लेकिन कोहली ने फाकनर पर पहले दो चौके और फिर छक्का जड़कर हिसाब बराबर कर दिया । इस ओवर में 19 रन बने । कोहली यहीं पर नहीं रुके । उन्होंने कूल्टर नाइल के अगले ओवर में चार चौके लगाकर दर्शकों को उत्साह से लबरेज कर दिया । आख़िरी छह गेंदों पर अब चार रन चाहिए थे । धोनी ने फाकनर की पहली गेंद पर विजयी चौका जड़कर जीत की औपचारिकता पूरी की । यानी जिस मैच में भारत को हार का डर सता रहा था उसमें उसे पांच गेंद पहले ही जीत मिल गयी ।



जब यह पंक्ति आप पढ़ रहे होंगे तो आपको पता चल गया होगा की भारत का प्रदर्शन बाद के मैचों में क्या रहा मगर इस मैच में कोहली के शानदार प्रदर्शन के बाद एक बार फिर यह बहस शुरू हो गयी कि क्या कोहली सही मायने में इस समय विश्व के सबसे बड़े बल्लेबाज़ हैं ।

पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा कि दायें हाथ का यह बल्लेबाज़ फ़िलहाल दुनिया का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज़ है । इसमें कोई शक नहीं है । इसमें बिल्कुल भी संदेह नहीं है । वह कुछ अलग है ।" उन्होंने कहा, "मेरे जो भी थोड़े बाल बचे हैं वह इस युवा जीनियस की पारी देखकर खड़े हो गये थे । यह बेहतरीन पारी थी । कोहली की महानता इस तथ्य में है कि वह दबाव में शानदार प्रदर्शन करता है और टीम के हितों को हर चीज़ से उपर रखता है ।

महान बल्लेबाज ब्रायन लारा ने भी कहा कि कोहली 'अविश्वसनीय' बल्लेबाज है । लारा ने ट्विटर पर लिखा, "क्या कोई विराट कोहली के किशोरावस्था के वीडियो मुझे भेज सकता है । मैंने जिन्हें देखा उनमें क्रिकेट गेंद का सबसे अच्छा टाइमर ।" उन्होंने लिखा, "वह अविश्वसनीय बल्लेबाज़ है । कुछ और कहने की ज़रूरत नहीं है ।" खुद सचिन ने भी कई अवसरों पर कोहली की तारीफ़ की है ।

कोहली को अभी बहुत खेलना है मगर इतने दिनों में ही

उन्होंने जैसा प्रदर्शन किया है उसके बाद उनकी गिनती न केवल दुनिया के अच्छे बल्लेबाज़ों में होने लगी है बल्कि कुछ क्रिकेट जानकर तो उन्हें क्रिकेट इतिहास के गिने-चुने बल्लेबाज़ों में से एक बताया है ।

5 नवम्बर 1988 को दिल्ली में पैदा होने वाले कोहली ने अपना पहला एकदिवसीय मैच 18 अगस्त 2008 को श्रीलंका के ख़िलाफ़ खेला । उसके बाद से उन्होंने अब तक 171 मैच खेले हैं जिनमें 25 शतक और 36 अर्धशतकों की मदद से 7212 रन बनाए हैं । एकदिवसीय क्रिकेट में कोहली भारत की ओर से सबसे तेज़ 1000, 4000, 5000 और 6000 रन पूरे करने वाले बल्लेबाज़ हैं । यही नहीं सबसे तेज़ 7000 रन पूरे करने के मामले में तो वह विश्व में पहले नंबर पर हैं । यही नहीं टी-20 में कोहली के नाम सबसे तेज़ 1000 रन पूरे करने का रिकार्ड है । कोहली के नाम विश्व में सबसे तेज़ 25 शतक पूरे करने का रिकार्ड है । भारत की ओर से उन्होंने कई कलेंडर साल में सबसे अधिक रन तो बनाए ही 2011 में कोहली ने विश्व में किसी भी खिलाड़ी से अधिक रन बनाए । 2012 में कोहली को एकदिवसीय क्रिकेट में साल का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज़ चुना गया । 2011-12 और 2013-14 में कोहली को विश्व का क्रिकेटर ऑफ़ दि ईयर का पुरस्कार मिला । फ़िलहाल कोहली बहुत अच्छा खेल रहे हैं इसलिए बहुत से लोगों को लगता है कि वह भारत के नये तेंदुलकर तो हैं ही यदि वह तेंदुलकर से आगे भी निकल जाएं तो किसी को हैरानी नहीं होगी ।

महान क्रिकेटर शेन वाटसन

वैसे तो मोहाली में खेले गये भारत और ऑस्ट्रेलिया के मैच में विराट कोहली ने हर किसी को हैरान कर दिया मगर उस मैच में एक खिलाड़ी ऐसा भी खेल रहा था जिस पर क्रिकेट के जानकार नज़र गड़ाए हुए थे और देखना चाह रहे थे कि क्रिकेट का महान खिलाड़ी आज अपने ख़ास मैच में क्या करता है । जी हां बात हो रही है ऑस्ट्रेलिया के महान खिलाड़ी शेन वाटसन की । चूंकि कोहली की शानदार बल्लेबाज़ी की वजह से भारत यह मैच जीत गया इसलिए यह शेन वाटसन का अंतिम मैच साबित हुआ । यह ठीक है कि ऑस्ट्रेलिया को इस मैच में जीत नहीं मिली मगर कुल मिलाकर इस मैच में वाटसन ने बेहतर खेल पेश किया । पहले बल्लेबाज़ी करते हुए उन्होंने ने 16 गेंदों पर 18 रन बनाए उसके बाद दो विकेट लेकर ऑस्ट्रेलिया के लिए कुछ आशाएं भी बढ़ाई । वाटसन ने यह पहले ही एलान कर दिया था कि टी 20 विश्व कप के बाद वह क्रिकेट को अलविदा कह देंगे । वाटसन सिर्फ़ ऑस्ट्रेलिया ही नहीं बल्कि विश्व के महान हरफनमौला खिलाड़ियों में जाने जाते हैं । टेस्ट और एकदिवसीय क्रिकेट को तो उन्होंने पहले ही अलविदा कह दिया था अब वह टी 20 से भी अलग हो गये हैं । अब हम उनका शानदार प्रदर्शन अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में नहीं देख पाएंगे ।

विश्व स्तर पर और ऑस्ट्रेलिया के लिए अपने नाम कई रिकार्ड करने वाले शेन वॉटसन रॉबर्ट का जन्म 17 जून 1981 को क्वींसलैंड में हुआ । वे दाएं हाथ के बल्लेबाज़ और दाएं हाथ के मध्यम तेज़ गेंदबाज़ हैं । उन्होंने आस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के साथ अपने क्रिकेट कैरियर की शुरुआत 2002 में अपना पहला एकदिवसीय मैच दक्षिण अफ़्रीक़ा के ख़िलाफ़ खेलते हुए की । एकदिवसीय टीम के स्थायी सदस्य होने के बावजूद, उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की ओर से बहुत कम टेस्ट मैच खेले हैं, टेस्ट क्रिकेट में उनका पदार्पण जनवरी 2005 को सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में पाकिस्तान के विरुद्ध हुआ । ऑस्ट्रेलिया के नामित टेस्ट हरफनमौला खिलाड़ी के रूप में मनोनीत किये ज़ाने के वाबजूद, अक्सर चोटिल रहने के कारण वे टेस्ट टीम में अपनी जगह पक्की नहीं कर पाते थे । वॉटसन को 2010 में एलन बार्डर मेडल से सम्मानित किया गया । इसके अलावा भी उन्हें कई अवार्ड और पुरस्कार मिले ।

वॉटसन को 2002 में पहली बार तस्मानिया के लिए पूरा कप में सबसे अधिक विकेट लेने और मध्य क्रम में बल्लेबाज़ी के उनके स्थायी प्रदर्शन को देखते हुए, दक्षिण अफ़्रीक़ा के दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया की टेस्ट टीम में चुना गया । ऑस्ट्रेलिया के कप्तान रह चुके स्टीव वॉ ने अपने कार्यकाल के दौरान कहा था कि वॉटसन 1950 के दशक के कीथ मिलर और एलन डेविडसन के बाद संभवत: पहले वास्तविक ऑलराउंडर बन सकते हैं । वॉटसन ने अपने आदर्श, वॉ के साथ ऑस्ट्रेलियाई टीम में चुने जाने पर बहुत खुश थे । वॉटसन ने अभ्यास मैचों के दौरान अपने पहले मैच में नाबाद शतक बनाया था, लेकिन ऑस्ट्रेलियाई सत्र में दक्षिण अफ़्रीक़ा को 3-0 से पराजित करने वाली टीम के

ग्यारह सदस्यों को ही चयनकर्ताओं द्वारा प्राथमिकता दिये जाने के कारण, वे टेस्ट मैचों में नहीं खेल सके । वॉटसन को इस दौरे में अपने वनडे कैरियर की शुरुआत करने का मौक़ा मिला, जब उन्हें वॉ के स्थान पर खेलने के लिए मैदान में उतारा गया, वॉ को ऑस्ट्रेलियाई सत्र के दौरान वनडे के फाइनल में टीम के जगह बना पाने में विफल होने के कारण टीम से बाहर रखा गया था । 2003 में पीठ में चोटें लगने से पहले तक वॉटसन वनडे टीम के नियमित सदस्य बन चुके थे, चोट के कारण ही वे 2003 क्रिकेट विश्व कप में नहीं खेल पाए ।

चोट के कारण आस्ट्रेलिया के 2003-04 सत्र से बाहर रहने के बाद वॉटसन ने 2004-05 सत्र में वनडे में गेंदबाज़ ऑल राउंडर के रूप में पुनर्वापसी की । ऑस्ट्रेलिया के सिडनी क्रिकेट ग्राउंड की सूखी पिच पर दो स्पिनरों और तीन तेज़ गेंदबाज़ के साथ उतरने का फ़ैसला करने के कारण, वॉटसन पाकिस्तान के विरुद्ध तीसरे टेस्ट में भी खेले । 2005 में ऑस्ट्रेलिया के ऊपर इंग्लैंड के एशेज जीत के बाद, प्रत्युत्तर में ऑस्ट्रेलिया ने वॉटसन पांचवें गेंदबाज़ और सभी टेस्ट के लिए ऑल राउंडर के रूप में शामिल किया । वॉटसन ने इंग्लैंड के एंड्रयू फ्लिंटॉफ की बराबरी करने का दावा किया, जिन्होंने इंग्लैंड की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी । उन्हें दक्षिण अफ़्रीक़ा के 2006 के दौरे के लिए एकदिवसीय टीम में पुनः बुलाया गया, लेकिन ऑल-राउंडर एंड्रयू सायमंड्स के चोट से उबरकर वापस आने पर उन्हें फिर से टीम से हटा दिया गया । वॉटसन टेस्ट टीम में अपनी जगह तलाश रहे थे, लेकिन चोटिल हो जाने के कारण, एंड्रयू सायमंड्स को उनके स्थान पर खेलने का मौक़ा मिला ।

2006 आई॰सी॰सी॰ चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान वॉटसन को साइमन कैटिच के स्थान पर, विकेट-कीपर एडम गिलक्रिस्ट के साथ पारी की शुरुआत करने के लिए भेजा गया । उस प्रतियोगिता में उन्होंने गेंद और बल्ले दोनों से प्रभावित किया और ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली चैंपियंस ट्रॉफी जीत दर्ज की । वेस्टइंडीज और इंग्लैंड के ख़िलाफ़ पहले दो मैचों में असफल होने के बाद, वॉटसन ने भारत के ख़िलाफ़ ऑस्ट्रेलिया की जीत में 50 महत्वपूर्ण रन बनाए, जिसके परिणामस्वरूप ऑस्ट्रेलिया को सेमीफाइनल में प्रवेश मिला और 2009 में दक्षिण अफ़्रीक़ा में आयोजित चैंपियंस ट्रॉफी में, वॉटसन ने पुनः प्रमुख भूमिका निभाते हुए, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के ख़िलाफ़ सेमीफाइनल और फ़ाइनल में दो लगातर शतक जड़ कर ख़िताब ऑस्ट्रेलिया के नाम कर दिया ।

वॉटसन 2008 के अंत में भारत के दौरे पर ऑलराउंडर के रूप में गये, वहां उन्होंने 6वें नंबर पर बल्लेबाज़ी की । दिल्ली में तीसरे टेस्ट के दौरान, वे भारतीय सलामी बल्लेबाज़ गौतम गंभीर के साथ कई विवादों में घिरे रहे । वॉटसन ने संयुक्त अरब अमीरात में पाकिस्तान के ख़िलाफ़ वनडे शृंखला में शतक जमाते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वापसी की । तीनों ही प्रकार की क्रिकेट में बेहतर खेल पेश करने वाले शेन वाटसन ने कई रिकार्ड अपने नाम किये । टी 20 में वह तीन अवसरों पर 50 रन बनाने और तीन विकेट लेने वाले एकमात्र खिलाड़ी हैं । 2012 के टी 20 विश्व कप के दौरान तो वाटसन ने अजूबा ही कर दिया । उस टूर्नामेंट में उन्होंने सबसे अधिक रन भी बनाए, सबसे अधिक विकेट भी लिए और सबसे अधिक छक्के भी लगाए । वाटसन टी 20 के एक मैच में चार विकेट लेने के अलावा शतक भी बना चुके हैं । वह विश्व के एकमात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने 4 विकेट भी लिए और शतक भी बनाया । वह विश्व के एकमात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जो बल्लेबाज़ी में भी और हरफ़नमौला खिलाड़ियों की रैंकिंग में पहले नंबर पर रहे । ऑस्ट्रेलिया में वाटसन के अलावा किसी और खिलाड़ी ने क्रिकेट के तीनों फार्मेट में शतक नहीं बनाए । वह ऑस्ट्रेलिया के एकमात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्हें क्रिकेट के तीनों फॉर्मेट में प्लेयर ऑफ़ द ईयर का पुरस्कार मिल चूका है ।

यदि आंकड़ों की बात करें तो वाटसन ने 59 टेस्ट खेले हैं जिनमें चार शतक और 24 अर्धशतकों की सहायता से 3731 रन बनाए हैं । टेस्ट में उनका सबसे बड़ा स्कोर 176 है । एकदिवसीय क्रिकेट की बात करें तो यहां वाटसन ने 190 मैच खेले हैं जिनमें नौ शतक और 33 अर्धशतकों की मदद से उन्होंने 5757 रन बनाए हैं । एकदिवंसीय क्रिकेट में वाटसन का सबसे बड़ा स्कोर 185 अविजित रन है । टी 20 में वाटसन को 58 मैच खेलने का मौक़ा मिला जिनमें एक शतक और 10 अर्ध शतकों की मदद से उन्होंने 1462 रन बनाए ।

● ए॰ एन॰ शिब्ली

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

Chairman
Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

नौकरी की तैयारी करें मगर...

■ निमिष कपूर

तलाश एक ऐसा शब्द है, जो हर वक़्त हर किसी की ज़िन्दगी में बना रहता है । सभी को किसी न किसी चीज़ की तलाश रहती है, जिसकी पूर्ति के लिए कुछ प्रयत्न करने होते हैं । युवाओं को सर्वप्रथम तलाश होती है, एक अच्छी व सुरक्षित नौकरी या पेशे की । अंतिम वर्षों के अध्ययन के साथ ही नौकरी की तलाश आरंभ हो जाती है । वास्तव में नौकरी की तलाश के लिए किया गया संघर्ष एक सृजनात्मक प्रक्रिया है जिसकी सफलता आपकी अपनी क्षमताओं पर निर्भर करती है । यदि आप नौकरी की तलाश से पूर्व, इस तलाश प्रक्रिया पर कुछ चिंतन करें तो सफलता अवश्य मिलेगी ।

हम नौकरी की तलाश करते हैं, अपने अध्ययन और अपनी रुचि, शौक़ व क़ाबलियत के आधार पर । यहां पर यदि हम अपने अध्ययन पर ग़ौर करें तो यह ठीक वैसे ही है जैसे किसी मकान की नींव । नींव जितनी गहरी होगी, मकान उतना ही मज़बूत होगा, लेकिन यहां कारीगर का क़ाबिल होना भी आवश्यक है ।

अध्ययन के पश्चात नौकरी तलाशने से पूर्व हमारी प्राथमिक आवश्यकताएं होती हैं, हमारा आत्मविश्वास, हमारी प्रतिभा, दृढ़ निश्चय, ईमानदारी और लगन, जो कि एक संपूर्ण व्यक्तित्व को सफलता के आइने में दर्शाती है । इस समय आपका व्यक्तित्व ठीक उसी तरह निखरता है, जैसे किसी गहरी नींव के ऊपर सुसज्जित आंगन, जिस पर आपको अपने भविष्य के क़िले का निर्माण करना होता है, आसमान तक चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनानी होती हैं और एक-एक करके उस पर चढ़ना होता है । सुदृढ़ व्यक्तित्व के बाद आपको यह निश्चय करना है कि आप अब किस तरह की नौकरी की तलाश करें । कहां, किस तरह के परिचय पत्र (बायोडाटा) के साथ आवेदन करें कि आपको यह मिल जाए । यह कहावत भी मशहूर है कि किसी भी कार्य के लिए दौड़ने की आवश्यकता नहीं है, बस समय पर चलना पड़ना ही काफ़ी है । लेकिन यहां यह ध्यान देने की बात है कि समय पर क़दम उठाना मत भूलिए क्योंकि समय बार-बार नहीं आता । अतः अपने अध्ययन, व्यक्तित्व, प्रतिभा कौशल और क्षमताओं को दर्शाता आपका परिचय पत्र ऐसा हो कि उसे देखकर नौकरी देने वाला आपकी संपूर्णता से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो जाए ।

नौकरी तलाशने की प्रक्रिया में जो मुख्य बातें ध्यान देने की हैं, वह यह है कि आप सर्वप्रथम अपने अंतर्मन से पूछें कि आप किस नौकरी के लायक हैं । आपका अध्ययन आपकी प्रतिभाएं आपको किस पेशे के लिए उपयुक्त कहती हैं ? इस प्रश्न का सही उत्तर स्वयं से पूछिए और उसे संपादित कीजिए । ऐसा इसलिए ज़रूरी है कि यदि आप अमुक नौकरी के लायक़ न हों पर अब भी दोस्तों या घर वालों के कहने पर आप उस नौकरी के प्रयास में अपना वक़्त बर्बाद करें और जिस नौकरी के लायक़ आप हैं, वह भी आपके हाथ से छूट जाए ।

नौकरी की तलाश के समय अपने प्रति किसी तरह की ग़लत धारणा न पनपने दें और न ही किसी भ्रम में रहें । ग़लत धारणा तब पनपती है, जब आठ-दस जगह प्रयास के बाद भी नौकरी नहीं मिलती और मन में कुंठा का जन्म होता है । यक़ीन मानिए, यही वह समय है जब आप अधिक से अधिक पुस्तकों को पढ़कर अपने दिमाग़ का दायरा बढ़ा सकते हैं और फिर नौकरी आज नहीं तो कल अवश्य मिलेगी । यह सकारात्मक सोच आपके आत्मविश्वास को कभी डिगने नहीं देगी, दूसरी तरफ़ आपको इस भ्रम से भी दूर रहना है कि फ़लां व्यक्ति आपको नौकरी दिला सकता है । ऐसे भ्रम में मत पड़िये ।

अध्ययन, व्यक्तित्व निर्माण, आत्मविश्वास और सुदृढ़ परिचय-पत्र के साथ नौकरी तलाशने की प्रक्रिया का अंतिम पड़ाव है—साक्षात्कार । ठीक उसी तरह जैसे गहरी नींव के ऊपर खड़े मकान में गृह प्रवेश । याद रखिए कि साक्षात्कार में आपकी संपूर्णता को आंका जाता है, अतः किसी भी दशा में स्वयं को साक्षात्कारकर्मियों से कम बुद्धिमान मत समझिए ।

इस्लाम की दावत में ज्ञान का महत्त्व

● मुहम्मद इलियास हुसैन

1. पुस्तक	: इस्लाम की दावत
लेखक	: मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी
पृष्ठ	: 598
मूल्य	: ₹ 275.00
प्रकाशक	: एम॰ एम॰ आई॰ पब्लिशर्स, नई दिल्ली-25,
फ़ोन	: 011-26981652, 23987858
2. पुस्तक	: इस्लाम में ज्ञान का महत्त्व
संपादक	: डॉ॰ मुहम्मद अहमद
पृष्ठ	: 48
मूल्य	: ₹ 28.00
प्रकाशक	: एम॰ एम॰ आई॰ पब्लिशर्स, नई दिल्ली-25
फ़ोन	: 011-26981652, 23987858

1. इस्लाम की शिक्षा हर इन्सान के लिए है, चाहे वह दुनिया में कहीं भी रहता हो । इसलिए हर मुसलमान का यह कर्तव्य है कि वह इस्लाम के संदेश को, इसकी दावत को अल्लाह के हर बन्दे तक पहुंचाए । लेकिन यह काम आसान नहीं है । इसकी राह में पग-पग पर स्पीड ब्रेकर मौजूद हैं । लेकिन इससे घबराने की ज़रूरत नहीं है । सुप्रसिद्ध इस्लामी विद्वान और विचारक मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी ने अपनी किताब **'इस्लाम की दावत'** में इस्लाम की शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने वालों की राह में आने वाली कठिनाइयों और विघ्न-बाधाओं को दूर करते हुए इस राह पर हिम्मत के साथ आगे बढ़ते जाने के तरीक़ों पर बहुत विस्तार से प्रकाश डाला है ।

मौलाना ने ज़ोर देकर कहा है कि हर मुस्लिम की ज़िम्मेदारी है कि वह इस्लाम की दावत लोगों तक पहुंचाए, इस्लाम के हर पहलू से लोगों को परिचित कराए । तभी इस्लाम-विरोधी वर्चस्ववादी शक्तियों द्वारा इस्लाम के संबंध में फैलाई जा रही भ्रांतियों, अफ़वाहों, सन्देहों, झूठ और भ्रमों के घुप्प अंधेरे को मिटाया जा सकता है और सत्य की रौशनी और इस्लाम के नूर को पूरी दुनिया में फैलाया जा सकता है । इन्सानियत और शैतानियत के बीच कशमकश जारी है और क़ियामत तक जारी रहेगी । इससे घबराने और निराश होने की ज़रूरत नहीं है । इस्लाम की दावत के ज़रिए ही इस अंधकार को दूर किया जा सकता है, दुनिया को अल्लाह की बन्दगी, इन्साफ़, बराबरी और भाईचारे के नूर से भरा जा सकता है ।

इस्लाम क्या है और इस्लाम की दावत क्या ? इस्लाम में क्या है और क्या नहीं है ? लोगों को इस्लाम की ओर बुलाना क्यों ज़रूरी है और इसे जन-जन तक कैसे पहुंचाया जा सकता है ? इसकी दावत की राह में क्या-क्या रुकावटें आती हैं और आ सकती हैं ? उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है ? इत्यादि । इस किताब में ऐसे अनगिनत सवालों पर तर्कपूर्ण ढंग से विचार किया गया है ।

इस्लाम जीवन व्यतीत करने की वह पद्धति है, जिसमें आदमी अपने प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पित होकर लोक-परलोक में दोनों में अमन, सलामती और परम सुख प्राप्त करता है, दोनों जहां में कामयाबी और मुक्ति प्राप्त कर सकता है । अल्लाह सारी सृष्टियों को जीवन-मृत्यु देने वाला । वही सबको आजीविका प्रदान करता है और सबका संरक्षक भी वही है ।

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पूरी दुनिया और सभी जीव-जन्तु के लिए रहमत बन कर आए थे । आप (सल्ल॰) पर सम्पूर्ण संसार के मार्गदर्शन के लिए क़ुरआन उतारा गया, जिसमें भलाई को फैलाने और बुराई को रोकने का सन्देश है । इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार, जीवन-यापन करके ही मानव-जाति अपना लोक-परलोक दोनों सुधार सकती है, कल्याण और मोक्ष प्राप्त कर सकती है । इसी बात को लोगों तक पहुंचाना इस्लाम की दावत है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस्लामी शिक्षा

मानव-मात्र के लिए है, संसार के समस्त प्राणियों के लिए है, हर युग, हर देश, हर प्राणी के लिए है और है क़ियामत तक के लिए । यह विश्व धर्म है । इस पर किसी जाति विशेष का एकाधिकार नहीं है । यह एक सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था है । इसलिए इसे हर आदमी तक पहुंचाना हमारा कर्तव्य है । इस पुण्य काम को कैसे अंज़ाम दिया जाए, यह किताब इसपर हर पहलू से रौशनी डालती है । इस्लाम की दावत देनेवालों के लिए यह एक प्रामाणिक पुस्तक है, जो उनकी रहनुमाई के लिए ही लिखी गयी है । दिल को लुभानेवाली शैली में लिखित इस किताब की भाषा सहज, सरल, सरस और प्रवाहमयी है । भाव और शैली का सौन्दर्य सम्मोहक है । मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी जमाअत इस्लामी हिन्द के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं और अब तक वे पचास से अधिक किताबें लिख चुके हैं । अब भी उनकी लेखनी निरन्तर गतिमान है और निरन्तर एक निश्चित मंज़िल की ओर बढ़ती ही जा रही है ।

2. **'इस्लाम में ज्ञान का महत्त्व'** शीर्षक पुस्तक में डॉक्टर मुहम्मद अहमद (संपादक कान्ति मासिक एवं साप्ताहिक) ने छह लेखकों के सात लेख संकलित किए हैं । इस्लाम में ज्ञान-विज्ञान के महत्त्व पर विभिन्न दृष्टियों से इन लेखों में प्रकाश डाला गया है । इस्लाम में ज्ञान-विज्ञान और शिक्षा का महत्त्व बहुत महत्त्व है । इस बात का स्पष्टीकरण इससे जाता है कि पवित्र कुरआन की प्रारंभिक आयतों में, जो पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद पर उतरीं, ज्ञान-विज्ञान की बात ही कही गई है । पवित्र कुरआन में कहा गया है, "पढ़ो अपने रब के नाम से, जिसने पैदा किया; जमे हुए ख़ून के लोथड़े से इन्सान को पैदा किया । पढ़ो और तुम्हारा पालनहार रब बड़ा करीम है, जिसने क़लम के द्वारा शिक्षा दी; मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया, जिसे वह न जानता था ।" (कुरआन, 56:1-5) एक हदीस में है, इल्म सीखो और दूसरों को सिखाओ ।" (हदीस : बैहक़ी)

इससे प्रेरणा लेकर आरंभिक मुसलमानों ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में बहुत प्रगति की और देखते-देखते ज्ञान-विज्ञान के आकाश में चमकते सितारे बन गये । उन्होंने दुनिया को अपने शोधों और आविष्कारों से उपकृत और चकत्कृत कर दिया । ज्ञान-विज्ञान के हर क्षेत्र में मुसलमानों का अनुपम योगदान है । जार्ज सार्टन लिखते हैं कि इस्लाम में ज्ञान-विज्ञान को अति महत्त्व दिए जाने और इस दिशा में अपेक्षित कार्य किए जाने के कारण पवित्र कुरआन के अवतरण के एक सौ वर्ष के अन्दर ही मुसलमानों ने पूरे संसार पर अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता प्राप्त कर ली । मुस्लिम वैज्ञानिकों ने विज्ञान और समाज में फैली भ्रांतियों और अंधविश्वासों का निवारण करके विशुद्ध विज्ञान और स्वस्थ समाज का निर्माण किया । मुसलमानों द्वारा डाली गई नींव पर पश्चिमवालों ने ज्ञान-विज्ञान का गगनचुम्बी भवन खड़ा कर लिया । आज ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में उनकी तूती बोलती है । दुनिया उनकी उंगलियों के इशारे पर नाचती है ।

'ज्ञान, बुद्धि एवं विवेक का महत्त्व' शीर्षक लेख में ज़हीर ललितपुरी कुछ कारणों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहते हैं–

"वे इस दौर में मुसलमानों के पिछड़ेपन, तबाही और बरबादी की एक ख़ास वजह यह है कि अल्लाह की किताब– कुरआन, उसके रसूल (सल्ल०) की ज़िन्दगी, दुनिया और कायनात में मौजूद तमाम चीज़ों के सही इल्म को नहीं समझते । जो लोग कुरआन की शिक्षाओं और रसूल के तरीक़े की जानकारी रखते हैं, उनमें से ज़्यादातर लोग दुनिया व कायनात के इल्म, नए दौर के विषयों और ज्ञान-विज्ञान की जानकारी की कमी की वजह से उसपर सही अमल नहीं कर पा रहे हैं ।" (पृ० 7)

निष्कर्ष यह कि पुस्तक का सुनहरा आवरण पृष्ठ मुसलमानों को उनके सुनहरे अतीत की याद दिलाता है और इसी के आधार पर सुनहरे भविष्य के निर्माण का संदेश देता है कि उठो, जागो और अपनी योग्यता, क्षमता और कारनामों के बल पर एक फिर विश्व पटल पर छा जाओ; क्योंकि दुनिया किसी मुक्तिदाता की राह तक रही है । शांति और सम्मान के प्रतीक इस्लाम को जन-जन तक पहुंचाओ । ज्ञान का प्रकाश फैलाओ, अन्याय, अत्याचार और असमानता के अंधकार को दूर भगाओ ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

समय का सदुपयोग

■ के॰ कविता
(अमेठी, उ॰प्र॰)

अरनोल्ड बेनेट लंदन के एक ग़रीब क्लर्क थे, इनका एक स्वप्न था : प्रख्यात लेखक बनने का । आश्चर्य की बात है कि इन्होंने अपने सपने को समय रहते ही साकार किया । इन्होंने अपने इस सपने को एक अच्छा रूप देने के लिए कुछ बातों को ध्यान में रखा, क्योंकि उन्हें इस बात का आभास था कि उनमें वे सभी गुण हैं, जो एक अच्छे कैरियर के लिए आवश्यक होते हैं । अंत में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि समय एक मात्र तथ्य है जो जीवन को उपयोगी बना सकता है ।

उन्होंने इस के लिए अपने 24 घंटे के समय का हर संभव बेहतर उपयोग करने का निर्णय लिया । वे अपने प्रत्येक क्षण का हिसाब रखने लगे इसके लिए वे अपने दिनचया का काफ़ी सावधानीपूर्वक अध्ययन किया एवं ख़ाली समय भी निकालें, ताकि उस समय में वे अपने लेखनी को सुधार सके । वे एक कठोर अनुशासन का पालन करने लगे । उन्होंने कुछ बातों को विशेष ध्यान दिया –जैसे अपने मूल्यवान समय के किसी भी पल को नष्ट न होने देना, अपने प्रत्येक क्षण का किसी भी तरीक़े से व्यर्थ न होने देना, अपने सुनियोजित योजनाओं में किसी का भी हस्तक्षेप न होने देना ।

उनकी यह योजना बेहद कारगर साबित हुई, वे अपने समय के प्रत्येक पलों को इस प्रकार से प्रयोग किये कि उनके द्वारा सोची गये सभी कार्य समय रहते ही पूरे होने लगे । वे इन्हीं 24 घंटे के समय में कई कार्य करने लगे एवं उनकी लेखनी जीवन भी कम समय में सफलता प्राप्त करने लगी । उनके अनुसार इन्हीं 24 घंटे समय में आपको सभी महत्वपूर्ण कार्य पूरे करना है । यदि आप इन्हें सही तरीक़े से व्यवस्थित नहीं करते हैं तो आप संपूर्ण जीवन को अव्यवस्थित कर डालेंगे । कहानियां एवं टिप्पणियां उनके व्यस्त क़लम से एकत्र होने लगी । उनका पहला उपन्यास प्रकाशित हुआ । अब उनकी लेखनी लोगों को आकर्षित करने लगी । उनके संघर्ष वाले दिन अब काफ़ी पीछे छूट गये । उनकी लेखनी लोगों को अपनी तरफ़ खींचने लगी । अरनोल्ड बेनेट ने 24 घंटे के समय को अपने कई रुचियों एवं शौक़ में इस प्रकार से बांटे कि इसी पेंटिंग, थियेटर,

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति
www.kanti.in

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर
मासिक कान्ति
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

पढ़ने या मित्र बनाने के लिए भी समय मिलने लगा । अनेकों लोग प्रतिदिन उनसे पूछते रहते–आपको समय कैसे मिलता है ? वे समय की कमी की शिकायत सुन-सुनकर थक चुके थे । उन्हें भी वहीं 24 घंटे समय मिलता है जो सभी को मिलता है । संभवत: समय के सही ढंग का उपयोग ही यह फ़र्क महसूस कराता हो ।

व्यक्ति यदि यह अनुभव कर ले कि दिन के प्रत्येक घंटे कितने महत्वपूर्ण होते हैं, प्रत्येक पल कितने आवश्यक होते हैं तब वे यूं ही बर्बाद न करते । तब संभवत: लोग समय का बजट ठीक उसी प्रकार से बनाते जैसे पैसे का बजट बनाने में रुचि लेते हैं । अरनोल्ड बेनेट ने समय के बारे में लेख लिखने का निर्णय लिया ।

आख़िरकार समय का सही उपयोग कैसे किया जाए ताकि पूरे दिन की वापसी ख़ुशी एवं प्रसन्नता के रूप में हो । वे इस विचार से इतने उत्तेजित थे कि उन्होंने इस पर शीघ्र ही कार्य करना प्रारंभ किया । वे क्रमश: लोगों को अवगत कराने लगे कि जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य समय है । वे इस विषय पर जितना सोचते उतना ही आकर्षक लगता । वे इस विषय के शीर्षक को कुछ अलग अंदाज़ दिया–'एक दिन 24 घंटे को कैसे जिया जाए' ।

विषय के कुछ प्रसिद्ध बिन्दु निम्नलिखित है–समय ही प्रत्येक कार्य या उद्देश्य का कच्चा माल है, जिसके महत्व की व्याख्या नहीं की जा सकती है । जब आप प्रात: काल उठते हैं तो आपके पास इस सृष्टि के वे 24 घेटे के समय होते हैं, जो बिल्कुल नये होते हैं । यह समय ही आपके लिए सर्वाधिक उपयोगी संपत्ति है । इसे न तो कोई चुरा सकता है और न कोई ले सकता है । साथ ही साथ न तो कोई आपसे ज़्यादा पा सकता है । जिन्हें आप बुद्धिमान मानते हैं वे भी आप जितना ही समय पाते हैं । न तो आप समय उधार ले सकते हैं और न भविष्य के ख़ज़ाने से निकाल सकते हैं । आप आने वाले कल को भी बर्बाद नहीं कर सकते हैं, यह आपके लिए सुरक्षित है । आपके प्रतिदिन के 24 घंटे के समय में आपको स्वास्थ्य आनन्द, धन, संतोष, सम्मान और स्वयं की आत्मा का मंथन भी करना है । सबसे महत्वपूर्ण बात इस बात में है कि सर्वाधिक प्रभावी उपयोग ही ध्यान देने योग्य है ।

इस लेख ने उन्हें सफलता की बुलन्दियों तक पहुंचाया और असंख्य लोग इससे लाभांवित हुए । इस प्रकार अरनोल्ड बेनेट ने अपने जीवन को समय के महत्व से एक सफल जीवन बनाया ।

इस दिन–"24 घंटे को किस प्रकार जिया जाए" अपने आप में स्वयं सुधार हेतु एक छोटा महाकाव्य है । यह पुस्तक अरनोल्ड बेनेट की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है । (हिन्दी अनुवाद)

दोहे

सांसें चलना ही नहीं, जीवन की पहचान ।
प्यार जहां फूले-फले, जीवन उसको जान ।।

रिश्तों में दिखता नहीं, अपनेपन का भाव ।
बदल गया है आजकल, लोगों का बर्ताव ।।

भ्रातृत्व जग की रीत है, बढ़ती इससे प्रीत ।
यह ऐसा हथियार है, दुनिया को ले जीत ।।

'वोट-बैंक' के खेल में लगी सियासत आज ।
देश जले जलता रहे, रहे सलामत ताज ।।
आज व्यवस्था दिखा रही, कैसे-कैसे ख़ाब,
अन्तर से उठने लगा, पीड़ा का सैलाब ।।

चेहरे पर चेहरे जड़े, इस युग का इन्सान ।
मन में भरे विकार हैं, अधरों पर मुस्कान ।।

बृज भूषण चतुर्वेदी 'ब्रजेश'
राजपुरा वार्ड, बारां (राज०)

लेखकों एवं रचनाकारों से

"कान्ति" में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

-संपादक

सावधान भ्रामक विज्ञापनों से !

■ सी॰ के॰ रहमानी

आजकल मीडिया में भ्रामक विज्ञापनों की होड़ लगी है । तरह-तरह के भ्रामक विज्ञापन लोगों के मन-मस्तिष्क में जबरन परोसे जा रहे हैं । एक विज्ञापन देखें–'मैं अपनी उम्र से दोगुनी लगती थी । मुझे लोग आंटी कहने लगे । तब मैंने किसी की सलाह पर कैप्सूल/दवा/उपकरण लिया या बॉडी को स्लिम करने वाला अमुक क्लीनिक ज्वाइन किया । अब मैं अपनी उम्र से बहुत कम लगती हूं । मुझ में ग़ज़ब का आत्मविश्वास आ गया है । अब मुझे कोई आंटी नहीं कहता ।'

एक युवक के सिर पर बाल कम हैं । वह बस में सफ़र कर रहा है । इसी बीच एक युवती आती है और उसे अंकल कहकर संबोधित करती है । वह शर्म और आत्मग्लानि से मरा जा रहा है । अगले सीन में वह एक तेल इस्तेमाल करता है और सिर के बाल आ जाते हैं । अब वह युवती उससे अंकल नहीं कहती बल्कि मुस्कराने लगती है । अब उस युवक में ग़ज़ब का आत्मविश्वास है ।

इसके बाद उस उत्पाद का नाम और फोटो आ जाता है उपरोक्त सभी विज्ञापनों में सामाजिक उपेक्षा और खुद को दूसरों के सामने कमतर दिखने का भय मौजूद है । यह मानवीय स्वभाव है कि वह दूसरों से किसी भी चीज़ में कम नहीं दिखना चाहता । किसी युवती की शादी नहीं हो रही हो, किसी की नौकरी नहीं लग पा रही हो और किसी को आंटी कहने का भय सता रहा हो, हर समस्या को उड़नछू करने के फ़ौरी नुस्ख़े इन विज्ञापन कंपनियों के स्लोगन में मौजूद हैं । भला आप वह साबुन क्यों नहीं ख़रीदेंगे जिससे आपका बच्चा कीटाणुओं से हंड्रेड परसेंट सुरक्षित हो सकता हो । आप उस उत्पाद को क्यों नहीं खरीदेंगे जो आपके बच्चे को जीत की तैयारी करा दे ।

महानगरों से लेकर शहर, क़स्बों और गांवों के लोग सांवलापन और सेक्स संबंधी समस्याएं दूर करने के लिए दौड़े जा रहे हैं । हर कोई सबको पीछे पछाड़ कर आगे आने के लिए वह उत्पाद ख़रीद रहे हैं जो टी॰वी॰ या अख़बार बताते हैं । इनमें युवतियां/महिलाएं और युवक सब शामिल हैं ।

सिर पर बाल उगाने के लिए एक कंपनी 75 हज़ार रुपये में तीन हज़ार बाल सिर पर टांक देने का दावा कर रही है । यानी एक बाल की क़ीमत 250 रुपये । जवान और घने बाल दिखने के लिए लोग इतनी बड़ी रक़म लेकर दुकान पर पहुंच भी रहे होंगे ।

युवकों को गोरा बनाने के लिए किंग ख़ान यानी शाहरुख़ ख़ान एक क्रीम बेच रहे हैं । क़ीमत इतनी कम रखी है कि मज़दूर भी आसानी से ख़रीद ले, अगर ज़्यादा भी होती तो भी बिकती क्योंकि मामला सामाजिक उपेक्षा का है ।

पहले विज्ञापन का मतलब होता था किसी भी उत्पाद की सही जानकारी देना । उसमें झूठ का समावेश दाल में नमक जैसा होता था । लेकिन आज दाल ग़ायब है, सिर्फ़ नमक ही नमक है यानी विज्ञापनों में थोड़ी हक़ीक़त पूरा फसाना है । इस कारण किसी भी उत्पाद की गुणवत्ता और विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा होना स्वाभाविक है । आज कंप्यूटर और एनीमेशन के माध्यम से किसी भी उत्पाद को बेशक़ीमती चीज़ बना दिया जाता है । आधुनिक युग में मिट्टी को सोना बताने की कला विज्ञापन में मौजूद है । इसलिए असरदार विज्ञापन वह माना जाता है जो आपको बिना ज़रूरत उत्पाद ख़रीदने पर विवश कर दे और उसका स्लोगन लोगों की ज़बान पर आसानी से चढ़ जाए । दिल यह कहने लगे कि 'चलो इसे ख़रीद ही लेते हैं बाद में काम ही आ जाएगा ।'

विज्ञापन हमें ऐसे कल्पना लोक में ले जाते हैं जिससे वास्तविक होने का एहसास होने लगता है । यही कारण है कि हमें क्या खाना है क्या पहनना है क्या ओढ़ना है क्या बिछाना है, कौन-सा टूथपेस्ट इस्तेमाल करना है और बल्ब लगाना कौन-सा टी॰वी॰ या मोबाइल ख़रीदना है यह सब टी॰वी॰ के विज्ञापन तय करते हैं । यानी हमारी ज़िन्दगी की

रहन-सहन बाज़ार तय करता है । यह कैसी विडंबना है कि विज्ञापन अतियोक्ति से परिपूर्ण होते हुए भी आदमी को आसानी से अपनी गिरफ़्त में ले लेते हैं, जब कोई साबुन/तेल/खाद्य पदार्थ या कोई वस्तु ख़रीदता है तो वह उससे नहाने, लगाने, खाने या इस्तेमाल भर के लिए नहीं ख़रीद रहा होता बल्कि उस उत्पाद में वह खुद को हीरो-हीरोइन की जगह रखकर देख रहा होता है ।

लोगों को याद होगा एक कोल्ड ड्रिंक के विज्ञापन में अक्षय कुमार गगनचुंबी इमारतों पर उछलकूछ करते हैं और जान जोखिम में डालकर पेप्सी को हासिल कर लेते हैं । इसी कोल्ड ड्रिंक के दूसरे विज्ञापन में युवती और वह एक रस्सी पर आसमान में झूलते नज़र आते हैं । इस विज्ञापन में यह बताने की कोशिश की गयी है कि जान जोखिम में डालकर पेप्सी को पा लेना भी सस्ता है । यह ऐसा पेय है कि इसके बिना ज़िन्दगी अधूरी है । यह विज्ञापन निम्न वर्ग की कुंठाओं को उद्वेलित करता है ।

ऋतिक रोशन को एक बिस्कुट का विज्ञापन करते हुए देखा होगा । इस बिस्कुट को इतना ज़रूरी दिखाया गया है कि एक युवती उसे पाने के लिए टूट पड़ती है । उस बिस्कुट को पाने के लिए उनके आगे समर्पण कर देती है । इसका मनोविज्ञान यह है कि जिस युवक के पास यह बिस्कुट होगा युवती उसके पास चली आएगी । इसी तरह एक पिज्जा का ऐड ऐसे पेश किया जाता है मानो यह नहीं मिला तो जीवन अधूरा और निरर्थक है । इसी तरह कोक पाकर एक सिख परिवार धन्य हो जाता है । पूरी परिवार के चेहरे पर खुशी है क्योंकि वह कोक पी रहा है । डव साबुन के विज्ञापन में तो एक युवती बाक़ादा इंची टेप लेकर आती है और यह बताती है कि इससे नहाने से बाल बहुत लंबे और घने हो जाते हैं । वह बाल नाप के दिखा देती है । अब बताइए जब इतनी सब चीज़ें एक क्रीम, तेल, साबुन या किसी अन्य उत्पाद से मिल जाएं तो उसे कौन नहीं ख़रीदना चाहेगा ।

एक विज्ञापन पढ़कर मेरी बड़ी बहू मोटापा के लिए एक क्लीनिक जा पहुंची । उसने सबसे कम क़ीमत दस हज़ार वाला पैकेज लिया जिसमें दस किलो वज़न कम करने का दावा किया गया था । वह एक महीना दौड़ती रही । तीन हज़ार रुपये किराये में लगे वह अलग और नतीजा सिफ़र । अब वह फिर एक हकीम के पास जा रही है । वह हकीम बहुत चालाकी से एक बार में तीन हज़ार की दवा पकड़ा देता है । बहू को लगता है कि चलो तीन हज़ार में वज़न कम हो जाएगा । उसकी देखा-देखी छोटी बहुएं भी लाइन में लग गयीं । छोटी बहू तो अब थक-हार कर घर बैठ गयी ।

सवाल यह है कि जब फ़ायदा नहीं होता तो ये दुकानें चल क्यों रही हैं ? जवाब कोई मुश्किल नहीं है । जब कोई युवक युवती ठग जाते हैं तो वह यह किसी को नहीं बताते, सोचते हैं इससे जग हंसाई होगी । लोग कहेंगे मूरख, जानता नहीं था कि यह सब धोखा है । कहीं क्रीम से कोई गोरा बन जाता है या किसी तेल/क्रीम या कैप्सूल से लंबाई बढ़ जाती है या शरीर का कोई हिस्सा लंबा चौड़ा हो जाएगा ?

इस संबंध में वरिष्ठ मनोचिकित्सक दिल्ली सायकिएट्रिस्ट के पूर्व अध्यक्ष व ई॰एस॰आई॰ अस्पताल के मनोचिकित्सा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ॰ टी॰पी॰ जिंदल कहते हैं 'अगर कोई क्रीम गोरा कर सकती तो साउथ अफ़्रीक़ा या दक्षिण भारत में एक भी आदमी काला या सांवला का नहीं मिलता । अगर कोई दवा क़द बढ़ा सकती तो चीन में कोई भी आदमी छोटे क़द का नहीं होता । वह दवा क्या पूरी कंपनी ही ख़रीद लेते । वह कहते हैं कि कुछ क्रीम कुछ घंटे तक अपनी चमक दिखाती है लेकिन वह गोरा नहीं कर सकती । कुछ घंटे बाद क्रीम का असर ख़त्म हो जाता है और आपकी त्वचा पूर्व की स्थिति में आ जाती है । वह भी विज्ञापनों के झूठ के आगे घुटने टेकने लगते हैं ।

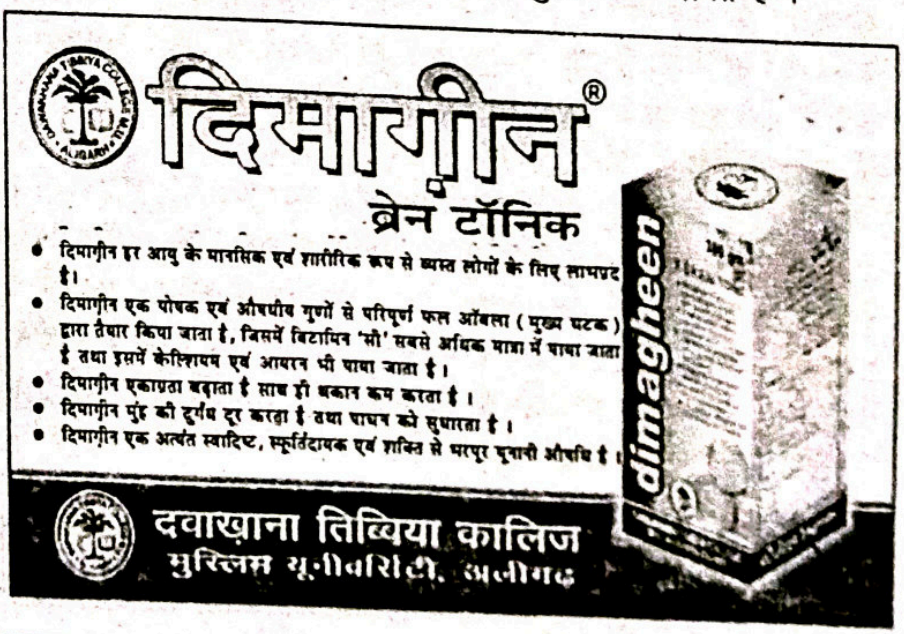

घातक है महिलाओं में बढ़ती धूम्रपान की लत

■ डॉ॰ विभा सिंह

महिलाओं में धूम्रपान की बढ़ती प्रवृत्ति को विदेशी संस्कृति का कुत्सित प्रभाव कहिए या पुरुषों से होड़ लेने की तथाकथित आधुनिकता, परन्तु यह एक कटु सत्य है कि नारी आधुनिकता की चकाचौंध में एक ऐसे शौक़ के पीछे दीवानी हुई जा रही है, जो न केवल स्वयं उसके लिए बल्कि उसके इर्द-गिर्द के लोगों के लिए भी बेहद नुक़सानदेह है। महिलाओं में यह प्रवृत्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। ख़ासकर उच्चवर्गीय महिला समुदाय में सिगरेट का यह शौक़ महिलाओं की मां बनने की संभावनाओं पर ढेरों प्रश्न छोड़ रहा है और एक स्वस्थ पीढ़ी के आगमन पर लग रहे हैं अनगिनत प्रश्न चिह्न।

यूं तो तंबाकू का सेवन काफ़ी प्राचीन काल से किया जाता है। हां, तब से अब तक इसका स्वरूप अवश्य बदला है। सदियों पहले यह औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, परन्तु आज इसका सेवन नशे के लिए किया जाता है। अगर यह जानने की कोशिश की जाए कि इसका जन्म कहां से हुआ तो यह काफ़ी मुश्किल होगा। बरसों की खोजबीन के बाद पता चला है कि मूलरूप से तंबाकू का जन्मस्थल अमेरिका है, जहां हज़ारों वर्ष पूर्व यह औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। तंबाकू भी उन बहुत से पौधों में से एक है जिन्हें सदियों पहले उत्तरी अमेरिका से यूरोप में लाया गया था। नशे के लिए इसका प्रयोग सर्वप्रथम यूरोप में किया गया, न केवल पुरुष बल्कि महिलाएं भी बेधड़क पाइप का इस्तेमाल करती थीं। उस समय भी समाज ने महिलाओं द्वारा इसका सेवन करने पर घोर विरोध किया गया। केवल महिलाओं के लिए ही नहीं पुरुषों के लिए भी इसे घातक बताया गया।

1800 तथा 1900 के मध्य तंबाकू का चलन काफ़ी बढ़ चुका था। उस समय न केवल पुरुष और महिलाएं बल्कि बच्चे भी इसके शिकंजे में आ चुके थे। लगभग 1920 में पुरुषों से बराबरी की होड़ में लगकर महिलाओं ने इसका इस्तेमाल खुलेआम शुरू कर दिया। 1935 तक आते-आते यह एक फैशन बन चुका था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय तो महिलाओं ने यह कहकर इसे अपना लिया कि जब जब वह पुरुषों कर हर राह पर साथ दे रही हैं तो फिर धूम्रपान में क्या बुराई है।

आंकड़ों से पता चलता है कि आज विश्व की लगभग 20 से 35 प्रतिशत महिलाएं तंबाकू का सेवन करती हैं और महिलाओं की आकस्मिक मृत्यु का एक बड़ा कारण तंबाकू ही है। यदि इस ओर कोई ध्यान न दिया गया तो आने वाले वर्षों में यह मृत्यु दर बढ़कर दोगुनी-तिगुनी हो जाएगी। अनुमान लगाया गया है कि सन 2020 तब पहुंचे-पहुंचते यह मृत्युदर लाखों के आंकड़ों को भी पार कर जाएगी। डॉक्टरों द्वारा किये गये सर्वेक्षणों के आधार पर कहा जाता है कि धम्रपान करने वाली महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा स्वास्थ्य संबंधी अधिक जोखिम उठाने पड़ते हैं।

धूम्रपान से गले और फेफड़ों का कैंसर तो इसका ख़तरनाक परिणाम है ही, इसके साथ-साथ रक्तचाप बढ़ने, सांस की शिकायत तथा दिमाग़ में शिथिलता आना भी धूम्रपान से होने वाली जानलेवा बीमारियां हैं। महिलाओं में तो इसके परिणाम और भी घातक सिद्ध होते हैं। इससे न केवल प्रजनन संबंधी गड़बड़ी उत्पन्न होती है बल्कि औरत का पूरा स्वास्थ्य ख़तरे में पड़ सकता है। सिगरेट में मौजूद निकोटिन नामक विष गर्भाशय के रक्त प्रवाह की गति को मंद कर देता है, नतीजतन बच्चे को मिलने वाली ऑक्सीजन और लौह तत्व की मात्रा कम हो जाती है। सिगरेट से बनने वाली कार्बन मोनो ऑक्साइड के कारण भी ऑक्सीजन का अभाव हो जाता है। सिगरेट पीने से शरीर में उपस्थित विटामिन 'सी' काफ़ी मात्रा में नष्ट हो जाती है जो कि गर्भवती महिला के लिए बहुत आवश्यक होता है। धूम्रपान की शिकार औरतों के बच्चे कमज़ोर, चिड़चिड़े तथा तमाम

बीमारियों से ग्रस्त होते हैं । ऐसी औरतों के बच्चे विकलांग भी हो सकते हैं, न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि वे मानसिक रूप से भी अस्वस्थ हो सकते हैं ।

हालांकि भारत में महिलाओं में धूम्रपान की लत को सामाजिक बुराई माना जाता है, किन्तु फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों तथा पिछड़ी जाति की महिलाओं में धूम्रपान की आदत बहुत पुरानी है । आजकल यह प्रवृत्ति फैशन के रूप में फैल चुकी है । आज उच्चवर्गीय तथा मध्यमवर्गीय परिवारों में महिलाओं ने इस आदत को खुलेआम अपना लिया है । होठों से धुएं के छल्ले उगलते तथा हाथ में बीयर का गिलास पकड़े, आपस में बतियाते इन महिलाओं को उच्चवर्गीय उत्सवों में खुलेआम देखा जा सकता है । यह आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होकर पुरुषों से बराबरी की होड़ नहीं तो और क्या है ? इसका अवश्य त्याग होना चाहिए ।

एक सर्वेक्षण के अनुसार महानगरों में कॉलेजों में 10 से 15 प्रतिशत छात्राएं धूम्रपान करती हैं । घर की चौखट तक सीमित रहने वाली महिलाएं बहुत कम धूम्रपान करती हैं । कामकाजी महिलाओं में यह लत अधिक फैल चुकी है । विदेशों में तो इसका सेवन सिगरेट या पाइप के रूप में किया जाता है, परन्तु भारत में यह कई रूपों में प्रचलित है । सिगरेट और पाइप के अतिरिक्त बीड़ी, चिलम आदि के रूप में इसका सेवन काफ़ी अधिक मात्रा में किया जाता है । इसके अतिरिक्त खैनी, ज़र्दा तथा पान मसाला के रूप में भी इसका सेवन बड़ी मात्रा में किया जाता है । नशे के लिए वैसे तो हमारे समाज में और भी बहुत-सी चीज़ें प्रचलित हैं जैसे शराब, चरस, गांजा, स्मैक, हेरोइन आदि, लेकिन तंबाकू का प्रचलन सबसे अधिक है ।

हमारे देश में तो इसे बहुत से रूपों में इस्तेमाल किया जाता है । आंध्र प्रदेश में इसे चुट्टा कहा जाता है तो केरल में इसे यूं ही चबाया जाता है । बिहार में बीड़ी और हुक्के में इसे गुड़गुड़ाया जाता है तो गोवा में खैनी और घुमती के नाम से मशहूर है और पान चबाना तो पुराने समय से ही भारत में प्रचलित हैं ।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि चीन में धूम्रपान एक राष्ट्रीय आदत बन चुकी है जिसके सबसे ज़्यादा शिकार बच्चे हैं । यहां तक कि चार-पांच साल के बच्चे भी सिगरेट पीना सीख रहे हैं । हालांकि सिगरेट के पैकेटों पर तथा विज्ञापनों पर वैधानिक चेतावनी के रूप में लिखा रहता है कि तंबाकू का सेवन सेहत के लिए हानिकारक है, परन्तु फिर भी इस ओर कोई ध्यान नहीं देता । इसके प्रचार के लिए बनाये गये आकर्षक विज्ञापनों की ओर लोग अधिक खिंचते चले जाते हैं ।

बालवीथी

जीव-जंतुओं का संसार

अफ़्रीक़ा, आग और बर्फ़ को ऐतिहासिक ज़मीन रही है, जहां विश्व के कुछ आइकॉनिक जीव रहते हैं और कई रहस्यमयी भौगोलिक जगहें हैं । यह सबसे मनोहर और विविधि द्वीपों में से एक है, जहां विश्व के कई ऐतिहासिक प्रारकृतिक आश्चर्यों का खुलासा होता है । कांगों और उसके छिपे हुए वैश्विक बंदरगाहों में पौधों और जीवों का विविध संग्रह होता है, जिनमें जंगली भैंसें, बांगों, जंगली हाथी, गोरिल्ला और विपांजी पाये जाते हैं ।

आमतौर पर बंजर दिखने वाला लेक तुरकाना में बड़ी मात्रा में जीवन का समर्थन करता है–विश्व की तटीय समुद्री प्रजातियों में से 15 फ़ीसदी केप में पायी जाती है । अफ़्रीक़ा के पूर्व में मैडागास्कर स्थित है, जो अतियों का द्वीप है, जहां जीवन अनुकूल और इतना विविध हो गया है कि अब यह इलाक़ा विश्व के सबसे अजीबोग़रीब जीवों का घर बन गया है । अगर आप अफ़्रीक़ा की यात्रा पर निकले हैं तो आपकी यात्रा लाखों मील क्षेत्र में फैले विश्व के सबसे बड़े मरुस्थल सहारा में रुके बिना पूरी नहीं हो सकती है । इस मरुस्थल में बहुत थोड़ी बारिश होती है और यहां का तापमान काफ़ी ख़तरनाक तरीक़े से चढ़ता-घटता है ।

नील नदी, विश्व की सबसे बड़ी नदी है, जो अफ़्रीक़ा के मध्य से मेडिटेरेनियन समुद्र तक जाती है । आख़िरकार कभी नहीं सूखने वाली इस नदी में ऐसा क्या है, जो इसके पानी को इतना उपजाऊ बनाता है ? 6700 किलोमीटर वर्ग में फैली नील नदी 30 लाख वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र की सिंचाई करती है । नदी के पानी के कुछ हिस्से को समुद्र तक पहुंचने में 6 महीने तक का समय लगता है ।

हालांकि यह पृथ्वी के सबसे भीषण मरुस्थल से होकर गुज़रती है और आख़िरी के 2400 किलोमीटर का सफ़र बिना किसी सहायक नदी के पूरा करती है । इसके बावजूद यह कभी नहीं सूखती ।

नीली नील नदी के उत्पत्ति इथियोपिया के लेक ताना से होती है और मिस्र के दक्षिण में स्थित सूडान के खर्तूम में सफ़ेद नील से मिलती है । मिलकर यह दोनों विश्व की सबसे लंबी नील नदी बनाती हैं जो पूरे अफ़्रीक़ा को साथ में जोड़ती है । यह यूगांडा से निकलकर इथियोपिया तक जाती है और कुल 9 देशों से होकर गुज़रती है । अक्सर नील नदी को मिस्र के साथ जोड़ा जाता है लेकिन यह वास्तव में इथियोपिया, जायर, केन्या, युगांडा, तंजानिया, रवांडा, बुरुंडी और सूडान के साथ मिस्र को भी छूती है ।

यहां रहने वाले दो सबसे बड़े शाकाहारी जीव दरियाई घोड़ा और काला गेंडा होता है । ग़ौरतलब है कि ये दोनों ही जीव अब विलुप्त होने के क़गार पर हैं । प्राचीन मिस्रवासी दरियाई घोड़े यवा 'रिवर हॉर्स' को पूजनीय समझते हैं । मूल रूप से मिस्र में पाया जाने वाला यह जीव बेहद सुस्त और लगता है लेकिन यह वास्तव में बेहद ख़तरनाक और विध्वंसक होता है, जिससे कई लोग डरते हैं ।

नील नदी में और उसके आसपास कई मीठे पानी वाले जीव रहते हैं । उनमें से ज़्यादातर सरीसृप होते हैं । आमतौर पर नील नदी में सबसे ज़्यादा पाया जाने वाला सरीसृप नील मगर मच्छ है । यह विश्व के सबसे बड़े मगरमच्छों में से एक है । नील नदी में सांपों की 30 से भी अधिक प्रजातियां पायी जाती हैं और उनमें से क़रीब आधे से ज़्यादा ज़हरीले होते हैं । नील पर्च, नील नदी की प्रमुख मछली प्रजाति है और यह बेहद महंगी खाद्य मछली है । ब्लू हेरोंस और सफ़ेद आइबिस पक्षी कम गहरे पानी में छोटी मछलियों, ईल और सांपों का शिकार करते हैं । नील मॉनीटर, छिपकली की बड़ी प्रजाति है और यह नील नदी के बेसिन में कई हिस्सों में पायी जाती है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।





22356616

ISMAIL

LUNGI STORES

Wholesaler & Retailer
In Madras Handloom Lungies

74, Rabindara Sarani, Kolkata -700073



M. M. Hashim

HAMEED 80 x 80

HAMEED & CO.

HOUSE FOR HANDLOOM LUNGIES & HANDKERCHIEFS

84, Rabindra Sarani, Kolkata-700 073, Phone : 2235 3850

Posted on 20-21 April 2016
May 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.04.2016
Total Pages-52 (With Covers)

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

